दिव्य रश्मि !! वर्ष - 04 !! अंक - 05 !! अक्टूबर - 2018 !!अश्विन -कार्तिक 2075 !!
हिन्दी मासिक पत्रिका
मूल्य 25/--
ISSN - 2456-4745 POSTAL REG. 10/NP-70/16-18 RNI NO BIHHIN/2015/65226

संस्थापक सह परामर्शदाता
श्री सुरेश दत्त मिश्र :-9934834715
सम्पादक
डॉ राकेश दत्त मिश्र – 8986043076
प्रबंध सम्पादक
राजीव कुमार झा -9334494469
सम्पादक मंडल
अरविन्द पाण्डेय-9431181454
अखिलेश पाण्डेय :- 8252818243
रीता सिंह -7004100454
हमारे ब्यूरो :-
कोलकाता:
सप्तऋषिवाशु - 9748452809
मनीषा सिंह - ७०२०२८९४६८
राजस्थान
राकेश कुमार वर्मा - 8010708508
मुंबई :-
अनिल कुमार सिंह-9324855811
लखनऊ :-
अजय वर्मा - 9450383433
जमशेदपुर :-
श्रीनिवास सिंह 9835779654
पटना :-
कुंदन पाण्डेय - ९४७२२२८७७९
डॉ राजीव रंजन सिंह -9472582669
दिलीप कुमार - 8084705482
सुबोध कुमार सिंह झा 9431049585
राँची
बिपिन पाण्डेय – ९४३१५०८७०९
गया :-
अजीत कुमार सिन्हा-9430081902
वैशाली :-
विजय मिश्र – 9931843058
रोहतास
शैलेश कुमार पाण्डेय - 9472980980
छपरा
अरविन्द कुमार शर्मा – 9473218510
हमारे संवाददाता
राजीव कुमार - ९९३१२००८०२
जय प्रकाश नारायण - 9431624588
परमानन्द प्रसाद - 9334227363
लक्ष्मण सिंह – 8873218696
अनिल पाठक – 9431221121
दीपक कुमार - ९८३५२६७३३३
बिधुभुषण वर्मा - ९५२३०६६७५९
अखिलेश कुमार - ९२३४६०९२३९
विकाश कुमार सिंह - ९३३४१६२००८
मुकेश कुमार - ९०३१३०३०६४
निधि कुमारी - ९६८१२६१४४९
बिट्टू कुमार – ८७०९६१३९०१
मुकेश कुमार – ९०३१३०३०६४
छतरु साहू – ९८३५११३७२४
विधि परामर्शदाता
संजीव कुमार - 8986144438
लक्ष्मण पाण्डेय - 9835667132

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	डॉ राकेश दत्त मिश्र	4
दुगार्पूजा	पंडित कृष्ण दत्त शर्मा	5- 07
हिन्दुओ के चार ...	सुमन कुमार मिश्र	08-10
जय विजय की	पंडित कृष्ण दत्त शर्मा	11 – 14
भगवान विष्णु ...	पंडित कृष्ण दत्त शर्मा	15 – 16
पूज्यनीय पर्वत	राजीव कुमार झा	17-18
झूठा है इतिहास	दिव्य डेस्क	19-22
दलित का शोषण	अजित कुमार सिन्हा	23-24
स्वतंत्ता संग्राम ...	दिव्य डेस्क	25
अर्थव्यवस्था की ...	दिव्य डेस्क	26
१८५७ से ...	सप्तऋषि वशु	27-30
कविता	विधुशेखर मिश्र	30
खबरें	दिव्य डेस्क	31-34

निवेदन

पवनसुत सर्वांगीण विकास केंद्र , पटना के द्वारा संचालित दिव्य रश्मि पत्रिका को सबल बनाने में अपनी सहभागिता निभाएँ | आप के द्वारा दिया गया सहयोग इनकम टैक्स की धरा ८० जी के तहत कर मुक्त रहेगी | आप अपनी सहयोग राशि वार्षिक / आजीवन सदस्यता हेतु आंध्रा बैंक , श्रीकृष्ण नगर, की बचत खाता पवनसुत सर्वांगीण विकास केंद्र के नाम से खाता संख्या 137110100012127 , IFSC code- ANDB0001371 में RTGS/NEFT द्वारा जमा करने की कृपा करें |

नोटः- सभी पद अवैतनिक है सभी प्रकार के कानूनी विवाद पटना न्यायिक क्षेत्राधिकार के अंतर्गत निपटाए जायेंगे रचनाओं के चयन में पूर्णतः सजगता बरती गई है फिर भी इसमें कोई त्रुटि रहती है, तो इसके लिए सम्पादक / प्रकाशक जिम्मेदार नहीं है दिव्य रश्मि में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखको के हैं सम्पादक का उनसे सहमत होना जरुरी नहीं है इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित है इस अंक में प्रकाशित कुछ छायाचित्र और लेख इंटरनेट / पत्र-पत्रिकाओ से साभार लिए गए है हम प्रबुद्ध रचनाकारों की अप्रकाशित मौलिक एवं शोध परक रचनाओं का स्वागत करते है रचनाकारों से निवेदन है कि सन्दर्भ-संकेत अवस्य दें

मुद्रक एवं प्रकाशक :-
डॉ राकेश दत्त मिश्र ने पवनसुत सर्वांगीण विकास केंद्र के स्वामित्व में अभिषेक प्रिंटिंग प्रेस , नया टोला , पटना -4 में छपाई एवं पवनसुत सवंर्गीण विकास केंद्र, 262/574, चाँद पुर बेला , जी पी ओ पटना - 800001 से प्रकाशित किया | सम्पादकः- डॉ राकेश दत्त मिश्र
email:- divyarashmimag@gmail.com

सदस्यता शुल्क
वार्षिक सहयोग राशि :- 251/रु
आजीवन सदस्यता शुल्क :-7501/- रु
वर्तमान अंक :- 25/- रु
संरक्षक सदस्य :- 25501/- रु
सदस्यता हेतु सम्पर्क करे :-8986043076

सम्पादकीय

आदरणीय पाठकगण,

आप के समक्ष दिव्य रश्मि का ४१ वां अंक लेकर उपस्थित हो रहा हूँ इस माह हिन्दुओ का सबसे पावन और पवित्र त्यौहार दुर्गा पूजा आनेवाला है हम इस पावन पर्व के अवसर पर अपने सभी पाठको को हार्दिक बधाई एवं शुभकामना देते है|

दुर्गा पूजा का पर्व भारतीय सांस्कृतिक पर्वों में सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। लगभग दशहरा, दीवाली और होली की तरह इसमें उत्सव धार्मिकता का पुट आज सबसे ज्यादा है। बंगाल के बारे में कहा जाता है कि बंगाल जो आज सोचता है, कल पूरा देश उसे स्वीकार करता है। बंगाल के नवजागरण को इसी परिप्रेक्ष्य में इतिहासकार देखते हैं। यानि उन्नीसवीं शताब्दी की भारतीय आधुनिकता के बारे में भी यही बात कही जाती है कि बंगाल से ही आधुनिकता की पहली लहर का उन्मेष हुआ। स्वतंत्रता का मूल्य बंगाल से ही विकसित हुआ। सामाजिक सुधार, स्वराज्य आंदोलन, भारतीय समाज और साहित्य में आधुनिकता और प्रगतिशील मूल्य बंगाल से ही विकसित हुए और कालांतर में पूरे देश में इसका प्रचार-प्रसार हुआ।

संयोग से दुर्गा पूजा पर्व की ऐतिहासिकता बंगाल से ही जुड़ी है। आज पूरा देश इसे धूमधाम से मनाता है।दुर्गा पूजा की परंपरा का सूत्रपात यदि बंगाल से हुआ है तो इसका बंगाल के नवजागरण से क्या रिश्ता है? क्योंकि नवजागरण तो आधुनिक आंदोलन की चेतना है, जबकि दुर्गा पूजा ठीक उलट परंपरा का हिस्सा है। पर गौर करने की बात है कि बंगाल दुर्गा पूजा को परंपरा की चीज मानकर उसे पिछड़ा या आधुनिकता का निषेध नहीं मानता है। बल्कि दुर्गा पूजा की लोकप्रियता को देखकर आज लगता है, यह भी बंगाल के नवजागरण का एक बहुमूल्य हिस्सा है। बंगाल के आधुनिक जीवन में दुर्गा पूजा की परंपरा का चलन दरअसल आधुनिकता में परंपरा का एक बेहतर प्रयोग है। सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए को परंपरा में प्रयोग की आधुनिकता है।

बंगाल में आज जो दुर्गा पूजा है वह अपने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में 'शक्ति पूजा' नाम से प्रचलित है, जैसे महाराष्ट्र के नवजागरण में लोकमान्य तिलक द्वारा प्रतिष्ठित गणेशोत्सव का पर्व और बीसवीं शताब्दी में प्रसिद्ध समाजवादी चिंतक डॉ. राममनोहर लोहिया द्वारा चित्रकूट में रामायण मेला की स्थापना। देखा जाए तो तिलक और लोहिया भारतीय स्वराज्य और समाज के प्रखर प्रहरी थे। भारतीय आधुनिकता के विकास के ये दोनों प्रखर प्रवक्ता थे, लेकिन सांस्कृतिक स्तर पर ये दोनों कहीं गहरे स्तर पर पारंपारिक भी थे। तिलक द्वारा प्रतिष्ठापित 'गणेशोत्सव' और उत्तर भारत में लोहिया द्वारा 'रामायण मेला' का शुभारंभ परंपरा में आधुनिकता की खोज के दुर्लभ उदाहरण हैं।

दुर्गा पूजा बंगाल में आज भी शक्ति पूजा के रूप में प्रचलित है। अगर उसके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर विचार करें तो आपको कई दिलचस्प परिणाम दिखाई पड़ेंगे। पहला परिणाम तो यह निकलता है कि बंगाल की सांस्कृतिक जड़ें अत्यंत गहरी और अपनी आस्थाओं के प्रति बेहद सचेत भी हैं। बंगाल एक छोर पर बेहद आधुनिक है तो दूसरे छोर पर अत्यंत पारंपारिक अपनी सांस्कृतिक चेतना की विरासत के प्रति सचेत है। बंगाल में शक्ति पूजा का प्रचलन आदिकाल से चला आ रहा है। शक्ति पूजा की प्रतीक देवी अपने चमचमाते खड्गशस्त्र से महिषासुर का संहार कर महिषासुरमर्दिनी कहलाई। त्रिमंग देवी दुर्गा शक्ति की अधिष्ठाती है। उनके साथ पद्महस्ता लक्ष्मी, वाणी पाणि सरस्वती, मूषक वाहन गणेश और मयूर वाहक कार्तिकेय विराजमान हैं। ये जितनी मूर्तियाँ हैं, सब हमारे जीवन में सामाजिक न्याय की प्रतीक हैं। महिषासुर यदि अन्याय, अत्याचार औ पापाचार का प्रतीक है तो दुर्गा शक्ति, न्याय और हर अन्याय के विरुद्ध प्रतिकार की प्रतीक है। उसकी आँखों में सिर्फ.करुणा और दया के आँसू ही नहीं बहते, बल्कि क्रोध के स्फुलिंग भी छिटकते हैं। यह आकस्मिक नहीं है कि सन १९७१ में भारत-पाक युद्ध के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की अचूक राजनीतिक बुद्धिमत्ता को देखकर अटल बिहारी वायपेयी ने उन्हें दूसरी दुर्गा कहा था। यह 'दुर्गा' कोई सांस्कृतिक मिथ नहीं, बल्कि हर औरत के भीतर अन्याय के विरुद्ध प्रतिकार का एक धधकता लावा है। भारतीय स्त्री की छवि में एक ओर देवदासी का असहाय चेहरा कौंधता है तो दूसरी तरफ उसकी आँखों में दुर्गा का शक्तिशाली तेवर भी चमकता है। दुर्गा जैसी महास्त्री जिसे हमारे लोक जीवन और सांस्कृतिक जीवन में 'देवी' कहा जाता है, दरअसल अन्याय के विरुद्ध एक सार्थक हस्तक्षेप का प्रतीक है। दुर्गा के सान्निध्य में आसन ग्रहण करती हुई देवियाँ लक्ष्मी, सरस्वती, धन और विद्या की प्रतीक हैं। गणेश हमेशा से विघ्न का विनाश करनेवाले एक शुभ देवता हैं, जबकि कार्तिकेय जीवन में विनय और सृजन के प्रतीक हैं। इनकी उपस्थिति से ही सामाजिक सृजन संभव है।

आज हमारे राजनीतिक और सामाजिक जीवन में महिषासुरी शक्तियाँ दिन-प्रतिदिन हिंसक और खूँख्वार प्रवृत्तियों का रूप धारण कर चुकी हैं। समाज में दुगाओं का दहन रोज हो रहा है। यह सिर्फ.इसलिए हो रहा है कि हमारे समाज में दुर्गा का आदर नहीं है। उसकी वास्तविक शक्ति का हमें आभास नहीं है। हमारे मिथ में दुर्गा की इस महाशक्ति का आभास राम को था।

उन्होंने रावण से युद्ध करने के पहले दुर्गा की पूजा की थी। आज के रामों में शक्ति पूजा की उस शक्ति और संघर्ष की क्षमता का अभाव है। इसलिए आज का मनुष्य बार-बार जीवन क्षेत्र में पराजित हो रहा है। इस पराजय से बचने का एक ही रास्ता है, वह है राम की तरह असाधारण शक्ति का भंडार अपने अंदर पैदा करना। तब ही भीतर की दुर्गा प्रसन्न हो सकती हैं। जिस दिन आस्था पैदा होगी, उस दिन जय होगी।

'दुर्गा पूजा' पर्व हमारे सामने हर साल एक नई चुनौती के रूप में आता है। प्रश्न उससे प्रेरणा लेने का है। मात्र पूजा की झाँकी देखने का नहीं।

दुर्गा पूजा

दुर्गा पूजा एक प्रसिद्ध हिन्दु त्यौहार है और इस दौरान देवी दुर्गा की पूजा की जाती है। दुर्गा पूजा को दुर्गोत्सव के नाम से भी जाना जाता है। दुर्गोत्सव पाँच दिनों तक मनाया जाता है। इन पाँच दिनों को षष्ठी, महासप्तमी, महाष्टमी, महानवमी और विजयदशमी के रूप में मनाया जाता है। (हिन्दु धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार दुर्गा पूजा के साथ में चण्डी-पाठ को महालय अमावस्या के अगले दिन से शुरू किया जाना चाहिए। महालय पितृ पक्ष का सबसे महत्वपूर्ण दिन होता है। इस दिन हिन्दु लोग अपने पूर्वजों को श्रद्धान्जली अर्पित करते हैं, इसलिए यह दिन कोई भी शुभ कार्य शुरू करने के लिए सही नहीं माना जाता है।)

पश्चिम बंगाल को छोड़कर अधिकांश राज्यों में महालय अमावस्या के अगले दिन प्रतिपदा तिथि को घटस्थापना की जाती है। घटस्थापना दुर्गा पूजा के दौरान होने वाले कल्पारम्भ के समान होती है जिसमें देवी दुर्गा का आवाह्न किया जाता है। सामान्यतः कल्पारम्भ देवी पक्ष के दौरान षष्ठी तिथि के दिन होता है। क्षेत्रीय प्रथा और धारणाओं के अनुसार शारदीय नवरात्रि के दौरान होने वाली दुर्गा पूजा नौ दिन से लेकर एक दिन तक हो सकती हैं जिसका उल्लेख धर्मसिन्धु में भी किया गया है।

देवी पक्ष, पितृ पक्ष की महालय अमावस्या के अगले दिन से शुरू हो जाता है। देवी दुर्गा का धरती पर आगमन देवी पक्ष के पहले दिन होता है और दुर्गा विसर्जन के दिन वह प्रस्थान करती हैं। दुर्गा माँ के आगमन और प्रस्थान वाले दिन महत्वपूर्ण होते हैं और इन दिनों से आने वाले समय का अनुमान किया जाता है। इस अनुमान के आधार पर आने वाले समय को शुभ अथवा अशुभ घोषित किया जाता है।

माँ देवी दुर्गा का आगमन नौका पर प्रस्थान हाथी पर |

नवरात्रि में दुर्गा पूजा-पाठ की यह विधि यहां संक्षिप्त रूप से दी जा रही है। नवरात्रि आदि विशेष अवसरों पर तथा शतचंडी आदि वृहद् अनुष्ठानों में विस्तृत विधि का उपयोग किया जाता है। उसमें यन्त्रस्थ कलश, गणेश, नवग्रह, मातृका, वास्तु, सप्तर्षि, सप्तचिरंजीव, 64 योगिनी, 50 क्षेत्रपाल तथा अन्यान्य देवताओं की वैदिक विधि से पूजा होती है। अखंड दीप की व्यवस्था की जाती है।

देवी प्रतिमा की अंग-न्यास और अग्न्युत्तारण आदि विधि के साथ विधिवत् पूजा की जाती है। नवदुर्गा पूजा, ज्योतिःपूजा, बटुक-गणेशादिसहित कुमारी पूजा, अभिषेक, नान्दीश्राद्ध, रक्षाबंधन, पुण्याहवाचन, मंगलपाठ, गुरुपूजा, तीर्थावाहन, मंत्र-खान आदि, आसनशुद्धि, प्राणायाम, भूतशुद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा, अन्तमार्तृकान्यास, बहिमार्तृकान्यास, सृष्टिन्यास, स्थितिन्यास, शक्तिकलान्यास, शिवकलान्यास, हृदयादिन्यास, षोडशान्यास, विलोम-न्यास, तत्त्वन्यास, अक्षरन्यास, व्यापकन्यास, ध्यान, पीठपूजा, विशेषार्घ्य, क्षेत्रकीलन, मन्त्र पूजा, विविध मुद्रा विधि, आवरण पूजा एवं प्रधान पूजा आदि का शास्त्रीय पद्धति के अनुसार अनुष्ठान होता है।

इस प्रकार विस्तृत विधि से पूजा करने की इच्छा वाले भक्तों को अन्यान्य पूजा-पद्धतियों की सहायता से भगवती की आराधना करके पाठ आरंभ करना चाहिए।

साधक स्नान करके पवित्र हो, आसन-शुद्धि की क्रिया सम्पन्न करके शुद्ध आसन पर बैठे, साथ में शुद्ध जल, पूजन-सामग्री और श्री दुर्गा सप्तशती की पुस्तक रखें। पुस्तक को अपने सामने काष्ठ आदि के शुद्ध आसन पर विराजमान कर दें। ललाट में अपनी रुचि के अनुसार भस्म, चंदन अथवा रोली लगा लें, शिखा बांध लें, फिर पूर्वाभिमुख होकर तत्त्व-शुद्धि के लिए चार बार आचमन करें।

उस समय निम्नांकित चार मंत्रों को क्रमशः पढ़ें झ
ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
तत्पश्चात प्राणायाम करके गणेश आदि देवताओं एवं गुरुजनों को प्रणाम करे, फिर 'पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ' इत्यादि मंत्र से कुश की पवित्री धारण करके हाथ में लाल फूल, अक्षत और जल लेकर संकल्प करें। संकल्प करके देवी का ध्यान करते हुए पंचोपचार की विधि से पुस्तक की पूजा करें, योनि-मुद्रा का प्रदर्शन करके भगवती को प्रणाम करे, फिर मूल नवार्ण मंत्र से पीठ आदि में आधारशक्ति की स्थापना करके उसके ऊपर पुस्तक को विराजमान करें।
इसके बाद शापोद्धार करना चाहिए। इसके अनेक प्रकार हैं। 'ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा' - इस मंत्र का आदि और अन्त में सात बार जप करे। यह शापोद्धारमन्त्र कहलाता है।
इसके अनन्तर उत्कीलन-मंत्र का जप किया जाता है। इसका जप आदि और अन्त में इक्कीस-इक्कीस बार होता है। यह मन्त्र इस प्रकार है - 'ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।' इसके जप के पश्चात आदि और अन्त में सात-सात बार मृत-संजीवनी विद्या का जप करना चाहिए।
इस प्रकार शापोद्धार करने के अनंतर अन्तमार्तृकाबहिमार्तृका आदि न्यास करें, फिर भगवती का ध्यान करके रहस्य में बताये अनुसार नौ कोष्ठों वाले यन्त्र में महालक्ष्मी आदि का पूजन करें, इसके बाद छः अंगो सहित दुर्गा सप्तशती का पाठ आरम्भ किया जाता है।
कवच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्य - ये ही सप्तशती के छः अंग माने गए हैं। उनके क्रम में भी मतभेद है। चिदम्बर संहिता में पहले अर्गला, फिर कीलक तथा अन्त में कवच पढ़ने का विधान है। किंतु योगरत्नावली में पाठ का क्रम इससे भिन्न है। उसमें कवच को बीज, अर्गला को शक्ति तथा कीलक को कीलक-संज्ञा दी गई है। जिस प्रकार सब मन्त्रों में पहले बीज का, फिर शक्ति तथा अंत में कीलक का उच्चारण होता है। उसी प्रकार यहां भी पहले कवच रूप बीज का, फिर अर्गलारूपा शक्ति का तथा अंत में कीलक रूप कीलक का क्रमशः पाठ होना चाहिए।
आरंभ में पवित्र स्थान की मिट्टी से वेदी बनाकर उसमें जौ, गेहूं बोएं। फिर उसके ऊपर कलश को विधिपूर्वक स्थापित करें। कलश के ऊपर मूर्ति की प्रतिष्ठा करें। मूर्ति यदि कच्ची मिट्टी, कागज या सिंदूर आदि से बनी हो और स्नानादि से उसमें विकृति होने की आशंका हो तो उसके ऊपर शीशा लगा द।

मूर्ति न हो तो कलश के पीछे स्वास्तिक और उसके दोनों भुजाओं में त्रिशूल बनाकर दुगार्जी का चित्र, पुस्तक तथा शालग्राम को विराजित कर विष्णु का पूजन करें। पूजन सात्विक हो, राजस और तामस नहीं।
नवरात्र व्रत के आरंभ में स्वस्ति वाचक शांति पाठ कर संकल्प करें और तब सर्वप्रथम गणपति की पूजा कर मातृका, लोकपाल, नवग्रह एवं वरुण का विधि से पूजन करें। फिर प्रधानमूर्ति का षोड़शोपचार पूजन करना चाहिए। अपने ईष्टदेव का पूजन करें। पूजन वेद विधि या संप्रदाय निर्दिष्ट विधि से होना चाहिए। दुर्गा देवी की आराधना अनुष्ठान में महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती का पूजन तथा मार्कण्डेयपुराण के अनुसार श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ मुख्य अनुष्ठान कर्तव्य है।

पाठ विधि

श्री दुर्गा सप्तशती पुस्तक का विधिपूर्वक पूजन कर इस मंत्र से प्रार्थना करनी चाहिए।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।

इस मंत्र से पंचोपचार पूजन कर यथाविधि पाठ करें। देवी व्रत में कुमारी पूजन परम आवश्यक माना गया है। सामर्थ्य हो तो नवरात्रि भर प्रतिदिन, अन्यथा समाप्ति के दिन नौ कुमारियों के चरण धोकर उन्हें देवी रूप मानकर गंध-पुष्पादि से अर्चन कर आदर के साथ यथारुचि मिष्ठान भोजन कराना चाहिए एवं वस्त्रादि से सत्कार करना चाहिए।
कुमारी पूजन में दस वर्ष तक की कन्याओं का अर्चन विशेष महत्व रखता है। दो वर्ष की कन्या कुमारी, तीन वर्ष की त्रिमूर्तिनी, चार वर्ष की कल्याणी, पांच वर्ष की रोहिणी, छः वर्ष की काली, सात वर्ष की चंडिका, आठ वर्ष की शाम्भवी, नौ वर्ष की दुर्गा और दस वर्ष वाली सुभद्रा स्वरूपा होती है।
दुर्गा पूजा में प्रतिदिन की पूजा का विशेष महत्व है जिसमें प्रथम शैलपुत्री से लेकर नवम् सिद्धिदात्री तक नव दुगाओं की नव शक्तियों का और स्वरूपों का विशेष अर्चन होता है।
देवी भागवत पुराण के अनुसार, साल में कुल चार नवरात्रि होते हैं जिनमें माघ और आषाढ़ के नवरात्र को गुप्त नवरात्र कहते हैं. चैत्र और आश्विन महीने में नवरात्रि मनाया जाता है, जिनका पुराण में सबसे अधिक महत्व बताया गया. बसंत ऋतु में होने के कारण चैत्र नवरात्रि को वासंती नवरात्रि और शरद ऋतु में आने वाले आश्विन मास के नवरात्रि को शारदीय नवरात्रि भी कहा जाता है. चैत्र और आश्विन नवरात्रि में आश्विन नवरात्रि को महानवरात्रि भी कहा जाता है.
हिंदू धर्म के अनुसार, नवरात्रों में कन्या पूजन का विशेष महत्व है. मां भगवती के भक्त अष्टमी या नवमी को कन्याओं की विशेष पूजा करते हैं. 9 कुंवारी कन्याओं को सम्मानित ढंग से बुलाकर उनके पैर धोकर कर आसन पर बैठा कर भोजन करा कर सबको दक्षिणा और भेंट देते हैं.
श्रीमद् देवीभागवत के अनुसार कन्या पूजन के

नियम

एक वर्ष की कन्या को नहीं बुलाना चाहिए, क्योंकि वह कन्या गंध भोग आदि पदार्थों के स्वाद से बिलकुल अनभिज्ञ रहती है. ह्यकुमारीह्ल कन्या वह कहलाती है जो दो वर्ष की हो चुकी हो, तीन वर्ष की कन्या त्रिमूर्ति, चार वर्ष की कल्याणी, पांच वर्ष की रोहिणी, छह वर्ष की कालिका, सात वर्ष की चण्डिका, आठ वर्ष की शाम्भवी, नौ वर्ष की दुर्गा और दस वर्ष की कन्या सुभद्रा कहलाती हैं.

इससे ऊपर की अवस्थावाली कन्या का पूजन नहीं करना चाहिए. कुमारियों की विधिवत पूजा करनी चाहिए. फिर स्वयं प्रसाद ग्रहण कर अपने व्रत को पूरा कर ब्राह्मण को दक्षिणा दे कर और उनके पैर छू कर विदा करना चाहिए.

कन्याओं के पूजन से प्राप्त होने वाले लाभ

'कुमारी' नाम की कन्या जो दो वर्ष की होती हैं दुख और दरिद्रता का नाश, शत्रुओं का क्षय और धन, आयु की वृद्धि करती हैं.

'त्रिमूर्ति' नाम की कन्या का पूजन करने से धर्म-अर्थ काम की पूर्ति होती हैं पुत्र- पौत्र आदि की वृद्धि होती है.

'कल्याणी' नाम की कन्या का नित्य पूजन करने से विद्या, विजय, सुख-समृद्धि प्राप्त होती है.

'रोहणी' नाम की कन्या के पूजन से रोगनाश हो जाता है.

'कालिका' नाम की कन्या के पूजन से शत्रुओं का नाश होता है.

'चण्डिका' नाम की कन्या के पूजन से धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है.

'शाम्भवी' नाम की कन्या के पूजन से सम्मोहन, दुःख-दरिद्रता का नाश और किसी भी प्रकार के युद्ध (संग्राम) में विजय प्राप्त होती हैं.

'दुर्गा' नाम की कन्या के पूजन से क्रूर शत्रु का नाश, उग्र कर्म की साधना और परलोक में सुख पाने के लिए की जाती हैं

'सुभद्रा' नाम की कन्या के पूजन से मनुष्य के सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं.

10 अक्टूबर से नवरात्रि शुरू हो रही है। इन नौ दिनों में मां दुर्गा के अलग-अलग रूपों की पूजा की जाती है। मां दूर्गा के भक्त नवरात्रि के आगमन होने से पहले ही तैयारियों में जुट जाते हैं। शास्त्रों के अनुसार नवरात्रि में हर तिथि का अपना महत्व होता है जिसमें 9 दिनों तक देवी की आराधना की जाती है और देवी को प्रसन्न करने के लिए हर तिथि पर अलग-अलग भोग अर्पित किया जाता है। माता को भोग अर्पित कर अपने जीवन से सारे कष्ट दूर किये जा सकते हैं।

प्रतिपदा तिथि- नवरात्रि का पहला दिन प्रतिपदा तिथि से आरम्भ होता है। इस दिन माता के पहले स्वरूप मां शैल पुत्री की आराधना की जाती है। प्रतिपदा तिथि पर मां शैलपुत्री को शुद्ध देसी घी का भोग लगाएं। इससे रोगों से मुक्ति मिलती है।

द्वितीया तिथि- इस दिन देवी के ब्रह्मचारिणी रूप की पूजा होती है। द्वितीया तिथि पर देवी को शक्कर और फल का भोग लगाकर दान करें इससे दीघार्यु का आशीर्वाद मिलता है।

तृतीया तिथि- इस तिथि पर देवी के चंद्रघंटा स्वरूप की पूजा होती है इस दिन दूध से बनी चीजों का भोग लगाने और उसका दान करने से मां प्रसन्न होती है सभी तरह के दुखों का नाश करती हैं।

चतुर्थी तिथि- नवरात्रि की इस तिथि पर देवी को मालपुए का भोग लगाना चाहिए और प्रसाद को ब्राह्मण को दान करें। इससे बुद्धि और कौशल का विकास होता है साथ ही निर्णय क्षमता में बढ़ोतरी होती है।

पंचमी तिथि- यह तिथि मां स्कंदमाता को समर्पित होती है। इस दिन माता दुर्गा को केले का भोग लगाना चाहिए और दान करना चाहिए इससे बुद्धि का विकास होता है।

षष्ठी तिथि- माता को इस तिथि पर शहद का भोग लगाना चाहिए। इस तिथि पर मधु से पूजन का विशेष महत्व होता है। शहद के भोग से सुंदर काया का निर्माण होता है।

सप्तमी तिथि- इस तिथि पर भगवती को गुड़ का भोग लगाना चाहिए और उसका दिन ब्राह्मण को करना चाहिए ऐसा करने से व्यक्ति शोक मुक्त होता है।

अष्टमी तिथि- इस तिथि पर मां दुर्गा को नारियल का भोग लगाना चाहिए और इसका दान करना चाहिए। इससे हर तरह की पीड़ा का शमन होता है। ऐसा करने से हर मनोकामना पूर्ण होती है।

नवमी तिथि- नवमी तिथि पर माता को अलग-अलग तरह के अनाजों से बनी चीजों का भोग लगाया जाता है और फिर उसे दान किया जाता है। इसे जीवन में सुख और समृद्धि आती है। साथ ही दशमी तिथि को काले तिल का भोग अर्पित कर देने से परलोक का भय नहीं रहता।

उपवास के 9 दिनों तक भूलकर भी नहीं करनी चाहिए ये गलतिया

पुराणों और शास्त्रों में नवरात्रि के नौ दिनों तक उपवास रखने के कुछ नियम बताए गए हैं जिसका पालन व्रत रखने वालों को जरूर करना चाहिए।

नवरात्रि में कलश स्थापना का विशेष महत्व होता है। पहले दिन कलश स्थापना और अखंड ज्योति जलाई जाती है। ऐसे में इस समय घर को कभी भी खाली छोड़कर कहीं और नहीं जाना चाहिए।

जो भक्त नवरात्रि में 9 दिनों तक व्रत रखता है उसे न तो बाल कटवाने चाहिए और न ही शेविंग करनी चाहिए। शास्त्रों में नवरात्रि पर बाल कटवाना अशुभ माना गया है। लेकिन इस दौरान बच्चों का मुंडन संस्कार शुभ होता है।

विष्णु पुराण के अनुसार मां दुर्गा के इन नौ दिनों में दोपहर के समय सोना नहीं चाहिए। इससे व्रत रखने का उचित फल नहीं मिलता।

नवरात्रि पर जो व्यक्ति उपवास रखता है उसे गंदे और बिना धुले कपड़े नहीं पहनने चाहिए।

नवरात्रि का व्रत रखने वाले लोगों को बेल्ट,चप्पल-जूते, बैग जैसी चमड़े की चीजों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

नवरात्रि पर कभी भी भूलकर शारीरिक संबंध नहीं बनना चाहिए। इससे अनिष्ट होने का खतरा हमेशा बना रहता है।

नवरात्रि के दिनों में एक स्थान पर बैठकर फलाहार करना शुभ होता है। फलाहार करते समय इधर-उधर नहीं घूमना चाहिए।

सप्तशती का पाठ करते वक्त बीच में दूसरी बात बोलने या उठने की गलती नहीं करनी चाहिए। इससे शुभ फल की प्राप्ति नहीं होती।

नवरात्रि के 9 दिनों में भूलकर भी नाखून नहीं काटना चाहिए। इससे उपवास रखने के बावजूद नवरात्रि का पूरा फल नहीं प्राप्त होता।

हिंदुओ के चार धाम की रोचक जानकारी

हिंदू मान्यता के अनुसार चार धाम की यात्रा का बहुत महत्व है। इन्हें तीर्थ भी कहा जाता है। ये चार धाम चार दिशाओं में स्थित है। उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण रामेश्वर, पूर्व में पुरी और पश्चिम में द्वारिका। प्राचीन समय से ही चारधाम तीर्थ के रूप मे मान्य थे, लेकिन वर्तमान समय में इनकी महिमा का प्रचार आद्यशंकराचार्यजी ने किया था। माना जाता है, उन्होंने चार धाम व बारह ज्योर्तिलिंग को सुचीबद्ध किया था।

क्यों बनाए गए चार धाम?

चारों धाम चार दिशा में स्थित करने के पीछे जो सांस्कृतिक लक्ष्य था, वह यह कि इनके दर्शन के बहाने भारत के लोग कम से कम पूरे भारत का दर्शन कर सके। वे विविधता और अनेक रंगों से भरी भारतीय संस्कृति से परिचित हों। अपने देश की सभ्यता और परंपराओं को जानें। ध्यान रहे सदियों से लोग आस्था से भरकर इन धामों के दर्शन के लिए जाते रहे हैं। पिछले कुछ दशकों से आवागमन के साधनों और सुविधा में विकास ने चारधाम यात्रा को सुगम बना दिया है।

किस धाम की क्या विशेषता है?

बद्रीनाथ धाम-बद्रीनाथ उत्तर दिशा मेंओं का मुख्य यात्राधाम माना जाता है। मन्दिर में नर-नारायण की पूजा होती है और अखण्ड दीप जलता है, जो कि अचल ज्ञानज्योति का प्रतीक है। यह भारत के चार धामों में प्रमुख तीर्थ-स्थल है। प्रत्येक हिन्दू की यह कामना होती है कि वह बद्रीनाथ का दर्शन एक बार अवश्य ही करे। यहां पर यात्री तप्तकुण्ड में स्नान करते हैं। यहां वनतुलसी की माला, चने की कच्ची दाल, गिरी का गोला और मिश्री आदि का प्रसाद चढ़ाया जाता है।

रामेश्वर धाम-रामेश्वर में भगवान शिव की पूजा लिंग रूप में की जाती है। यह शिवलिंग बारह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। भारत के उत्तर मे काशी की जो मान्यता है, वही दक्षिण में रामेश्वरम् की है। रामेश्वरम चेन्नई से लगभग सवा चार सौ मील दक्षिण-पूर्व में है। यह हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से चारों ओर से घिरा हुआ एक सुंदर शंख आकार द्वीप है।

पुरी धाम-पुरी का श्री जगन्नाथ मंदिर भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित है। यह भारत के ओडिशा राज्य के तटवर्ती शहर पुरी में स्थित है। जगन्नाथ शब्द का अर्थ जगत के स्वामी होता है। इनकी नगरी ही जगन्नाथपुरी या पुरी कहलाती है। इस मंदिर को हिन्दुओं के चार धाम में से एक गिना जाता है। इस मंदिर का वार्षिक रथ यात्रा उत्सव प्रसिद्ध है। यहां मुख्य रूप से भात का प्रसाद चढ़ाया जाता है।

द्वारिका धाम-द्वारका भारत के पश्चिम में समुद्र के किनारे पर बसी है। आज से हजारों वर्ष पूर्व भगवान कृष्ण ने इसे बसाया था। कृष्ण मथुरा में उत्पन्न हुए, गोकुल में पले, पर राज उन्होने द्वारका में ही किया। यहीं बैठकर उन्होने सारे देश की बागडोर अपने हाथ में संभाली। पांडवों को सहारा दिया। कहते हैं असली द्वारका तो पानी में समा गई, लेकिन कृष्ण की इस भूमि को आज भी पूज्य माना जाता है। इसलिए द्वारका धाम में श्रीकृष्ण स्वरूप का पूजन किया जाता है।

चारधाम

चारधाम की स्थापना आद्य शंकराचार्य ने की। उद्देश्य था उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम चार दिशाओं में स्थित इन धामों की यात्रा कर मनुष्य भारत की सांस्कृतिक विरासत को जाने-समझें।

बदरीनाथ धाम

कहां ह उत्तर दिशा में हिमालय पर अलकनंदा नदी के पास

प्रतिम विष्णु की शालिग्राम शिला से बनी चतुर्भुज मूर्ति। इसके आसपास बाईं ओर उद्धवजी तथा दाईं ओर कुबेर की प्रतिमा।

पौराणिक कथाओं और यहाँ की लोक कथाओं के अनुसार यहाँ नीलकंठ पर्वत के समीप भगवान विष्णु ने बाल रूप में अवतरण किया। यह स्थान पहले शिव भूमि (केदार भूमि) के रूप में व्यवस्थित था। भगवान विष्णुजी अपने ध्यानयोग हेतु स्थान खोज रहे थे और उन्हें अलकनंदा नदी के समीप यह स्थान बहुत भा गया। उन्होंने वर्तमान चरणपादुका

स्थल पर (नीलकंठ पर्वत के समीप) ऋषि गंगा और अलकनंदा नदी के संगम के समीप बाल रूप में अवतरण किया और क्रंदन करने लगे। उनका रुदन सुन कर माता पार्वती का हृदय द्रवित हो उठा। फिर माता पार्वती और शिवजी स्वयं उस बालक के समीप उपस्थित हो गए। माता ने पूछा कि बालक तुम्हें क्या चहिये? तो बालक ने ध्यानयोग करने हेतु वह स्थान मांग लिया। इस तरह से रूप बदल कर भगवान विष्णु ने शिव-पार्वती से यह स्थान अपने ध्यानयोग हेतु प्राप्त कर लिया। यही पवित्र स्थान आज बदरीविशाल के

नाम से सर्वविदित है।

त्रेता युग

नर तथा नारायण।

माना जाता है कि इन्होंने बद्रीनाथ मन्दिर में कई वर्षों तक तपस्या की थी।

नर और नारायण ने यहां कई वर्षों तक तपस्या की थी। यह भी माना जाता है कि उन्होंने अगले जन्म में क्रमशः अर्जुन तथा कृष्ण के रूप में जन्म लिया था।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जब गंगा नदी धरती पर अवतरित हुई, तो यह बारह धाराओं में बंट गई। इस स्थान पर मौजूद धारा अलकनंदा के नाम से विख्यात हुई और यह स्थान बदरीनाथ, भगवान विष्णु का वास बना। भगवान विष्णु की प्रतिमा वाला वर्तमान मन्दिर ३,१३३ मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और माना जाता है कि आदि शंकराचार्य, आठवीं शताब्दी के दार्शनिक संत ने इसका निर्माण कराया था। इसके पश्चिम में २७ किलोमीटर की दूरी पर स्थित बदरीनाथ शिखर कि ऊँचाई ७,१३८ मीटर है। बदरीनाथ में एक मन्दिर है, जिसमें बदरीनाथ या विष्णु की वेदी है। यह २,००० वर्ष से भी अधिक समय से एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान रहा है।

द्वापर युग

मान्यता है कि इसी स्थान पर पाण्डवों ने अपने पितरों का पिंडदान किया था। बद्रीनाथ के ब्रम्हाकपाल क्षेत्र में आज भी तीर्थयात्री अपने पितरों का आत्मा का शांति के लिए पिंडदान करते

हैं। यह भी माना जाता है कि व्यास जी ने महाभारत इसी जगह पर लिखी थी।

बदरीनाथ की मूर्ति शालग्रामशिला से बनी हुई, चतुर्भुज ध्यानमुद्रा में है। कहा जाता है कि यह मूर्ति देवताओं ने नारदकुण्ड से निकालकर स्थापित की थी। सिद्ध, ऋषि, मुनि इसके प्रधान अर्चक थे। जब बौद्धों का प्राबल्य हुआ तब उन्होंने इसे बुद्ध की मूर्ति मानकर पूजा आरम्भ की। शंकराचार्य की प्रचार-यात्रा के समय बौद्ध तिब्बत भागते हुए मूर्ति को अलकनन्दा में फेंक गए। शंकराचार्य ने अलकनन्दा से पुनः बाहर निकालकर उसकी स्थापना की। तदनन्तर मूर्ति पुनः स्थानान्तरित हो गयी और तीसरी बार तप्तकुण्ड से निकालकर रामानुजाचार्य ने इसकी स्थापना की।

द्वारका धामः-द्वारका गुजरात के देवभूमि द्वारका जिले में स्थित एक नगर तथा हिन्दू तीर्थस्थल है। यह हिन्दुओं के साथ सर्वाधिक पवित्र तीर्थों में से एक तथा चार धामों में से एक है। यह सात पुरियों में एक पुरी है। जिले का नाम द्वारका पुरी से रखा गया है जीसकी रचना २०१३ में की गई थी। यह नगरी भारत के पश्चिम में समुन्द्र के किनारे पर बसी है। हिन्दू धर्मग्रन्थों के अनुसार, भगवान कृष्ण ने इसे बसाया था। यह श्रीकृष्ण की कर्मभूमि है। द्वारका भारत के सात सबसे प्राचीन शहरों में से एक है।

काफी समय से जाने-माने शोधकताओं ने पुराणों में वर्णित द्वारिका के रहस्य का पता लगाने का प्रयास किया, लेकिन वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित कोई भी अध्ययन कार्य अभी तक पूरा नहीं किया गया है। २००५ में द्वारिका के रहस्यों से पर्दा उठाने के लिए अभियान शुरू किया गया था। इस अभियान में भारतीय नौसेना ने भी मदद की।अभियान के दौरान समुद्र की गहराई में कटे-छटे पत्थर मिले और यहां से लगभग २०० अन्य नमूने भी एकत्र किए, लेकिन आज तक यह तय नहीं हो पाया कि यह वही नगरी है अथवा नहीं जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने बसाया था। आज भी यहां वैज्ञानिक स्कूबा डायविंग के जरिए समंदर की गहराइयों में कैद इस रहस्य को सुलझाने में लगे हैं।

कृष्ण मथुरा में उत्पन्न हुए, पर राज उन्होने द्वारका में किया। यहीं बैठकर उन्होने सारे देश की बागडोर अपने हाथ में संभाली। पांड़वों को सहारा दिया। धर्म की जीत कराई और, शिशुपाल और दुर्योधन जैसे अधर्मी राजाओं को मिटाया। द्वारका उस जमाने में राजधानी बन गई थीं। बड़े-बड़े राजा यहां आते थे और बहुत-से मामले में भगवान कृष्ण की सलाह लेते थे। इस जगह का धार्मिक महत्व तो है ही, रहस्य भी कम नहीं है। कहा जाता है कि कृष्ण की मृत्यु के साथ उनकी बसाई हुई यह नगरी समुद्र में डूब गई। आज भी यहां उस नगरी के अवशेष मौजूद हैं।

रामेश्वरमः-रामेश्वरम् के विख्यात मंदिर की स्थापना के बारें में यह रोचक कहानी कही जाती है। सीताजी को छुड़ाने के लिए राम ने लंका पर चढ़ाई की थी। उन्होने लड़ाई के बिना सीताजी को छुड़वाने का बहुत प्रयत्न किया, पर जब राम सफलता न मिली तो विवश होकर उन्होने युद्ध किया। इस युद्ध में रावण और उसके सब साथी राक्षस मारे गये। रावण भी मारा गया; और अन्ततः सीताजी को मुक्त कराकर श्रीराम वापस लौटे। इस युद्ध हेतु राम को वानर सेना सहित सागर पार करना था, जो अत्यधिक कठिन कार्य था।

रावण भी साधारण राक्षस नहीं था। वह पुलस्त्य महर्षि का नाती था। चारों वेदों का जाननेवाला था और था शिवजी का बड़ा भक्त। इस कारण राम को उसे मारने के बाद बड़ा खेद हुआ। ब्रह्मा-हत्या का पाप उन्हें लग गया। इस पाप को धोने के लिए उन्होने रामेश्वरम् में शिवलिंग की स्थापना करने का निश्चय किया। यह निश्चय करने के बाद श्रीराम ने हनुमान को आज्ञा दी कि काशी जाकर वहां से एक शिवलिंग ले आओ। हनुमान पवन-सुत थे। बड़े वेग से आकाश मार्ग से चल पड़े। लेकिन शिवलिंग की स्थापना की नियत घड़ी पास आ गई। हनुमान का कहीं पता न था। जब सीताजी ने देखा कि हनुमान के लौटने मे देर हो रही है, तो उन्होने समुद्र के किनारे के रेत को मुट्ठी में बांधकर एक शिवलिंग बना दिया। यह देखकर राम बहुत प्रसन्न हुए और नियम समय पर इसी शिवलिंग की स्थापना कर दी। छोटे आकार का सही शिवलिंग रामनाथ कहलाता है।

सेतु का हवाई दृश्य, सामने की ओर श्रीलंकाको जाता है

बाद में हनुमान के आने पर पहले छोटे प्रतिष्ठित छोटे शिवलिंग के पास ही राम ने काले पत्थर के

उस बड़े शिवलिंग को स्थापित कर दिया। ये दोनों शिवलिंग इस तीर्थ के मुख्य मंदिर में आज भी पूजित हैं। यही मुख्य शिवलिंग ज्योतिर्लिंगहै।

सेतु का पौराणिक संदर्भ

पूरे भारत, दक्षिण पूर्व एशिया और पूर्व एशिया के कई देशों में हर साल दशहरे पर और राम के जीवन पर आधारित सभी तरह के नृत्य-नाटकों में सेतु बंधन का वर्णान किया जाता है। राम के बनाए इस पुल का वर्णन रामायण में तो है ही, महाभारत में भी श्री राम के नल सेतु का जिक्र आया है। कालीदास की रघुवंश में सेतु का वर्णन है। अनेक पुराणों में भी श्रीरामसेतु का विवरण आता है। एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में इसे एडम्स ब्रिज के साथ-साथ राम सेतु कहा गया है। नासा और भारतीय सेटेलाइट से लिए गए चित्रों में धनुषकोडि से जाफना तक जो एक पतली सी द्वीपों की रेखा दिखती है, उसे ही आज रामसेतु के नाम से जाना जाता है। इसी पुल को बाद में एडम्स ब्रिज का नाम मिला। यह सेतु तब पांच दिनों में ही बन गया था। इसकी लंबाई १०० योजन व चौड़ाई १० योजन थी। इसे बनाने में उच्च तकनीक का प्रयोग किया गया था।

जगन्नाथपुरीः- विष्णु की नीलमाधव प्रतिमा जो जगन्नाथ कहलाती है। सुभद्रा और बलभद्र की प्रतिमाएं भी इस मंदिर के उद्गम से जुड़ी परंपरागत कथा के अनुसार, भगवान जगन्नाथ की इंद्रनील या नीलमणि से निर्मित मूल मूर्ति, एक अगरु वृक्ष के नीचे मिली थी। यह इतनी चकाचौंध करने वाली थी, कि धर्म ने इसे पृथ्वी के नीचे छुपाना चाहा। मालवा नरेश इंद्रद्युम्न को स्वप्न में यही मूर्ति दिखाई दी थी। तब उसने कड़ी तपस्या की और तब भगवान विष्णु ने उसे बताया कि वह पुरी के समुद्र तट पर जाये और उसे एक दारु (लकड़ी) का लट्ठा मिलेगा। उसी लकड़ी से वह मूर्ति का निर्माण कराये। राजा ने ऐसा ही किया और उसे लकड़ी का लट्ठा मिल भी गया। उसके बाद राजा को विष्णु और विश्वकर्मा बढ़ई कारीगर और मूर्तिकार के रूप में उसके सामने उपस्थित हुए। किंतु उन्होंने यह शर्त रखी, कि वे एक माह में मूर्ति तैयार कर देंगे, परन्तु तब तक वह एक कमरे में बंद रहेंगे और राजा या कोई भी उस कमरे के अंदर नहीं आये। माह के अंतिम दिन जब कई दिनों तक कोई भी आवाज नहीं आयी, तो उत्सुकता वश राजा ने कमरे में झांका और वह वृद्ध कारीगर द्वार खोलकर बाहर आ गया और राजा से कहा, कि मूर्तियां अभी अपूर्ण हैं, उनके हाथ अभी नहीं बने थे। राजा के अफसोस करने पर, मूर्तिकार ने बताया, कि यह सब दैववश हुआ है और यह मूर्तियां ऐसे ही स्थापित होकर पूजी जायेंगीं। तब वही तीनों जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियां मंदिर में स्थापिता की गयीं।

जय विजय की कथा

जय और विजय दोनों भगवान विष्णु के द्वारपाल थे, इनकी मुर्खता के कारण इनको श्राप मिला।

द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ। जय अरु बिजय जान सब कोऊ॥

*बिप्र श्राप तें दूनउ भाई। तामस असुर देह तिन्ह पाई॥ कनककसिपु अरु हाटकलोचन। जगत बिदित सुरपति मद मोचन॥

भावार्थः-श्री हरि के जय और विजय दो प्यारे द्वारपाल हैं, जिनको सब कोई जानते हैं॥ उन दोनों भाइयों ने ब्राह्मण (सनकादि) के शाप से असुरों का तामसी शरीर पाया। एक का नाम था हिरण्यकशिपु और दूसरे का हिरण्याक्ष। ये देवराज इन्द्र के गर्व को छुड़ाने वाले सारे जगत में प्रसिद्ध हुए॥

एक बार सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार (ये चारों सनकादिक ऋषि कहलाते हैं और देवताओं के पूर्वज माने जाते हैं) सम्पूर्ण लोकों से विरक्त होकर चित्त की शान्ति के लिये भगवान विष्णु के दर्शन करने हेतु उनके बैकुण्ठ लोक में गये।

बैकुण्ठ के द्वार पर जय और विजय नाम के दो द्वारपाल पहरा दिया करते थे। जय और विजय ने इन सनकादिक ऋषियों को द्वार पर ही रोक लिया और बैकुण्ठ लोक के भीतर जाने से मना करने लगे।

उनके इस प्रकार मना करने पर सनकादिक ऋषियों ने कहा, "अरे मूर्खों! हम तो भगवान विष्णु के परम भक्त हैं। हमारी गति कहीं भी नहीं रुकती है।

हम देवाधिदेव के दर्शन करना चाहते हैं। तुम हमें उनके दर्शनों से क्यों रोकते हो? तुम लोग तो भगवान की सेवा में रहते हो, तुम्हें तो उन्हीं के समान समदर्शी होना चाहिये। भगवान का स्वभाव परम शान्तिमय है, तुम्हारा स्वभाव भी वैसा ही होना चाहिये।

हमें भगवान विष्णु के दर्शन के लिये जाने दो।" ऋषियों के इस प्रकार कहने पर भी जय और विजय उन्हें बैकुण्ठ के अन्दर जाने से रोकने लगे। जय और विजय के इस प्रकार रोकने पर सनकादिक ऋषियों ने क्रुद्ध होकर कहा, "भगवान विष्णु के समीप रहने के बाद भी तुम लोगों में अहंकार आ गया है और अहंकारी का वास बैकुण्ठ में नहीं हो सकता।

इसलिये हम तुम्हें शाप देते हैं कि तुम लोग पाप योनि में जाओ और अपने पाप का फल भुगतो।" उनके इस प्रकार शाप देने पर जय और विजय भयभीत होकर उनके चरणों में गिर पड़े और क्षमा माँगने लगे।

यह जान कर कि सनकादिक ऋषिगण भेंट करने आये हैं भगवान विष्णु स्वयं लक्ष्मी जी एवं अपने समस्त पार्षदों के साथ उनके स्वागत के लिय पधारे। भगवान विष्णु ने उनसे कहा, "हे मुनीश्वरों! ये जय और विजय नाम के मेरे पार्षद हैं। इन दोनों ने अहंकार बुद्धि को धारण कर आपका अपमान करके अपराध किया है। आप लोग मेरे प्रिय भक्त हैं और इन्होंने आपकी अवज्ञा करके मेरी भी अवज्ञा की है। इनको शाप देकर आपने उत्तम कार्य किया है।

इन अनुचरों ने तपस्वियों का तिरस्कार किया है और उसे मैं अपना ही तिरस्कार मानता हूँ। मैं इन पार्षदों की ओर से क्षमा याचना करता हूँ। सेवकों का अपराध होने पर भी संसार स्वामी का ही अपराध मानता है। अतः मैं आप लोगों की प्रसन्नता की भिक्षा चाहता हूँ।"

भगवान के इन मधुर वचनों से सनकादिक ऋषियों का क्रोध तत्काल शान्त हो गया। भगवान की इस उदारता से वे अति अनन्दित हुये और बोले, "आप धर्म की मयार्दा रखने के लिये ही अपने इतना आदर देते हैं।

हे नाथ! हमने इन निरपराध पार्षदों को क्रोध के वश में होकर शाप दे दिया है इसके लिये हम क्षमा चाहते हैं। आप उचित समझें तो इन द्वारपालों को क्षमा करके हमारे शाप से मुक्त कर सकते हैं।"

भगवान विष्णु ने कहा, "हे मुनिगणों! मै सर्वशक्तिमान होने के बाद भी ब्राह्मणों के वचन को असत्य नहीं करना चाहता क्योंकि इससे धर्म का उल्लंघन होता है। आपने जो शाप दिया है वह मेरी ही प्रेरणा से हुआ है।

ये अवश्य ही इस दण्ड के भागी हैं। ये दिति के गर्भ में जाकर दैत्य योनि को प्राप्त करेंगे और मेरे द्वारा इनका संहार होगा। ये मुझसे शत्रुभाव रखते हुये भी मेरे ही ध्यान में लीन रहेंगे। मेरे द्वारा इनका संहार होने के बाद ये पुनः इस धाम में वापस आ जावेंगे।"

तब जय और विजय के तीन जन्म हुए, जय और विजय अपने पहले जन्म में हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष के रूप में जन्मे। भगवान विष्णु ने वराह अवतार लेकर हिरण्याक्ष का वध और नरसिंह वतार से हिरण्यकशिपु का वध किया। दूसरे जन्म में दोनों रावण और कुम्भकर्ण के रूप में जन्मे और राम अवतार के हाथों मारे गए। तीसरे जन्म में वो दोनों शिशुपाल और दंतवक्र के रूप में जन्मे और श्री कृष्ण अवतार के हाथों मारे गए और अंततः उन्हें शाप से मुक्ति मिल गई।

जय – विजय की कथा का रहस्यार्थ!!!!!

श्रीमद्भागवत महापुराण के तृतीय स्कन्ध के अन्तर्गत अध्याय १५ एवं १६ में 'जय – विजय को सनकादि का शाप तथा जय – विजय का वैकुण्ठ से पतन' नामक कथा वर्णित है । कथा का संक्षिप्त स्वरूप इस प्रकार है –

ब्रह्मा के मानस पुत्र सनकादि स्पृहा से मुक्त होकर समस्त लोकों में विचरण किया करते थे ।एक बार वे समस्त लोकों के शिरोभाग में स्थित वैकुण्ठ धाम में जा पहुंचे, जहां आदि नारायण शुद्ध सत्त्वमय स्वरूप धारण कर हर समय विराजमान रहते हैं तथा जिसमें निःश्रेयस नाम का एक वन भी है ।

भगवद् दर्शन की लालसा से उस वैकुण्ठधाम की छह ड्योढियों को पार करके जब वे सातवीं पर पहुंचे, तब उन्हें दो देवश्रेष्ठ द्वारपालों ने बैंत अडाकर भीतर प्रवेश करने से रोक दिया, जहां श्रीहरि लक्ष्मी जी के साथ विराजमान थे ।

सनकादि समदृष्टि से युक्त, तत्त्वज्ञ, योगनिष्ठ, पूजा के सर्वश्रेष्ठ पात्र, ब्रह्मानन्द में निमग्न, पांच वर्ष के बालकों जैसे प्रतीत होने वाले तथा दिगम्बर वृत्ति से युक्त थे, अतः द्वारपालों के द्वारा किए गए दुर्व्यवहार के योग्य नहीं थे ।हरि दर्शन में विघ्न पडने के कारण सनकादि के नेत्र क्रोध से कुछ – कुछ लाल हो गए और उन्होंने वैकुण्ठनाथ के उन दोनों पार्षदों के कल्याण हेतु उन्हें वैकुण्ठलोक से निकल कर

पापमय योनियों – काम, क्रोध, लोभ में चले जाने का आदेश दे दिया ।

सनकादि के कठोर वचन सुनकर श्रीहरि के दोनों पार्षदों ने अपने दण्ड को 'स्वीकार' कर लिया परन्तु सनकादि से प्रार्थना की कि वे ऐसी कृपा करे जिससे अधमाधम योनियों में जाने पर भी उन्हें भगवत्स्मृति को नष्ट करने वाला मोह प्राप्त न हो । सनकादि तथा द्वारपालों के मध्य घटित हुए इस घटनाचक्र के विषय में जानकर श्रीहरि लक्ष्मी जी के सहित स्वयं ही अपने भक्त सनकादि के नेत्रगोचर हुए । सनकादि ने भगवान् की स्तुति क्टी ।

भगवान् ने अपने पार्षदों जय – विजय के अपराध हेतु – जो एक बार पहले लक्ष्मी जी को भी प्रवेश करने से रोक चुके थे – स्वयं क्षमाप्रार्थी होकर सनकादि से प्रार्थना की कि वे इन अनुचरों पर यह कृपा करें कि इनका निर्वासन काल शीघ्र समाप्त हो जाए और वे अपराध के अनुरूप अधम गति भोगकर शीघ्र ही मेरे पास लौट आएं ।

श्रीहरि की इस विनम्रता से अभिभूत सनकादि ने श्रीहरि की इच्छा को शिरोधार्य कर उनकी परिक्रमा की और उन्हें प्रणाम कर उनसे आज्ञा लेकर उनके ऐश्वर्य का वर्णन करते हुए वहां से लौट आए ।

श्रीहरि ने अपने अनुचरों जय – विजय को विप्र तिरस्कार के कारण अधम योनि में जाने का आदेश दिया और क्रोधाकार – वृत्ति जनित एकाग्रता से शीघ्र ही पापमुक्त होकर वापस लौट आने के प्रति आश्वस्त भी किया । श्रीहरि ने स्वधाम में प्रवेश किया और दोनों द्वारपाल देवश्रेष्ठ जय – विजय ब्राह्मण शाप के कारण वैकुण्ठ लोक से नीचे गिर गए ।

प्रस्तुत कथा पूर्ण रूप से प्रतीकात्मक है और मनुष्य के मन – बुद्धि में विद्यमान अहंकार के परिमार्जन से सम्बन्धित है ।

प्रत्येक मनुष्य आत्म चैतन्य (आत्मा) तथा शरीर का एक जोड है । आत्म चैतन्य जब शरीर में क्रियाशील होता है, तब जीव चैतन्य कहलाता है । आत्म चैतन्य तथा जीव चैतन्य में अबाधित सम्बन्ध है अर्थात् जीव चैतन्य आत्म चैतन्य के निकट अप्रतिहत गति से गमन – आगमन करता रहता है ।

इस शुद्ध स्थिति को शास्त्रों की भाषा में स्व – स्वरूप में अवस्थिति अथवा आत्म – साक्षात्कार प्रभृति विभिन्न नामों से अभिहित किया जाता है । परन्तु यदि जीव चेतना की इस अप्रतिहत गति में बाधा उपस्थित होती है, तब स्व – स्वरूप में अवस्थिति खण्डित हो जाती है और उसी समय से समस्या का प्रारम्भ होता है क्योंकि आत्म – चैतन्य ही समस्त शक्ति, ज्ञान, शान्ति तथा आनन्द का मूल स्रोत है ।

उससे सम्बन्ध विच्छेद होने पर मनुष्य को प्राप्त होने वाली शक्ति, ज्ञान, शान्ति तथा आनन्द का भी सम्बन्ध – विच्छेद हो जाता है । अतः जीव चेतना कभी नहीं चाहती कि आत्म चैतन्य के निकट उसकी अप्रतिहत गति में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित हो ।

ऐसी स्थिति में मनुष्य की जीव चेतना बाधा उपस्थित करने वाले तत्त्वों में जो बाधक तत्त्व विद्यमान है, उसके परिमार्जन के लिए पूर्ण प्रयत्नशील होती है । जीव – चेतना द्वारा बाधक तत्त्व के परिमार्जन की प्रक्रिया भी अत्यन्त अनूठी है । इस प्रक्रिया को निम्नांकित बिन्दुओं के रूप में कथा में प्रकट किया गया है –

१– जीव चेतना की अबाधित गति में बाधा उपस्थित करने वाला तत्त्व है – मन – बुद्धि में रहने वाला अहंकार । मन – बुद्धि नामक दोनों तत्त्व जब अपनी शुद्ध अवस्था में होते हैं, तब उत्तम सेवकों की भांति आत्म चैतन्य की आज्ञा को शिरोधार्य करके उनकी आज्ञा का पालन मात्र करते हैं । परन्तु अहंकार से अशुद्ध होने पर ये विपरीत आचरण करने वाले होने से दण्ड के पात्र बन जाते हैं ।

२– अहंकार से युक्त मन – बुद्धि की शुद्धि के दो ही उपाय हैं । जीव चेतना मनुष्य को पहला अवसर इस रूप में प्रदान करती है कि मनुष्य प्रयत्नपूर्वक गुणों के संवर्धन द्वारा अपनी मनोगत और बुद्धिगत चेतना को निम्न धरातल से उठाकर धीरे – धीरे उच्च धरातल पर स्थापित करे । फिर अन्तमुर्खी होकर अन्तर्दर्शन करे । अन्तः के दर्शन से अपने भीतर विद्यमान अहंकार का दर्शन होने पर वह अहंकार शनैः– शनैः समाप्त होने लगता है ।

अहंकार के परिमार्जन के लिए यह साधना का एक प्रकार है । परन्तु यदि मनुष्य इस साधना – पथ पर चलने में समर्थ नहीं होता अर्थात् अपने भीतर विद्यमान अहं का दर्शन नहीं कर पाता, तब जीव चेतना दूसरे उपाय का आश्रय ग्रहण करती है । इसी दूसरे उपाय का निदर्शन प्रस्तुत कथा के माध्यम से कराया गया है ।

३– जीव चेतना अनुग्रहशीला है । वह मन – बुद्धि को अहं से मुक्त करने के लिए सर्वप्रथम उसे काम – क्रोध – लोभ आदि विकारों में से किसी विशिष्ट विकार से युक्त बनाती है अर्थात् मनुष्य के मन – बुद्धि षड्– विकारों में से किसी भी एक विकार से युक्त हो जाते हैं ।

४– विशिष्ट विकार से युक्त होकर मनुष्य के मन – बुद्धि तत्सम्बन्धित क्षेत्र में अत्यन्त मनमाना वेद – विरुद्ध आचरण करते हैं । इस वेद –विरुद्ध आचरण से वे अप्रत्यक्ष रूप से अपने लिए विघ्नों को ही आमन्त्रित करते हैं ।

५– अहंकार युक्त होकर मनमाना विरुद्ध आचरण करने से मनुष्य की अन्तःशक्तियां भी पीडित होती हैं और बाह्य शक्तियां भी । इसलिए शुभेच्छुक लोग वेद – विरुद्ध आचरण से निवृत्त होने के लिए उसे समझाने का प्रयत्न करते हैं परन्तु अहंकार युक्त मन – बुद्धि पर इसका कोई प्रभाव नहीं होता, प्रत्युत वह स्वयं को अति सामर्थ्यशाली समझकर अधिक प्रबल अहंकार से युक्त हो जाता है ।

६– अब शुभेच्छुक शक्तियां स्वयं को असमर्थ अनुभव करते हुए उस अभिमानी से कहने लगती हैं कि सर्वशक्तिमान् सत्ता ही तुम्हारा सामना तथा कल्याण करने में समर्थ है ।

७– यह सुनते हुए प्रबल अहंकार युक्त मन – बुद्धि वाला मनुष्य बाह्य रूप से तो सर्वशक्तिमान् सत्ता को तुच्छ कहता रहता है, परन्तु भीतर ही भीतर वह अपनी विरोधी उस सर्वशक्तिमान् सत्ता को भयवश अथवा क्रोधवश अथवा द्वेषवश ही याद करने लगता है ।

८– इस प्रकार प्रबल अहंकार के वशीभूत हुआ वह मनुष्य प्रतिक्षण भय, क्रोध अथवा द्वेषवश सर्वशक्तिमान् सत्ता से जुडा रहता है । प्रतिक्षण मन – बुद्धि की यह एकाग्र स्थिति ही उसे योगनिष्ठ बना देती है ।

९– सर्वशक्तिमान् सत्ता के प्रति मन – बुद्धि की यह एकाग्र स्थिति भले ही भय, क्रोध अथवा द्वेषवश बनी हो, परन्तु उस मनुष्य में विशिष्ट चैतन्य का अवतरण करा देती है ।

१०- इस अवतरित हुए विशिष्ट चैतन्य के प्रभाव से मन – बुद्धि में निहित सारा अहंकार खो जाता है और मन – बुद्धि पुनः शुद्ध होकर पूर्व की भांति आत्म – चैतन्य के सेवक पद पर आरूढ हो जाते हैं ।

११ – इस प्रकार कथा इंगित करती है कि अहंकार से मुक्त होकर आत्म साक्षात्कार के योग्य होने के लिए दुःखों, विघ्नों की लम्बी श्रृङ्खला से निकलना ही होगा ।तभी चेतना रूपी कमल खिलता है ।

अहंकार युक्त मन – बुद्धि के उदाहरण के रूप में भागवतकार ने हिरण्याक्ष – हिरण्यकशिपु, रावण – कुम्भकर्ण तथा शिशुपाल – दन्तवक्त्र के चरित्रों को प्रस्तुत किया है।

अब हम कथा के प्रतीकों पर ध्यान द९ं ।

१- सनकादि – अनुग्रहशील जीव चेतना, जो मन – बुद्धि को अहंकार मुक्त करने का उपाय करती है – कहानी में सनकादि नाम से अभिहित की गई है । सनकादि का अर्थ है – सनक, सनन्दन, सनातन तथा सनत नामक चार कुमार । इन चारो शब्दों में 'सन' शब्द के साथ एक ही अर्थ वाले चार भिन्न – भिन्न प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ है – सदा, नित्य, शाश्वत स्वरूप।

शाश्वत तो केवल चैतन्य ही है, अतः सनकादि शब्द चैतन्य वाचक हुआ । चूंकि यह चैतन्य मनुष्य शरीर में जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तथा प्राज्ञ(तुरीय) नामक चार अवस्थाओं में विद्यमान रहता है, इसलिए जीव चैतन्य कहलाता है । चार अवस्थाओं में विद्यमान रहने के कारण इस जीव चैतन्य को सनक, सनन्दन, सनातन तथा सनत नामक एक ही अर्थ वाले चार शब्दों से संकेतित किया गया है ।

यह जीव चैतन्य(चेतना) अत्यन्त शुद्ध अर्थात किसी भी प्रकार की अशुद्धि के आवरण से रहित होता है, इसीलिए कहानी में सनकादि को 'दिगम्बर वृत्ति' वाला, नित्य नूतन होने के कारण 'कुमार' अवस्था से युक्त, आत्म – चैतन्य से एकाकारता की सामर्थ्य के कारण 'तत्त्वज्ञ', 'योगनिष्ठ', 'समद्रष्टा', ब्रह्मचर्या से युक्त होने के कारण 'ब्राह्मण' तथा ब्रह्मानन्द में निमग्न प्रभृति विभिन्न शब्दों से इंगित किया गया है ।

सनकादि को ब्रह्मा का मानस पुत्र कहा गया है ।ब्रह्म शब्द बृंह धातु से बना है , जिसका अर्थ है – बढना । ब्रह्म(परम सत्ता) जब बढने के धर्म से युक्त होता है, तब ब्रह्मा कहलाता है । इस आधार पर आत्म – चैतन्य का जीव चैतन्य के रूप में प्रस्फुरण उसका बृंहण ही कहा जाएगा ।'पुत्र' शब्द पौराणिक साहित्य में गुण के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।इस आधार पर जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तथा प्राज्ञ नामक चार अवस्थाओं से युक्त होना जीव चैतन्य का अपना विशिष्ट गुण है । अतः सनकादि को ब्रह्मा का मानस पुत्र कहना युक्तिसंगत ही है ।

२- जय – विजय – कथा के दूसरे प्रमुख पात्र हैं – जय – विजय ।प्रस्तुत कथा में जय – विजय का वर्णन दो स्वरूपों में हुआ है ।प्रथम स्वरूप में जय – विजय काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद तथा मत्सर नामक षड्- विकारों तथा अहंकार से रहित शुद्ध मन – बुद्धि के प्रतीक हैं ।उपर्युक्त विकारों पर विजय प्राप्त रहने के कारण ही उन्हें जय – विजय नाम से सम्बोधित किया गया प्रतीत होता है । परन्तु दूसरे स्वरूप में उन्हें अहंकार से युक्त अशुद्ध मन – बुद्धि के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

प्रथम स्वरूप – प्रथम स्वरूप में जय – विजय को वैकुण्ठ लोक के द्वारपाल तथा भगवान् के पार्षद कहा गया है ।द्वारपाल का कार्य है – केवल वांछित व्यक्ति अथवा वस्तु को ही घर के भीतर प्रवेश करने की अनुमति देना तथा अवांछित व्यक्ति अथवा वस्तु को बाहर ही रोक देना । शुद्ध मन – बुद्धि को द्वारपाल कहकर उनके इसी कार्य की ओर इंगित किया गया है ।

शुद्ध मन – बुद्धि भी बाह्य जगत से वांछित भाव अथवा विचार को ग्रहण कर लेते हैं तथा अवांछित को बाहर ही छोड देते हैं ।पार्षद का अर्थ है – परिषद् या सभा का अनुचर अथवा सेवक । जिस प्रकार सभा का सेवक सभापति की आज्ञा के अनुसार कार्य करने वाला होता है, उसी प्रकार मनुष्य शरीर रूपी परिषद् या सभा का सभापति होता है – आत्मा(आत्म चैतन्य) तथा सेवक होते हैं – मन – बुद्धि । आत्मा रूपी स्वामी के निर्देशन में मन – बुद्धि रूपी सेवक जब कार्य करते हैं, तब मनुष्य का जीवन सुचारु रूप से उन्नति की ओर अग्रसर रहता है ।

परन्तु इस वांछित, संतुलित स्थिति के विपरीत जब आत्म – चैतन्य अर्थात स्वामी अनुपस्थित हो जाता है(आत्म – विस्मृति में आत्मा अनुपस्थित ही रहता है) और सेवक रूपी मन – बुद्धि स्वामी की भांति व्यवहार करने लगते हैं, तब मनुष्य जीवन की उन्नति संकट में पड जाती है । अथवा मन – बुद्धि रूपी सेवक इतने अहंकारी हो जाते हैं कि आत्मा रूपी स्वामी के उपस्थित होते हुए भी उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते , तब भी जीवन – उन्नयन बाधित हो जाता है ।

प्रस्तुत कथा में जय – विजय रूपी मन – बुद्धि को भगवान् का पार्षद कहकर यह इंगित किया गया है कि पार्षद रूप में वे अहंकार तथा षड्-विकारों से रहित हैं, इसलिए स्वामी की आज्ञा का सेवक की भांति पालन करते हैं ।

द्वितीय स्वरूप – द्वितीय स्वरूप में जय – विजय रूपी मन – बुद्धि को कामादि षड्- विकारों से रहित होते हुए भी अहंकार नामक विकार से युक्त चित्रित किया गया है ।जय – विजय द्वारा बैंत अडाकर सनकादि को वैकुण्ठनाथ(आत्म – चैतन्य) के समीप जाने से रोकना उनके अहंकार को प्रदर्शित करता है ।साथ ही उनके इस अहंकार को कथा में साक्षात लक्ष्मी जी को रोकने के कथन द्वारा भी संकेतित किया गया है ।जय – विजय की सम्पूर्ण कथा ही मन – बुद्धि में निहित इस अहंकार के परिमार्जन पर केन्द्रित है ।

जय – विजय को 'देवश्रेष्ठ' भी कहा गया है ।देवश्रेष्ठ शब्द से जय – विजय का मन – बुद्धि का प्रतीक होना ही सिद्ध होता है क्योंकि मनुष्य के भीतर ज्ञानेन्द्रियों – कर्मेन्द्रियों के रूप में जितनी शक्तियां काम कर रही हैं, वे देव कहलाती हैं तथा उन शक्तियों में मन – बुद्धि के श्रेष्ठ होने से उन्हें देवश्रेष्ठ कहना उचित ही है ।

३- कथा में कहा गया है कि सनकादि समस्त लोकों के शिरोभाग में स्थित वैकुण्ठधाम में जा पहुंचे जहां आदि – नारायण प्रत्येक समय विराजमान रहते हैं तथा जहां निःश्रेयस् नाम का वन भी है ।समस्त लोकों के शिरोभाग में स्थित वैकुण्ठलोक समस्त योनियों में श्रेष्ठ मनुष्य योनि को इंगित करता है ।

यों तो आत्म – चैतन्य(आत्मा) कण – कण में विद्यमान है, परन्तु मनुष्य योनि में वह आत्म – चैतन्य अपनी अष्टधा प्रकृति(स्थूल – सूक्ष्म शरीर) के माध्यम से चलना – फिरना, सोचना – विचारना आदि सहस्रों क्रियाओं के रूप में हर समय अभिव्यक्त होता है, इसे ही कहानी में आदि नारायण का हर समय

विराजमान होना कहा गया है । निःश्रेयस नामक वन का तात्पर्य है – मनुष्य योनि में ही मोक्ष की सर्वाधिक अथवा एक मात्र सम्भावना का विद्यमान होना ।

४– कथा में कहा गया है कि सनकादि वैकुण्ठलोक की छह डयोढियां पार करके जब सातवीं पर पहुंचे, तब दो देवश्रेष्ठ द्वारपालों ने बैंत अडाकर उन्हें रोक दिया । अतः हरिदर्शन में विघ्न पडने के कारण कुछ – कुछ क्रोध युक्त हुए सनकादि ने द्वारपालों के कल्याणार्थ उन्हें पापयोनियों में जाने का आदेश दिया ।

छह ड्योढियों का अर्थ है – मन – बुद्धि में रहने वाले काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद तथा मत्सर नामक ६ विकार । सनकादि द्वारा ६ ड्योढियां पार करने का अर्थ है – जय – विजय रूपी मन – बुद्धि इन छहों विकारों से मुक्त थे, इसलिए सनकादि रूपी जीव चेतना इनसे बाधित नहीं हुई । सातवीं ड्योढी का अर्थ है – मन – बुद्धि में निहित अहंकार । यह अहंकार ही सनकादि रूपी जीव चेतना के हरि रूपी आत्म – चैतन्य से मिलन में बाधा उपस्थित करता है । पापयोनि में जाने का अर्थ है – अहंकार के परिमार्जन हेतु मन – बुद्धि का काम, क्रोध, लोभ आदि विकारों से युक्त होना ।

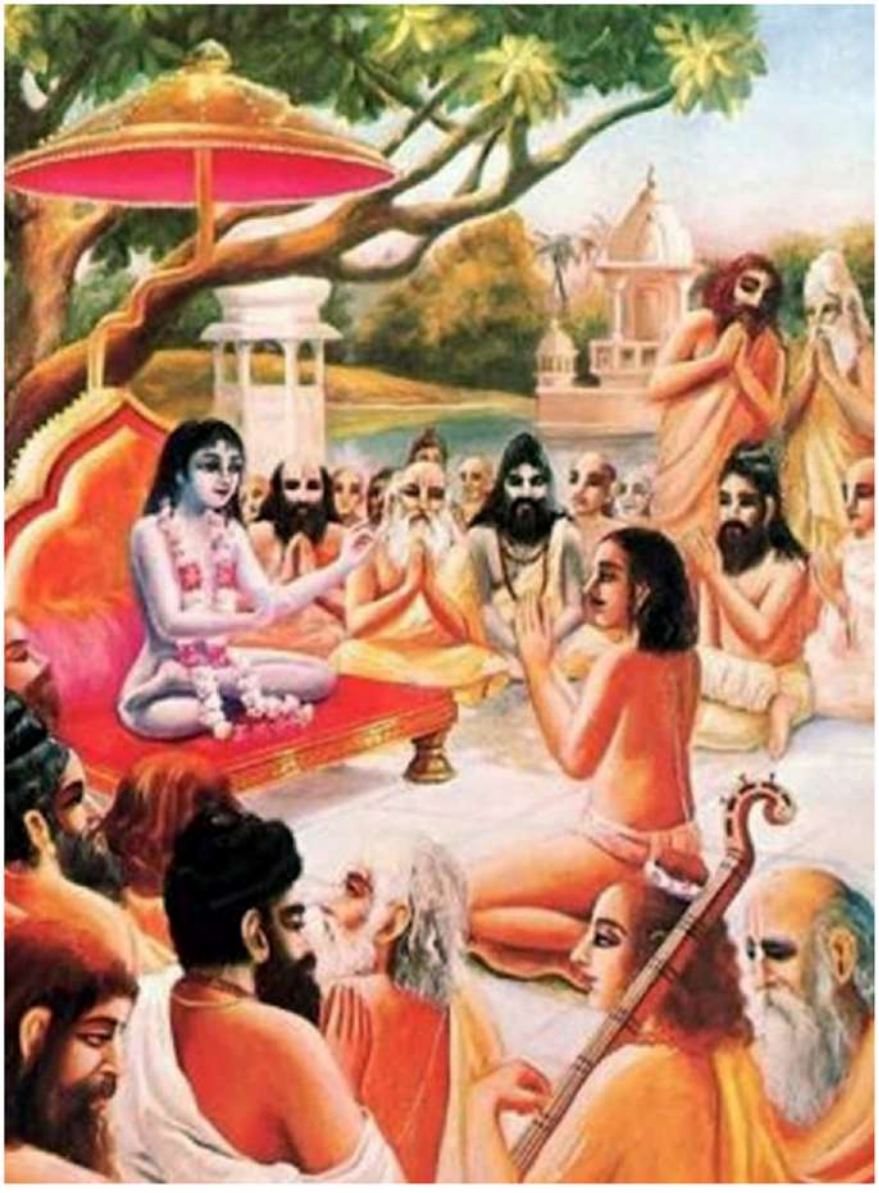

५– कथा में कहा गया है कि जय – विजय ने सनकादि से प्रार्थना की कि अधम योनियों में जाने पर भी हमें भगवत्स्मृति बनी रहे – ऐसी कृपा कीजिए । यहां 'भगवत्स्मृति' शब्द महत्त्वपूर्ण है । मन – बुद्धि के अहंकार का परिमार्जन करने के लिए सनकादि रूपी जीव चेतना जिस अद्भुत तथा विशिष्ट उपाय का आश्रय लेती है, उसमें अहंकार युक्त मन – बुद्धि भगवत्स्मृति द्वारा ही भगवान से जुड पाते हैं । यह बात अलग है कि यह भगवत्स्मृति प्रेमवश नहीं, अपितु भय, क्रोध अथवा द्वेषवश ही होती है । इस भगवत्स्मृति से ही अहंकार युक्त मन – बुद्धि की उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है, अन्यथा उनके कल्याण का कोई उपाय ही नहीं है ।

६– कथा में कहा गया है कि स्वयं श्रीहरि ने भी सनकादि से प्रार्थना की कि उनके अनुचरों – जय – विजय का निर्वासन काल शीघ्र समाप्त हो जाए तथा वे शीघ्र पापमुक्त होकर उनके पास आ जाएं ।

मनुष्य का आत्मा भी चाहता है कि मन – बुद्धि अहंकार आदि से मुक्त होकर पूर्णतः शुद्ध हों क्योंकि मन – बुद्धि की अशुद्धता के कारण आत्म – चैतन्य अपनी सम्पूर्णता में अभिव्यक्त नहीं हो पाता । मनुष्य के भीतर विद्यमान आत्म चैतन्य अद्भुत क्षमता वाला है । उस क्षमता का सम्यक प्रकटीकरण उत्तम, शुद्ध मन – बुद्धि के माध्यम से ही सम्भव है ।

इस प्रकार प्रस्तुत कथा के माध्यम से भागवतकार ने शुद्ध मन – बुद्धि की पार्षदरूपता, अहंकार के उद्भव से उसकी विकृतता तथा आत्म साक्षात्कार में उसकी बाधकता, जीव चेतना द्वारा उसका कल्याण सम्पादन तथा अहंकार से मुक्त होने पर आत्म चैतन्य द्वारा पुनः पार्षदरूपता की प्राप्ति का आश्वासन आदि विषयों को सुन्दरता से एक ही कथा में निबद्ध कर दिया है ।

भगवान विष्णुजी और माँ लक्ष्मीजी के साथ मृत्युलोक भ्रमण की कथा

परमेश्वर के तीन मुख्य स्वरूपों में से एक भगवान विष्णुजी का नाम स्वयं ही धन की देवी माँ लक्ष्मीजी के साथ लिया जाता है, शास्त्रों में कथाओं के अनुसार माँ लक्ष्मीजी हिन्दू धर्म में धन, सम्पदा, शान्ति, सौभाग्य और समृद्धि की देवी मानी जाती हैं।

माता लक्ष्मीजी भगवान श्री विष्णुजी की अर्धांगिनी हैं. सुख व समृद्धि की प्रतीक माँ लक्ष्मी व भगवान विष्णुजी को युगों-युगों से एक साथ ही देखा गया है, यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में धन का वास चाहता है, तो हमेशा ही मां लक्ष्मी के साथ भगवान विष्णु की आराधना अवश्य करे. इन दोनों का रिश्ता काफी शुद्ध व सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

परंतु ऐसा क्या हुआ था? जो लक्ष्मीजी के कारण भगवान विष्णुजी की आंखें भर आईं? एक कथा के अनुसार लक्ष्मीजी की किस बात से विष्णु जी इतने निराश हो गयें, एक बार भगवान विष्णुजी शेषनाग पर बैठे-बैठे उदास हो गयें और धरती पर जाने का विचार बनाया, धरती पर जाने का मन बनाते ही विष्णुजी जाने की तैयारियों में लग गये।

अपने स्वामी को तैयार होता देख कर लक्ष्मीजी ने उनसे पूछा- स्वामी, आप कहां जाने की तैयारी में लगे हैं? जिसके उत्तर में विष्णुजी ने कहा, हे देवी! मैं धरती लोक पर घूमने जा रहा हूँ, यह सुन माता लक्ष्मीजी का भी धरती पर जाने का मन हुआ और उन्होंने श्रीहरि से इसकी आज्ञा माँगी।

लक्ष्मीजी द्वारा प्रार्थना करने पर भगवान विष्णुजी बोले आप मेरे साथ चल सकती हो, लेकिन एक शर्त पर, तुम धरती पर पहुँच कर उत्तर दिशा की ओर बिलकुल मत देखना, तभी मैं तुम्हें अपने साथ लेकर जाऊंगा. यह सुनते ही माता लक्ष्मीजी ने तुरंत हाँ कह दिया और विष्णुजी के साथ धरती लोक जाने के लिए तैयार हो गयीं।

माता लक्ष्मीजी और भगवान विष्णुजी सुबह-सुबह धरती पर पहुँच गए. जब वे पहुंचे तब सूर्य देवता उदय हो ही रहें थे, कुछ दिनों पहले ही बरसात हुयी थी, इसलिये धरती पर चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी, धरती बेहद सुन्दर दिख रही थी, अतः माँ लक्ष्मीजी मन्त्र मुग्ध हो कर धरती के चारों ओर देख रही थीं, माँ लक्ष्मीजी भूल गयीं कि पति को क्या वचन दे कर साथ आई हैं।

अपनी नजर घुमाते हुए उन्होंने कब उत्तर दिशा की ओर देखा उन्हें पता ही नहीं चला? मन ही मन में मुग्ध हुई माता लक्ष्मीजी ने जब उत्तर दिशा की ओर देखा तो उन्हें एक सुन्दर बागीचा नजर आया. उस ओर से भीनी-भीनी खुशबू आ रही थी. बागीचे में बहुत ही सुन्दर-सुन्दर फूल खिले थे. फूलों को देखते ही मां लक्ष्मी बिना सोचे समझे उस खेत में चली गईं और एक सुंदर सा फूल तोड़ लायीं।

फूल तोड़ने के पश्चात जैसे ही माँ लक्ष्मीजी भगवान विष्णुजी के पास वापस लौट कर आयीं तब भगवान विष्णुजी की आँखों में आँसू थे. माँ लक्ष्मीजी के हाथ में फूल देख विष्णुजी बोले, कभी भी किसी से बिना पूछे उसका कुछ भी नहीं लेना चाहियें, और साथ ही माँ लक्ष्मीजी को विष्णुजी को दिया हुआ वचन भी याद दिलाया, और फिर भगवान विष्णुजी जी ने दी माँ लक्ष्मीजी को सजा।

माँ लक्ष्मीजी को अपनी भूल का जब आभास हुआ तो उन्होंने भगवानक्ष विष्णुजी से इस भूल की क्षमा मांगी, विष्णुजी ने कहा कि आपने जो भूल की है उस की सजा तो आपको अवश्य मिलेगी? जिस माली के खेत से आपने बिना पूछे फूल तोड़ा है, यह एक प्रकार की चोरी है, इसीलिये अब आप तीन वर्षों तक माली के घर नौकर बन कर रहो, उस के बाद मैं आपको बैकुण्ठ में वापस बुलाऊँगा। भगवान विष्णुजी का आदेश माता लक्ष्मीजी ने चुपचाप सर झुका कर मान स्वीकार किया, जिसके बाद माँ लक्ष्मीजी ने एक गरीब औरत का रूप धारण किया और उस खेत के मालिक के घर गयीं, माधव नाम के उस माली का एक झोपड़ा था जहां माधव पत्नी, दो बेटे और तीन बेटियों के साथ रहता था, माता लक्ष्मीजी जब एक साधारण औरत बन कर माधव के झोपड़े पर पधारी, तो माधव ने पूछा- बहन आप कौन हो?

तब मां लक्ष्मी ने कहा- मैं एक गरीब औरत हूं, मेरी देखभाल करने वाला कोई नहीं, मैंने कई दिनों से खाना भी नहीं खाया, मुझे कोई भी काम दे दो. मैं तुम्हारे घर का काम कर लिया करूँगी और इसके बदले में आप मुझे अपने घर के एक कोने में आसरा दे देना, माधव बहुत ही अच्छे दिल का मालिक था, उसे दया आ गयीं, लेकिन उस ने कहा, बहन मैं तो बहुत ही गरीब हूं, मेरी कमाई से मेरे घर का खर्च काफी कठिनाई से चलता है।

लेकिन अगर मेरी तीन बेटियां है उसकी जगह अगर चार बेटियां होतीं तो भी मुझे गुजारा करना था, अगर तुम मेरी बेटी बन कर और जैसा रूखा-सूखा हम खाते हैं उसमें खुश रह सकती हो तो बेटी अन्दर आ जाओ।

माधव ने माँ लक्ष्मीजी को अपने झोपड़े में शरण दी, और माँ लक्ष्मीजी तीन साल तक उस माधव के घर पर नौकरानी बन कर रहीं, कथा के अनुसार कहा जाता है कि जिस दिन माँ लक्ष्मीजी माधव के घर आईं थी, उसके दूसरे दिन ही माधव को फूलों से इतनी आमदनी हुई कि शाम को उसने एक गाय खरीद ली।

फिर धीरे-धीरे माधव ने जमीन खरीद ली और सबने अच्छे-अच्छे कपड़े भी बनवा लियें, कुछ समय बाद माधव ने एक बडा पक्का घर भी बनवा लिया, माधव हमेशा सोचता था कि मुझे यह सब इस महिला के आने के बाद मिला है, इस बेटी के रूप में मेरी किस्मत आ गई है।

एक दिन माधव जब अपने खेतों से काम खत्म करके घर आया, तो उसने अपने घर के द्वार पर गहनों से लदी एक देवी स्वरूप औरत को देखा, जब निकट गया तो उसे आभास हुआ कि यह तो मेरी मुंहबोली चौथी बेटी यानि वही औरत है, कुछ समय के बाद वह समझ गया कि यह देवी कोई और नहीं बल्कि स्वयं माँ लक्ष्मीजी हैं, यह जानकर माधव बोला- हे माँ हमें क्षमा करें, हमने आपसे अनजाने में ही घर और खेत में काम करवाया, हे माँ यह हमसे कैसा अपराध हो गया, हे माँ हम सब को माफ कर दे।

यह सुन माँ लक्ष्मीजी मुस्कुराईं और बोलीं- हे माधव तुम बहुत ही अच्छे और दयालु व्यक्ति हो, तुमने मुझे अपनी बेटी की तरह रखा, अपने परिवार का सदस्य बनाया, इसके बदले मैं तुम्हें वरदान देती हूँ, कि तुम्हारे पास कभी भी खुशियों की और धन की कमी नहीं रहेगी, तुम्हें सारे सुख मिलेंगे जिसके तुम हकदार हो. इसके पश्चात माँ लक्ष्मीजी अपने स्वामी श्री हरि के द्वारा भेजे रथ में बैठकर वैकुण्ठ चली गयीं, हे माँ मेरी नम्र विनंती है कि जैसे माधव पर कृपा दृष्टि रखी, वैसी ही कृपा दृष्टि हमारे समाज और देश पर रखना।

जय श्री लक्ष्मी माँ!

हमारे देश के आठ पूजनीय पवित्र पर्वत?

भारत के आठ पवित्र पर्वत आज हम आपको भारत के उन पर्वतों के बारे में बता रहे हैं, जो बहुत ही पवित्र हैं तथा जिन पर देवताओं का वास माना जाता है। हिंदू धर्म को मानने वाले इन पर्वतों की पूजा करते हैं और भगवान के समान ही मानते हैं। इनमें से हर पर्वत से जुड़ी कुछ खास मान्यताएं भी हैं।

भारत के इन पवित्र पर्वतों तथा इनसे जुड़ी मान्यताओं की जानकारी इस प्रकार हैं–

हिमालय पर्वत :– हिमालय भारत के सबसे पवित्र पर्वतों में से एक है। हिमालय की श्रृंखलाओं में अनेक धार्मिक स्थल भी हैं। इनमें हरिद्वार, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गोमुख, देव प्रयाग, ऋषिकेश, कैलाश मानसरोवर तथा अमरनाथ प्रमुख हैं।

भारतीय ग्रंथ गीता में भी इसका उल्लेख मिलता है। महाभारत के अनुसार पांडव इसी पर्वत को पार कर स्वर्ग गए थे। पुराणों में इसे पार्वतीजी का पिता कहा गया है। पुराणों के अनुसार गंगा और पार्वती इनकी दो पुत्रियां हैं और मैनाक, सप्तश्रृंग आदि सौ पुत्र हैं।

भौगोलिक दृष्टि से हिमालय एक पर्वत तंत्र है, जो भारतीय उपमहाद्वीप को मध्य एशिया और तिब्बत से अलग करता है। यह पर्वत तंत्र मुख्य रूप से तीन समानांतर श्रेणियों– महान हिमालय, मध्य हिमालय और शिवालिक से मिलकर बना है जो पश्चिम से पूर्व की ओर एक चाप की आकृति में लगभग 2500 किमी की लंबाई में फैली हैं।

हिमालय पर्वत पांच देशों की सीमाओं में फैला है। ये देश हैं– पाकिस्तान, भारत, नेपाल, भूटान और चीन। हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम बन्दरपुंछ है। यह चोटी उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल जिले में स्थित है। इसकी ऊंचाई 20,731 फुट है। इसे सुमेरु भी कहते हैं।

विंध्याचल पर्वत :– यह भारत के पवित्र पर्वतों में से एक है। विंध्याचल पर्वत श्रृंखला भारत के पश्चिम–मध्य में स्थित प्राचीन गोलाकार पर्वतों की श्रृंखला है जो भारत उपखंड को उत्तरी भारत व दक्षिणी भारत में बांटती है। इस श्रृंखला का पश्चिमी अंत गुजरात में पूर्व में वर्तमान राजस्थान व मध्य प्रदेश की सीमाओं के नजदीक है। यह श्रृंखला भारत के मध्य से होते हुए पूर्व व उत्तर से होते हुए मिजार्पुर में गंगा नदी तक जाती है।

पुराणों के अनुसार इस पर्वत ने सुमेरू से ईर्ष्या रखने के कारण सूर्यदेव का मार्ग रोक दिया था और आकाश तक बढ़ गया था, जिसे अगस्त्य ऋषि ने नीचे किया। यह शरभंग, अगस्त्य इत्यादि अनेक श्रेष्ठ ऋषियों की तपोस्थली रहा है। हिमाचल के समान इसका भी धर्मग्रंथों एवं पुराणों में विस्तृत उल्लेख मिलता है।

माउंट आबू :– माउंट आबू राजस्थान का एकमात्र पहाड़ी नगर है। सिरोही जिले में स्थित नीलगिरि की पहाडि ों की सबसे ऊंची चोटी पर बसे माउंट आबू की भौगोलिक स्थिति और वातावरण राजस्थान के अन्य शहरों से बहुत अलग है। यह समुद्र तल से 1220 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। माउंट आबू हिंदू और जैन धर्म का प्रमुख तीर्थस्थल है। यहां के ऐतिहासिक मंदिर और प्राकृतिक खूबसूरती सैलानियों को अपनी ओर खींचती है।

माउंट आबू प्राचीन काल से ही साधु संतों का निवास स्थान रहा है। पौराणिक कथाओं के अनुसार हिंदू धर्म के तैंतीस करोड़ देवी–देवता इस पर्वत पर भ्रमण करते हैं। जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर भी यहां आए थे। उसके बाद से माउंट आबू जैन अनुयायियों के लिए एक पवित्र और पूजनीय तीर्थस्थल बना हुआ है। माउंट आबू में ही दुनिया का इकलौता ऐसा मंदिर है जहाँ शिवजी के पैर के अंगूठे की पूजा होती है।

गोवर्धन पर्वत :– गोवर्धन उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में स्थित एक पवित्र पर्वत है। यह भगवान श्रीकृष्ण की लीलास्थली है। यहीं पर भगवान श्रीकृष्ण ने द्वापर युग में ब्रजवासियों को इन्द्र के प्रकोप से बचाने के लिये गोवर्धन पर्वत अपनी तर्जनी अंगुली पर उठाया था। गोवर्धन पर्वत को भक्तजन गिरिराजजी भी कहते हैं। यहां दूर–दूर से भक्तजन गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा करने आते हैं। यह परिक्रमा लगभग 21 किलोमीटर की है।

यहां लोग दण्डौती परिक्रमा करते हैं। दण्डौती परिक्रमा इस प्रकार की जाती है कि आगे हाथ फैलाकर जमीन पर लेट जाते हैं और जहां तक हाथ फैलते हैं, वहां तक लकीर खींचकर फिर उसके

आगे लेटते हैं। इसी प्रकार लेटते-लेटते या साष्टांग दण्डवत करते-करते परिक्रमा करते हैं, जो एक सप्ताह से लेकर दो सप्ताह में पूरी होती है। परिक्रमा जहां से शुरू होती है वहीं एक प्रसिद्ध मंदिर भी है, जिसे दानघाटी मंदिर कहा जाता है ।

कैलाश पर्वत :- कैलाश पर्वत तिब्बत में स्थित एक पर्वत श्रेणी है। इसके पश्चिम तथा दक्षिण में मानसरोवर तथा रक्षातल झील हैं। यहां से कई महत्वपूर्ण नदियां निकलतीं हैं झ ब्रह्मपुत्र, सिन्धु, सतलुज इत्यादि। हिंदू धर्म में इस पर्वत को बहुत ही पवित्र माना गया है। इस पर्वत को गणपर्वत और रजतगिरि भी कहते हैं। पुराणों के अनुसार भगवान अनेक देवताओं, राक्षसों व ऋषियों ने इस पर्वत पर तप किया है। जनश्रुति है कि आदि शंकराचार्य ने इसी पर्वत के आसपास शरीर त्यागा था।

जैन धर्म में भी इस पर्वत का विशेष महत्व है। वे कैलाश को अष्टापद कहते हैं। कहा जाता है कि प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव ने यहीं निर्वाण प्राप्त किया था। इसे पृथ्वी स्थित स्वर्ग कहा गया है। कैलाश पर्वतमाला कश्मीर से लेकर भूटान तक फैली हुई है और ल्हा चू और झोंग चू के बीच कैलाश पर्वत है जिसके उत्तरी शिखर का नाम कैलाश है। इस शिखर की आकृति विराट शिवलिंग की तरह है।

चामुंडा पहाड़ी :- चामुंडा पहाड़ी मैसूर का एक प्रमुख पर्यटक स्थल है। यह मैसूर से लगभग 13 किमी दक्षिण में स्थित है। इस पहाड़ी की चोटी पर चामुंडेश्वरी मंदिर है, जो देवी दुर्गा को समर्पित है। यह मंदिर देवी दुर्गा की राक्षस महिषासुर पर विजय का प्रतीक है। मंदिर मुख्य गर्भगृह में स्थापित देवी की प्रतिमा शुद्ध सोने की बनी हुई है। इस मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में किया गया था।

मंदिर की इमारत सात मंजिला है जिसकी ऊंचाई 40 मी. है। मुख्य मंदिर के पीछे महाबलेश्वर को समर्पित एक छोटा सा मंदिर भी है जो 1000 साल से भी ज्यादा पुराना है। पहाड़ की चोटी से मैसूर का मनोरम दृश्य दिखाई पड़ता है। मंदिर के पास ही महिषासुर की विशाल प्रतिमा रखी हुई है।

गब्बर पर्वत :- गब्बर पर्वत भारत के गुजरात में

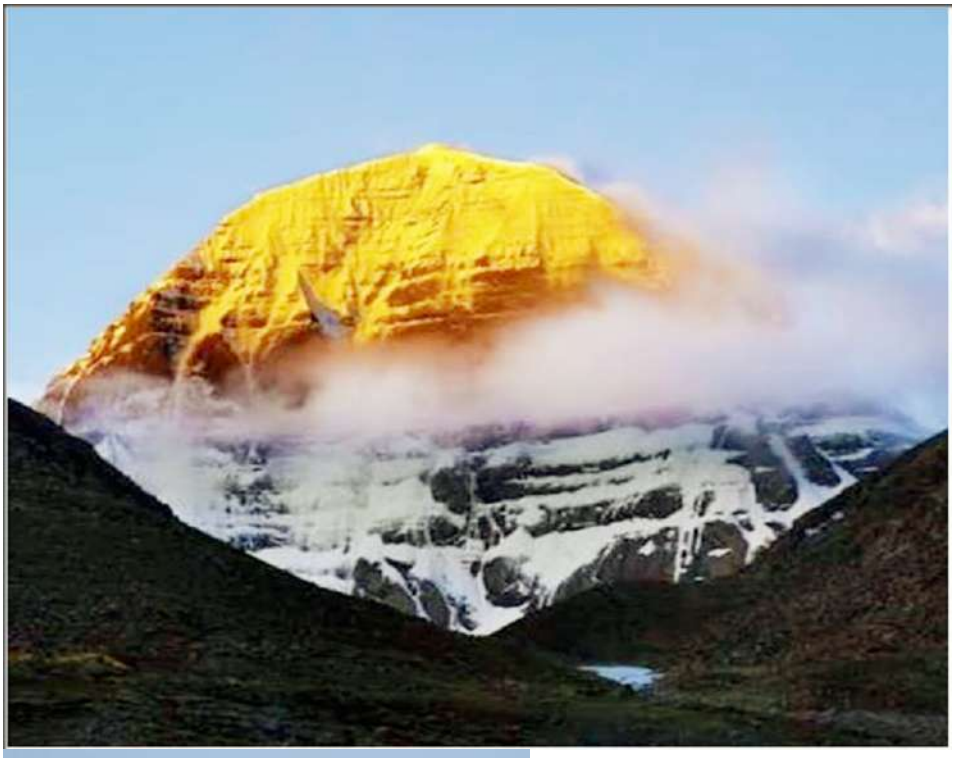

बनासकांठा जिला स्थित एक छोटा सा पहाड़ी टीला है। यह प्रसिद्ध तीर्थ अम्बाजी से मात्र 5 कि.मी की दूरी पर गुजरात एवं राजस्थान की सीमा पर स्थित है। यहीं से अरासुर पर्वत पर अरावली पर्वत से दक्षिण पश्चिम दिशा में पवित्र वैदिक नदी सरस्वती का उद्गम भी होता है।

यह प्राचीन पौराणिक 51 शक्तिपीठों में से एक गिना जाता है। पुराणों के अनुसार यहां सती शव का हृदय भाग गिरा था। इसका वर्णन तंत्र चूड़ामणि में भी मिलता है। मंदिर तक पहुंचने के लिये पहाड़ी पर 999 सीढियां चढ़नी पड़ती हैं। पहाड़ी के ऊपर से सूर्यास्त देखने के अनुभव भी बेहतरीन होता है।

पारसनाथ पहाड़ी :- पारसनाथ पहाड़ी झारखंड राज्य के बोकारो शहर में स्थित है। बोकारो में कई पर्यटन स्थल हैं, जिनमें से पारसनाथ पहाड़ी भी एक है। झारखंड राज्य की यह सबसे ऊंची पहाड़ी है। गिरिडीह स्थित इस पहाड़ी की ऊंचाई लगभग 4,440 फीट है। ये पूरी पहाड़ी जंगल से घिरी हुई है। इस पहाड़ पर जैन धर्म का सबसे प्रमुख धार्मिक स्थल है।

पहाड़ के शिखर पर जैन धर्म के 20 तीर्थंकरों के चरण चिह्न अंकित हैं। इस पहाड़ी को सम्मेद शिखर कहा जाता है। तीर्थंकरों के चरण चिह्नों को टोंक कहा जाता है। मान्यता है कि यहां जैनियों के 20वें से 24वें तीर्थंकरों ने निर्वाण प्राप्त किया था। यहां जैन धर्म के श्वेतांबर और दिगंबर दोनों ही पंथों के मंदिर बने हुए हैं। यह स्थान मधुबन के नाम से भी विख्यात है।

क्या आप जानते हैं,

आपको गलत इतिहास पढ़ाया गया है..??

देश के स्वाधीन होने के बाद से ही वामपंथी इतिहासकारों ने धर्मनिरपेक्षता के नाम पर भारत के स्वर्णिम इतिहास को विकृत करना शुरू कर दिया था। गयासुद्दीन गाजी के पोते जवाहरलाल नेहरू ने स्वयं अपनी पुस्तक 'भारत की खोज' में महाराणा प्रताप की अपेक्षा अकबर को महान सिद्ध करने का प्रयास किया था।

स्वाधीनता संग्राम में अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले हजारों क्रांतिकारियों की घोर उपेक्षा ही नही की गयी, अपितु उन्हें आतंकवादी और सिरफिरा सिद्ध करने के प्रयास किये गये। उन राष्ट्रभक्तों को इतिहास में उपयुक्त स्थान ही नही दिया गया।

पूरे देश में :-

साबरमती के संत तूने कर दिया कटमाल,
दे दी तूने आजादी बिना खड़ग बिना ढाल।

जैसे गीतों का प्रचार कर यही सिद्ध कराने का प्रयास किया गया कि देश को स्वाधीनता बिना खून का एक भी कतरा भी बहाए गांधी जी तथा कांग्रेस के अहिंसात्मक आंदोलन तथा चरखे के कारण मिली है। आजादी के बाद भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में कांग्रेस के कार्यों को महिमामंडित करने के लिए सरकारी स्तर पर एक इतिहास लेखन की योजना बनी।

यह कार्य भारत के सुप्रसिद्ध इतिहासकार डा. आर सी मजूमदार को दिया गया। इतिहास लेखन की प्रक्रिया के बीच में जब पं. नेहरू को जानकारी मिली कि इसमें सुभाष चन्द्र बोस को महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है तो तत्काल डा. मजूमदार से यह योजना छीन ली गई तथा यह कार्य डा. ताराचन्द को दिया गया, जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रहे थे तथा हिन्दुत्व विरोधी स्वभाव के कारण उन्हें वहां के छात्र मियां ताराचन्द भी कहते थे।

स्वाभाविक है कि उनके लेखन में हिन्दू विरोध तथा मुस्लिम शासकों की महिमा एवं गुणगान को महत्व मिला।

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने सन 1971 में कांग्रेस के विभाजन के पश्चात कम्युनिस्टों से समझौता किया और कट्टर वामपंथी विचारधारा वाले डा. नूरूल हसन को केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री का पद सौंपा।

डा. हसन ने तुरंत कांग्रेस सरकार को ढाल बनाकर प्राचीन हिन्दू इतिहास तथा पाठय पुस्तकों के विकृतिकरण का बीड़ा उठा लिया। वामपंथी इतिहासकारों लेखकों को एकत्रित कर वे इस कार्य में जुट गये। ये सभी नकली इतिहासकार अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की उपज थे तथा घोर हिन्दू धर्मविरोधी थे।

तमाम शिक्षण अकादमियों में कम्युनिस्ट भर दिये गये। इसका नतीजा ये हुआ कि इन सभी ने भारत का पूरा इतिहास ही कम्युनिस्ट शैली में लिख डालने की साजिश बना डाली।

सन 1972 में इन सेकुलरवादियों ने भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद का गठन कर इतिहास पुनर्लेखन की घोषणा की। सुविख्यात इतिहासकार यदुनाथ सरकार, रमेश चंद्र मजूमदार तथा श्री जीएस सरदेसाई जैसे सुप्रतिष्ठित इतिहासकारों के लिखे ग्रंथों को नकार कर नये सिरे से इतिहास लेखन का कार्य शुरू कराया गया।

घोषणा की गई कि इतिहास और पाठ्यपुस्तकों से वे अंश हटा दिये जाएंगे जो राष्ट्रीय एकता में बाधा डालने वाले और मुसलमानों की भावना को ठेस पहुँचाने वाले लगते हैं।

डा. नूरूल हसन ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में भाषण करते हुए कहा- महमूद गजनवी औरंगजेब आदि मुस्लिम शासकों द्वारा हिन्दुओं के नरसंहार एवं मंदिरों को तोड़ने के प्रसंग राष्ट्रीय एकता में बाधक है अतः उन्हें नही पढ़ाया जाना चाहिए।

वामपंथियों ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महान सेनानी स्वातंत्रवीर सावरकर पर अंग्रेजों से क्षमा मांगकर अण्डमान के काला पानी जेल से रिहा होने जैसे निराधार आरोप लगाये और उन्हें वीर की जगह कायर बताने की धृष्टता की।

इतिहास लेखकों के ऊपर कोई सेंसर बोर्ड नहीं है, ये जो चाहे लिख सकते हैं, और हम तथा हमारे बच्चे इनके लिखे हुए विकृत और असत्य लेखों को दिमाग की बत्ती बंद करके पढते रहते हैं, जब हम इनको पढते रहते हैं, तब हमारा सरोकार सिर्फ इतना रहता है कि बस इसका रट्टा मारो और परीक्षा के दौरान कॉपी पर छाप दो जिससे अच्छे नम्बर आ जाएँ, लेकिन हम ये भूल जाते हैं, हम जो पढते हैं,उसकी छवियाँ और दृश्य साथ साथ दिमाग में घर बनाते

रहते हैं, जिसका नतीजा ये होता है कि अगर इन्होंने राम और महाभारत को काल्पनिक लिख दिया तो हम भी उसे काल्पनिक मानकर अपनी ही संस्कृति और परम्पराओं से घृणास्पद दूरी बना लेते हैं, और यही इन किराये के टट्टुओं का मकसद रहता है।

इन विधर्मी और गद्दार लेखकों द्वारा देश के इतिहास के सम्बन्ध में जो विकृत लेख लिखे गए हैं, उसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत है:-

वैदिक काल में विशिष्ट अतिथियों के लिए गोमांस का परोसा जाना सम्मान सूचक माना जाता था। (कक्षा 6-प्राचीन भारत, पृष्ठ35, लेखिका-रोमिला थापर)

महमूद गजनवी ने मूर्तियों को तोड़ा और इससे वहधार्मिक नेता बन गया। (कक्षा 7-मध्यकालीन भारत, पृष्ठ28)

1857 का स्वतंत्रता संग्राम एक सैनिक विद्रोह था। (कक्षा 8-सामाजिक विज्ञान भाग-1, आधुनिक भारत, पृष्ठ166, लेखक-अर्जुन देव, इन्दिरा अर्जुन देव)

महावीर 12 वर्षों तक जहां-तहां भटकते रहे। 12 वर्ष की लम्बी यात्रा के दौरान उन्होंने एक बार भी अपने

वस्त्र नहीं बदले। 42 वर्ष की आयु में उन्होंने वस्त्र का एकदम त्याग कर दिया। (कक्षा 11, प्राचीन भारत, पृष्ठ 101, लेखक-रामशरण शर्मा)

तीर्थंकर, जो अधिकतर मध्य गंगा के मैदान में उत्पन्न हुए और जिन्होंने बिहार में निर्वाण प्राप्त किया, की मिथक कथा जैन सम्प्रदाय की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए गढ़ ली गई। (कक्षा 11-प्राचीन भारत, पृष्ठ 101, लेखक-रामशरण शर्मा)

जाटों ने, गरीब हो या धनी, जागीरदार हो या किसान, हिन्दू हो या मुसलमान, सबको लूटा।

(कक्षा 12 - आधुनिक भारत, पृष्ठ 18-19, विपिन चन्द्र)

रणजीत सिंह अपने सिंहासन से उतरकर मुसलमान फकीरों के पैरों की धूल अपनी लम्बी सफेद दाढ़ी से झाड़ता था। (कक्षा 12 -पृष्ठ 20, विपिन चन्द्र)

आर्य समाज ने हिन्दुओं, मुसलमानों, पारसियों, सिखों और ईसाइयों के बीच पनप रही राष्ट्रीय एकता को भंग करने का प्रयास किया।

(कक्षा 12-आधुनिक भारत, पृष्ठ 183, लेखक-विपिन चन्द्र)

तिलक, अरविन्द घोष, विपिनचन्द्र पाल और लाला लाजपतराय जैसे नेता उग्रवादी तथा आतंकवादी थे।

(कक्षा 12-आधुनिक भारत-विपिन चन्द्र, पृष्ठ 208)

400 वर्ष ईसा पूर्व अयोध्या का कोई अस्तित्व नहीं था। महाभारत और रामायण कल्पित महाकाव्य हैं।(कक्षा 11, पृष्ठ 107, मध्यकालीन इतिहास, आर.एस.शर्मा)

वीर पृथ्वीराज चौहान मैदान छोड़कर भाग गया और गद्दार जयचन्द गोरी के खिलाफ युद्धभूमि मेंलड़ते हुए मारा गया।

(कक्षा 11, मध्यकालीन भारत, प्रो. सतीशचन्द्र)

औरंगजेब एक महान जिन्दा पीर थे।

(मध्यकालीन भारत, पृष्ठ 316, लेखक-प्रो.सतीश चन्द्र)

राम और कृष्ण का कोई अस्तित्व ही नहीं था। वे केवल काल्पनिक कहानियां हैं।

(मध्यकालीन भारत, पृष्ठ 245, रोमिला थापर)

(ऐसी और भी बहुत सी आपत्तिजनक बाते आपको एन.सी.आर.टी. की किताबों में पढ़ने को मिल जायेंगी)

दिल्ली विश्वविद्यालय के बी.ए. आनर्स (द्वितीय वर्ष) में इतिहास की पाठ्य-पुस्तक "कल्चर इन एंशियट इण्डिया" पढ़ाई जा रही है। इसमें रावण को गर्भवती दिखाया गया है तथा उसके छींक मारने से सीता का जन्म बताया है। पुस्तक में सीता को रावण की पुत्री बताया है।

हनुमान को एक छोटा सा बन्दर बतलाया तथा उन्हें एक कामुक व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। रोमिला थापर जैसी लेखकों ने मुसलमानों द्वारा धर्म के नाम पर काफि र हिन्दुओं के ऊपर किये गये भयानक अत्याचारों को गायब कर दिया है।

इनलोगों ने झूठा इतिहास लिखकर एकसमुदाय की हिंसक मानसिकता पर जानबूझकर पर्दा डाला है. इन भयानक अत्याचारों को अनेकता में एकता और धार्मिक सहिष्णुता बताकर नौजवान पीढ़ी को धोखा दिया जा रहा है।

उन्हें अंधकारमें रखा जा रहा है। भविष्य में इसका परिणाम बहुत खतरनाक होगा क्योकि नयी पीढ़ी ऐसे समुदाय की वास्तविक मानसिकता न जानने के कारण उनसे असावधान रहेगी और खतरे में पड़ जायेगी। सोचने का विषय है कि आखिर किसके दबाव में सत्य को छिपाया अथवा तोड़ मरोड़ कर पेश किया जा रहा है????

वामपंथी इतिहासकारों की दृष्टि में छठीं कक्षा के बच्चों को यह पढ़ाना बहुत आवश्यक लगता है कि आर्य बाहर से आये थे और वैदिककाल में गोमांस खाया जाता था जबकि वैदिक साहित्य में गौ को "अघन्या' कहा गया है। इन्होंने मुगल शासक अकबर, औरंगजेब आदि आक्रमणकारियों को विशुद्ध राष्ट्रवादी बताकर पहली श्रेणी में रखा तथा महाराणा प्रताप, शिवाजी जैसे देश के रक्षकों को बहुत सीमित अर्थों में राष्ट्रवादी कहकर दूसरी श्रेणी में रखा। अकबर ने अपने शासनकाल में कुछ सुधार किए थे। परन्तु केवल इस कारण ही उसे 'महान शासक' नहीं कहा जा सकता। कुछ आधुनिक मुस्लिम इतिहासकारों के एक वर्ग ने मुगल साम्राज्य की सफलताओं को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया, परन्तु साथ ही उन्होंने मुगल शासकों की असफलताओं, कमियों तथा हिन्दुओं पर किये गये अमानुषिक अत्याचारों द्वारा धर्मान्तरण को बिल्कुल छिपा लिया।

अराष्ट्रीय मुगल शासक मूलतः विदेशी थे। अत्यधिक शराबी तथा व्यसनी बाबर, मुगलों का प्रथम शासक असल में एक लुटेरा था। न उसे कभी भारत से लगाव था और न ही यहां के लोगों से। उसे तो भारत के मुसलमान भी नहीं चाहते थे।

उससे तो अत्यन्त श्रेष्ठ हसन खां मेवाती था जिसने स्वेदश की रक्षा के लिए राणा सांगा की सेना में भाग लिया था और अपने पुत्र नाहर खां को बाबर द्वारा बन्धक बना लिए जाने के बाद भी देश से गद्दारी नहीं क ी।

इसी तरह बाबर के अफीमची पुत्र हुमांयू को भारत से किंचित मात्र भी लगाव नहीं था। वह छोटी- मोटी विजय के पश्चात जश्न,दावतों तथा विलासिता में डूब जाता था और बार-बार ईरान की ओर भागता था।

मुगलों का तीसरा साम्राज्यवादी शासक अकबर था। स्मिथ के अनुसार उसमें राष्ट्रीयता की एक बूंद तक नहीं थी। वह अफीम मिली शराब का व्यसनी था तथा उसके नशे में धुत रहता था। अबुल फजल के अनुसार उसके हरम में 3000 महिलाएं थीं।

साम्राज्य के विस्तार में वह तैमूर लंग की भांति नृशंस हत्याएँ, क्रूरता तथा छल-कपट में जरा भी नहीं हिचकता था। विशेषकर हेमचन्द्र विक्रमादित्य, महारानी दुर्गावती तथा महाराणा प्रताप के साथ संघर्ष उसके कलंकित चरित्र को सामने लाते हैं।

विचारणीय व गंभीर प्रश्न यह है कि भारतीय राष्ट्रीयता का प्रतीक साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षी अकबर है या देशाभिमान पर शहीद होने वाली रानी दुर्गावती, अथवा भारतीय स्वतंत्रता के लिए मर मिटने वाले हेमचन्द्र विक्रमादित्य या देश की आजादी के लिए जंगलों में भटकने वाले महाराणा प्रताप।

क्या भारत का राष्ट्रीय पुरुष अकबर है जो छल-कपट तथा दूसरों पर आक्रमण कर उसे जीत लेने के पागलपन से युक्त था या हेमू जैसा साहसी व्यक्ति, जिसने विदेशी शासन को देश से उखाड़ फेंकने तथा दिल्ली पर स्वदेशी शासन पुनः स्थापित करने का प्रयत्न किया?

क्या राष्ट्र का प्रतिनिधि गोंडवाना की रानी पर अकारण आक्रमण करने वाला अकबर है या शत्रु द्वारा पकड़े जाने व अपमानि होने की आशंका के स्वयं छुरा घोंप कर बलिदान देने वाली रानी?

क्या राष्ट्र का प्रेरक चित्तौड़ में 30,000 हिन्दुओं का

नरसंहार करने वाला अकबर है या महाराणा प्रताप का संघर्षमय जीवन, जिन्होंने मुगलों की अजेय सेनाओं को नष्ट कर दिया था।

वस्तुतः विद्वानों द्वारा किसी भी शासक का मूल्यांकन राष्ट्र के जीवन मूल्यों के लिए किए गए उसके प्रयत्नों के रूप में आंका जाना चाहिए। इस दृष्टि से भारत के इतिहास में महाराणा प्रताप का नाम सदैव प्रेरक रहा है, अकबर का नहीं।

अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलाने में महाराणा प्रताप के नाम ने जादू का काम किया था। निरंकुश और बर्बर मुगल जहांगीर तथा शाहजहां– दोनों ही अत्यधिक धर्मान्ध तथा विलासी थे। दोनों सुरा के साथ सुन्दरी के भी भूखे थे।

अकबर के बिगड़ैल पुत्र जहांगीर ने स्वयं लिखा कि वह प्रतिदिन बीस प्याले शराब पीता था। दोनों ने हिन्दू, जैन तथा सिख गुरुओं को बहुत कष्ट दिए थे। ये दोनों विदेश में अपने पूर्वजों की भूमि कभी नहीं भूले थे।

इन दोनों के बाद औरंगजेब ने भी भारत को दारुल हरब से दरुल इस्लाम बनाने के सभी घिनौने प्रयत्न किए। उसके ही शासन काल में गुरु तेग बहादुर का बलिदान हुआ, गुरुगोविन्द के चारों पुत्रों का बलिदान हुआ था।

इसके बावजूद कुछ चाटुकार मुस्लिम तथा वामपंथी इतिहासकारों ने उसे 'जिंदा पीर' का भी खिताब दिया है।

यहां पुनः वही प्रश्न है कि औरंगजेब भारत का राष्ट्रीयशासक था अथवा शिवाजी तथा गुरु गोविन्द सिंह राष्ट्रीय महापुरुष थे?

महादेव गोविन्द रानाडे ने शिवाजी के जन्म को एक महान संघर्ष तथा तपस्या का परिणाम माना है।

वामपंथी इतिहासकार औरंगजेब की तुलना में शिवाजी को राष्ट्रीय मानने को तैयार नहीं हैं। उनके संघर्ष को देश के साथ जोड़ने में उन्हें लज्जा आती है। जबकि सर यदुनाथ सरकार जैसे विश्वविख्यात इतिहासकार का कथन है कि शिवाजी जैसा सच्चा नेता सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक अद्वितीय देन है। शिवाजी का लक्ष्य भारतभूमि से विदेशी साम्राज्य को नष्ट करना था। हर समय घोड़े की पीठ पर रहने वाले शिवाजी की तुलना पालकी में बैठकर युद्ध करने वाले औरंगजेब से किसी भी प्रकार से न्यायोचित नहीं है। इसी भांति गुरु गोविन्द सिंह जी ने समस्त समाज को, बिना किसी भेदभाव के भयमुक्त तथा निःस्वार्थ सेवा भावना से ओत–प्रोत किया। उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना कर सम्पूर्ण राष्ट्र को जीवनदायिनी बूटी दी थी।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मुगल शासक विदेशी, साम्राज्यवादी, क्रूर, लुटेरे तथा मतान्ध थे। उन्हें न भारत भूमि से कोई लगाव था और न ही भारतीयों से। विदेशियों को राष्ट्रीय शासक कहना सर्वथा अनुचित है तथा देशघातक है।

औरंगजेब को "संत" और परोपकारी साबित करने की कोशिश पहले शुरू की सैयद शहाबुद्दीन

(आईएफएस) ने, जिन्होंने कहा कि ह्रमन्दिर को तोड़कर मस्जिद बनाना शरीयत के खिलाफ है, इसलिये औरंगजेब ऐसा कर ही नहीं सकताह्व। फि र जेएनयू के स्वघोषित सेकुलर बुद्धिजीवी कैसे पीछे रहते?

उन्होंने भी एक सुर में औरंगजेब और अकबर को महान धर्मनिरपेक्षतावादी बताने के लिये पूरा जोर लगा दिया, जबकि मुगल काल के कई दस्तावेज, डायरियाँ, ग्रन्थ आदि खुलेआम बताते हैं कि उस समय धर्म के नाम पर लाखों हिन्दुओं का नरसंहार हुआ था एवं हजारों मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदें बनाई गईं।

जब अरुण शौरी जी ने 2 सितम्बर 1669 के मुगल अदालती दस्तावेज जिसे "मासिरी आलमगिरीह्व कहा जाता है, उसमें से एक अंश उद्धत करके बताया कि "बादशाह के आदेश पर अधिकारियों ने बनारस में काशी विश्वनाथ का मन्दिर ढहाया" तो इन सभी सेकुलरों को सांप सूंघ गया और वे बगलें झाँकते नजरआए। आज भी उस पुराने मन्दिर की दीवार औरंगजेब द्वारा बनाई गई मस्जिद में स्पष्ट तौर पर देखी जा सकती है।

एनसीआरटी द्वारा प्रकाशित 'मध्यकालीन भारत' तथा 'उत्तर मुगलकालीन भारत' पुस्तकों में वामपंथी लेखक डा. सतीशचंद्र ने कलम और तलवार के धनी महान भारतीय गुरू गोविंद सिंह जी महाराज पर औरंगजेब से माफी मांगने जैसा निराधार आरोप लगाने की धृष्टता की थी।

उन्होंने धर्म स्वातंत्रय की रक्षा के लिए महान बलिदान देने वाले गुरू तेगबहादुर जी के संबंध में लिखाः– सन् 1705 में औरंगजेब ने गुरू को माफ कर दिया। गुरू चाहता था कि औरंगजेब उसे आनंदपुर वापस दिलवा दें।

मध्यकालीन भारत में डा सतीश चंद्र लिखते हैंः–

गुरू तेगबहादुर को अपने पांच अनुयायियों के साथ दिल्ली लाया गया और मौत के घाट उतार दिया गया। पूरा संसार जानता है कि गुरू तेगबहादुर जी ने हिंदू धर्म की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया था।

उन्होंने सिख धर्म त्यागकर मुसलमान बनने से स्पष्ट इन्कार कर दिया था इसलिए औरंगजेब के आदेश से आततायियों ने सरेआम उनकी हत्या की। उन्होंने बलिदान दिया, किंतु धर्म परिवर्तन नहीं किया। प्लेटो ने लिखा था कि कहानियां सुनाने वालों के हाथों में सत्ता होती है। इस कथन का आशय यह है कि जिन लोगों के हाथ में सत्ता होती है, वे पुरानी कहानियों की नई व्याख्या भी करना चाहते हैं।

मध्यकालीन भारत का सम्पूर्ण सच्चा इतिहास कभी

भी जनता के सामने नहीं आने दिया गया। अय्याश नेहरू की "भारत एक खोज" को देश आज भी सरकारी रूप से अपना इतिहास मानता है !

देश के बुद्धिजीवी वर्ग ने कभी इस तरफ संज्ञान नही लिया ।लगभग हर जाति का इतिहास उल्टा लिखा गया है । राजीव गांधी ने अपनी नई शिक्षा नीति में राष्ट्रीय आन्दोलन को पढ़ाने पर विशेष बल दिया।

भारत के तत्कालीन शिक्षा मंत्री अर्जुन सिंह ने सांस्कृतिक तथा राष्ट्रबोधक तत्वों को हटाने का पूर्ण प्रयत्न किया। विद्यालयों में प्रारंभ में देश प्रार्थना, योग व्यायाम विशेषकर सूर्य नमस्कार तथा वन्देमातरम का राष्ट्रीय गीत झूठी धर्मनिरपेक्षता के नाम पर सरकारी स्तर पर हटा दिया गया।

राजस्थान में 2009 में तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा वहां के शिक्षा बोर्ड द्वारा भारतीय इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में 'भगवाकरण' से मुक्त करने के प्रयत्न हुए।

पुस्तकों से भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले मदनमोहन मालवीय, डा. हेडगेवार,दीनदयाल उपाध्याय तथा वीर सावरकर जैसे राष्ट्रभक्तों से संबंधित सामग्री हटा दी गई।

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता वि.वा. शिखाड़कर की कविता 'सर्वात्मका सर्वेक्षण' को इसलिए पुस्तक से हटाया गया क्योंकि उसमें शिवाजी द्वारा अफजल खां को मारने का वर्णन था।

बंगाल, त्रिपुरा तथा केरल में तो कम्युनिस्ट शासन होने के कारण सरकार द्वारा इतिहास का पाठ्यक्रम साम्यवादी प्रचार का मुख्य अस्त्र बना। इतिहास की पुस्तकों में श्रमिकआन्दोलन, कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास, लेनिन व स्टालिन की जीवनी, पढ़ाई जाने लगी। 11वीं कक्षा के छात्रों को 30 पृष्ठों में 1917 की रूसी क्रांति पढ़नी पड़ी। अनेक इतिहास के तथ्यों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया।

इतना ही नहीं, 1989 ई. में बंगाल सरकार द्वारा निर्देश दिया गया कि किसी भी पुस्तक में इस्लामी क्रूरता का वर्णन तथा साथ ही मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार एवं उमरे जबरदस्ती धर्मान्तरण की बात नहीं होनी चाहिए। हिन्दू मंदिरों के ध्वंस का वर्णन नहीं होना चाहिए।

भारतीय इतिहास पर कांग्रेस का लम्बे समय तक कब्जा रहा, वे देश के नौनिहालों को यह झूठा ज्ञान दिलाने में सफल रहे कि भारत का सारा इतिहास केवल पराजयों और गुलामी का इतिहास है और यह कि भारत का सबसे अच्छा समय केवल तब था जब देश पर मुगल बादशाहों का शासन था।

तथ्यों को तोड़-मरोड़कर वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि भारत में जो भी गौरवशाली है वह मुगल बादशाहों द्वारा दिया गया है और उनके विरुद्ध संघर्ष करने वाले महाराणा प्रताप, शिवाजी आदि पथभ्रष्ट थे। आज दुनिया मानती है कि प्राचीन भारत गणित, बीज गणित आदि से लेकर खगोल विद्या तक के क्षेत्र में शिखर पर था।

प्राचीन भारतीय हिन्दू शासकों की सामाजिक और न्यायिक व्यवस्था अपनी उदारता, मानवसेवा एवं प्रजा को ईश्वर मानकर सेवा करने वाली शासन व्यवस्था के लिए विश्वविख्यात रही है जिनका अध्ययन आज भी राजनीतिजों एवं राजनीतिशास्त्र के छात्रों के लिए महान प्रेरणा का स्रोत बन सकता है। पर हमारी पाठ्यपुस्तकों में विदेशी हमलावर मुगलों की क्रूर एवं धर्मआधारित शासन व्यवस्था पढ़ायी जा रही है।

यहां के विश्वविद्यालयों में दुनिया भर से छात्र पढ़ने आते थे। अलइबरुनी, फाह्यान, ह्वेन सांग सरीखे दर्जनों विदेशी यात्री भारत का अध्ययन करने आए और उन्होंने जो प्रामाणिक पुस्तकें लिखी हैं वह चौंका देने वाले तथ्यों का संग्रह तो हैं ही,विश्व में हमारे ज्ञान गुरूत्व को भी प्रमाणित करती है।

स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में आरसी मजुमदार, सर जदुनाथ सरकार, नीलकंठ शास्त्री, टीवी महालिंगम, राधा कुमुद मुखर्जी, काशी प्रसाद जायसवाल जैसे निस्वार्थ और सर्वमान्य इतिहासकार, जो एक तरफ वस्तुपरक भी थे और दूसरी तरफ भारतीय को भारतीय दृष्टि से देखने की क्षमता भी रखते थे,को पूरी तरह दरकिनार करके मार्क्सवादी इतिहासकारों की नई टोली ने भारत के गौरवमय इतिहास का गला घोंट दिया है।

लार्ड मैकाले ने १२ अक्टूबर १८३६ को अपने पिता को लिखे पत्र में कहा था कि हम भारत पर पूरी तरह से तभी शासन कर पायेंगे जब इन्हें हम इनकी प्राचीन एवं गौरवशाली संस्कृति से दूर कर सकेंगे।

तब उसने व्यापक तौर पर पाठ्यक्रमों में बदलाव किया था एवं भारतीय छात्रों के दिमाग में अंग्रेजियत का बीज बोया था। आज के कान्वेंट स्कूल उसी के शातिर दिमाग की उपज है जिनसे पढ़कर निकलने वाले छात्रों को अपनी गौरवशाली प्राचीन संस्कृति के बारे में कुछ पता ही नहीं होता।

तब से लेकर आज तक देश एवं राज्यों की लगभग हर सरकारें अपना राजनीतिक स्वार्थ चमकाने के लिए पाठ्यपुस्तकों में फेरबदल करती आयीं हैं।

आज स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थी प्राचीन भारतीय गौरव के बारे में जानते ही नहीं हैं। इसीलिए भारतीय कला,इतिहास,एवं संस्कृति का उपहास करते हैं एवं पश्चिमी संस्कृति की ओर भाग रहे हैं।

उम्मीद है कि मेरे पिछले कुछ ऐतिहासिक लेखों से लगातार मुझे गालियाँ दे रहे रट्टू तोतों को ये लेख पढ़कर कुछ सद्बुद्धि आयेगी।

दलितों का शोषण किसने किया ?

दलित नाम की विशेष प्रजाति बुरी तरह भड़की रहती है हिन्दू धर्म के खिलाफ | इसके अंतर्गत आने वाले लोग कहते हैं कि हिन्दू धर्म में उनके साथ भेदभाव और शोषण होता है। हाँ भईया होता होगा ! तुम भला झूठ क्यों बोलोगे ?? किसी को क्या दलित बनना अच्छा लगता है (आरक्षण न मिले तो ...) ??;

लेकिन एक बात तो बता दो .... हिन्दुओं का शासन तो पृथ्वीराज चौहान के बाद ही खतम हो गया था , उस के बाद लगभग 1000 सालों तक मुसलमानों ने , 200 साल तक अंग्रेजो यानि क्रिश्चियनों ने हिंदुस्तान पर राज किया . उन्होंने कितना ऊँचा दर्जा दिया दलितों को ?? उन्होंने कितने दलितों को राजा ,अफसर ,जागीरदार ,जमींदार बनाया था ??कितनों को सम्मानित किया ??..नहीं याद आया ??

आएगा भी नहीं ! क्योंकि होने वाली घटना याद आएगी ,जो हुआ ही नहीं वो कैसे याद आएगा ! क्या जानिए दो-चार दलित अपवाद स्वरुप मिल जाएँ इतिहास में ..जिनका स्तर सवर्णों के समान ऊँचा रहा हो` उनका जिक्र करना औचित्यहीन इसलिए होगा क्योंकि अपवादों के आधार पर पूरे समाज का आंकलन नहीं किया जा सकता।

खैर .. छोड़ो इसे ; एक दूसरी बात बतलाओ` 1200 साल का समय (इसमें बौद्ध काल शामिल नहीं है , उसकी चर्चा नीचे करूँगा) बहुत होता है किसी भी व्यवस्था - कुप्रथा को बदलने या समाप्त करने के लिए... फिर इतने बड़े अंतराल में भी दलितों को समानता का हक क्यों नहीं मिला ??

इन्हीं मुस्लिम और अंग्रेज शासकों ने दूसरों के राज्य जीतने और हड़पने में , जबरन धर्म परिवर्तन कराने में , लूटपाट करने , मंदिरों का विध्वंस ,हिन्दू महिलाओं से विवाह - बलात्कार, लोगों को गुलाम बनाकर उन्हें बेचने ..और न जाने ऐसे कितने क्रूर,घृणित और संघर्षपूर्ण कामों में अपनी शक्ति और प्रभाव का भरपूर इस्तेमाल किया` फिर दलितों के साथ हो रहे अन्याय को खत्म कराने के लिए कुछ नहीं किया ...क्यों ???

अधिकांश हिन्दू उनकी ताकत के कारण हर जायज-नाजायज माँग को चाहे-अनचाहे स्वीकार करने को बाध्य थे... उस वक़्त तो आसानी से दलितों का उत्थान कर सकते थे.. फरमान जारी करके दलितों के साथ हो रहे भेदभाव पर अंकुश लगवा सकते थे , उन्हें उनका हक दिला सकते थे ...पर उन्होंने ऐसा नहीं किया और दलित ज्यों के त्यों अछूत के अछूत बने रहे क्यों... ??

जो दलित हिन्दू धर्म को गालियाँ देकर मुस्लिमों और ईसाईयों का गुणगान करते हैं उन्हें पता ही नहीं कि वास्तविक शोषण तो उन्होंने ही किया दलितों का | अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए खूब बेवकूफ बनाया इनको , सिर्फ साम्राज्य का विस्तार करने और अपने धर्मावलम्बियों की गिनती बढ़ाने के लिए उन्होंने दलितों को हिन्दू धर्म के खिलाफ भड़काया | आखिरकार वे तो विदेशी थे और शासन करने यहाँ आये थे ..ऐसे में यहाँ शासन करते भी तो किस पर ??

उनका वैचारिक समर्थन करने वाले भी तो होने चाहिए .. सो उन्होंने दलितों से झूठी हमदर्दी दिखाकर उन्हें अपना झंडा थमा दिया .. और ये भी किसी न किसी प्रलोभन या भय के चलते उनकी जय झजयकार करने लगे` सच तो यह है कि धोबी के कुत्ते टाइप इन दलितों ने धर्म बदलकर भी समाज में बराबरी का दर्जा हासिल नहीं कर पाया | मुगलों और अंग्रेजों ने भी इनसे काम दलितों वाले ही करवाए | उन सभी को सेवक या गुलाम बनाकर ही रखा।

इससे इनकार नहीं है कि शोषण धर्म परिवर्तन करने वाले दूसरे हिन्दुओं का भी हुआ ... मसलन सवर्ण भी इससे अछूते नहीं रहे , लेकिन फिर भी उनका दर्जा वहां भी ऊँचा ही रहा` किसी कारणवश अगर मुस्लिम और अंग्रेज शासकों ने धर्मान्तरित हिन्दुओं में किसी वर्ग को महत्व अथवा मान-सम्मान देने की जरुरत महसूस की ..तो उन्होंने सवर्णों को ही इसके योग्य समझा ..दलितों को नहीं।

बहुतों को पता होगा कि राजपूतों ने पठान और ब्राह्मणों ने सैय्यद बनकर मुस्लिम धर्म को कुबूल किया | इस प्रकार वे वहां भी अभिजात्य वर्ग में बने रहे जबकि दलित धर्म बदलकर भी लेबर क्लास में ही अपनी 'सेवाएँ' देते रहे .... जिसका सिलसिला आज भी जारी हैं .... यानि केवल धर्म बदला लोगों का , उनका सामाजिक और आर्थिक स्तर नहीं।

सही मायनों में दलितों की समानता के लिए हिन्दुओं ने और विशेष रूप से सवर्णों ने ही अभियान चलाए` बाकी धर्मो के शासकों ने तो अपना उल्लू सीधा करने के लिए उन्हें मूर्ख बनाया।

महात्मा बुद्ध हों, गुरु नानक हों ,महावीर स्वामी हों या दयानंद सरस्वती ...सभी हिन्दू थे ... और सवर्ण थे | उन्होंने दलितों के सामजिक उत्थान के लिए उन्हें अपने पंथ में प्रवेश की खुली छूट दी .. और उनका उद्देश्य भी केवल और केवल...मानवता का पोषण

,संरक्षण करना था ..स्वार्थसिद्धि नहीं | ज्यादा पीछे जाने की जरुरत नहीं है.. एक अछूत को रामजी सकपाल से बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर बनाने वाला व्यक्ति भी ब्राह्मण ही था।

अब इतने के बाद भी दलितों को या किसी अन्य हिन्दू बिरादरी के व्यक्ति को मुस्लिम –ईसाई बनना है , तो उन्हें जल्द से जल्द ऐसा करना चाहिए क्योंकि ऐसे कुकुरमुत्तों के रहते परम पवित्र सनातन धर्म में गन्दगी ही फैल रही है।

उन्हें तत्काल मौलानाओं और पादरियों की शरण लेना चाहिए और हाँ ...इन कुकुरमुत्तों को जब हिन्दू धर्म में इतनी बुराइयाँ दिखती हैं तो सबसे पहले अपने बाप–दादाओं समेत सारे पुरखों को गरियाना–जुतियाना चाहिए जो अब तक हिन्दू धर्म को अपनाए रहे | इन धर्मद्रोही कुकुरमुत्तों की भावनाओं को समझें तो उसके अनुसार उनके पुरखे बेवकूफ थे। अगर वे पहले ही धर्म बदल लेते तो इन दागी और बागी कुकुरमुत्तों को हिन्दू होने की पीड़ा नहीं झेलनी पड़ती !... लेकिन मुझे तो एक बात समझ नहीं आती ...तुम्हारे पुरखे बेवकूफ थे सो थे ..पर तुम क्यों अक्लमंदी नहीं दिखाते ?? जब सनातन हिन्दू धर्म इतना ही बुरा है .. और उसमें तुम्हें शोषण – पीड़ा भी झेलनी पड़ती है ... तो उसे छोड़ते क्यों नहीं ?? जिस सनातन धर्म को गालियाँ देते हो ... उसमें घुसे रहकर अपने दोगलेपन को क्यों प्रमाणित क्यों कर रहे हो ?? अरे... क्या दिक्कत इसे छोड़ने में ??

जब तुम्हारे आराध्य भगवान भीमराव ने संविधान में धार्मिक स्वतंत्रता के तहत धर्म परिवर्तन करने की पूरी छूट दे रखी है। जल्दी जाओ .. और जाकर इस छूट का लाभ उठाओ ! तुम्हारे आदर्श रोहित बेमुला और उसके परिवार ने तो बाजी मार लीं कन्हैया कुमार को भी वक़्त रहते अक्ल आ गई अब बारी तुम्हारी है।

आखिर में तीसरे मोर्चे वाले यानि ... बौद्ध धर्म अपनाकर ह्यऊँचाह्न बनने का ख्वाब देखने वालों से भी कुछ पूछना चाहूँगा` जवाब न भी दें तब भी मेरी बात पर विचार तो कर ही सकते हैं जरा बताएं... क्या उन्हें या उनके पुरुखों को बौद्ध बनकर अपेक्षित और कथित सामाजिक न्याय मिला ??

एक लम्बे काल तक भारतवर्ष में बौद्ध धर्म का भी व्यापक प्रभाव रहा ... उसका खूब डंका बजा` उस दौरान कितने ही देशों में बौद्ध धर्म फैला ! न जाने कितने राजे–महाराजे बौद्ध हो गए ! दलितों को लगा कि यही सही मौका है अपनी नस्ल बदलने का ...सो वे भी महज बराबरी का दर्जा पाने के लिए (क्योंकि आध्यात्मिक..आत्मिक उन्नति से उनके बाप को भी मतलब नहीं था) बौद्ध बन बैठे। पर नतीजा ?? वही ढाक के तीन पात !

वहां भी गिनती बढ़ाने के बदले मिलने वाले 'छद्म समानता' के अलावा वो कुछ खास हासिल नहीं कर सके। जरा सनातन धर्म के विरोधी हिसाब जोड़े कि बौद्ध काल समेत मुस्लिमों और अंग्रेजों के शासनकाल की अवधि कितनी लम्बी थी | इस अत्यधिक लम्बे अंतराल में भी दलितों की दुर्दशा यथावत क्यों बनी रही ??

सनातन धर्म पर भेदभाव का आरोप लगाने वाले अपने प्रिय मजहबो और उनके शासकों के रुख पर क्या सफाई देंगे ?? अगर ये शासक और मजहब वास्तव में सामाजिक समानता स्थापित करने के प्रयास करते तो सबको जन्मजात जाति व्यवस्था से इतर योग्यता के अनुसार उनका हक मिल गया होता और जातिगत दलित जीव भारत में नहीं पाए जा रहे होतें

इतना सब कहने के बाद मैं एक बात स्पष्ट करता चलूँ – मेरे निशाने पर सिर्फ वो धर्मद्रोही हिन्दू हैं (जिनमें तथाकथित सेक्युलर भी शामिल हैं) ...जो हिंदुत्व को बदनाम करते हुए दूसरे धर्मों को आदर्श बताते हैं दलित इनमें बहुतायत में हैं इसलिए उनको संबोधित करते हुए ही सवाल और सुझाव सामने रखे हैं | इन कुकुरमुत्तों के अलावा मैं उन सभी हिन्दुओं को अपना स्वजन –प्रियजन मानता हूँ जो धर्मप्रेमी, श्रद्धालु और आस्तिक हैं ...चाहे वे किसी भी जाति से क्यों न हों` साथ में आपको यह भी बता दूँ ... भगवान बुद्ध मेरे पूज्य हैं ..आदर्श हैं` मेरा आक्रोश सिर्फ छद्म बौद्धों के प्रति है।

इसके अलावा एक खास बात और ... अन्य धर्मों के उन लोगों के प्रति भी मेरे दिल में खास इज्जत है जो अपने धर्म से प्रेम करते हैं ,उसमें श्रद्धा रखते हैं , उसका सम्मान करते हुए कट्टरता से पालन करते हैं बेशक सैद्धांतिक या व्यवहारिक रूप से वे मेरे विरोधी और यहाँ तक कि किन्हीं परिस्थितियों में दुश्मन भी हो सकते हैं लेकिन बावजूद इसके मैं उनके धार्मिक जज्बे की कद्र करता हूँ।

स्वतंत्रता संग्रामके सेनानी : तात्या टोपे

भारत के ज्यादातर राजनितीक दल हमारे क्रांतिकारकोंको बड़ी चतुराई से भूल गये हैं, आप ऐसी कृतघ्नता, न करें !

ब्रिटिश सेना की नाक में दम करनेवाले, ह्यदुसरे शिवाजीह्ल सेनापती तात्या टोपे !

यदि वर्ष १८५७ के स्वातंत्र्य संग्राम का सार जानने की इच्छा है, तो हमें तात्या टोपे के चरित्र के एक पक्ष को सूक्ष्म दृष्टि से देखना चाहिए।

इस स्वातंत्र्य संग्राम में पराजित होने के पश्चात अगले १० माह तक तात्या टोपे ने वृकयुद्ध पद्धति अर्थात कूटनीति से चकमा दे कर एवं एकाएक आक्रमण कर

ब्रिटिश सेना की नाक में दम कर रखा था। कुछ अवसर पर वे शत्रु की दृष्टि में आते थे तो, उनकी सेना में भगदड मच जाती थी, तो तात्या वहां से खिसक कर अन्य स्थान पर जाकर नई सेना स्थापित करते थे। जब भी तात्या चाहते थे, वे नई सेना खडी कर लेते थे, इसका अर्थ यह कि, लोगों में ब्रिटिशोंके विरोध में इतना असंतोष व्याप्त था एवं उन्हें मुक्त होने की इतनी लगन थी कि, मारते मारते मृत्यु को स्वीकारनेवाले देश प्रेमी उन्हें सरलता से उपलब्ध होते थे।

यह भी उतना ही सच है कि, तात्या के शौर्य पर लोगोंका दृढ विश्वास था।

लोग जानते थे कि तात्या टोपे अंत तक अथक रूप से शक्ति एवं युक्ति से लडाई करते रहेंगे !

अनंत काल तक अपराजित रह चुके, तात्या टोपे !

तात्या टोपे ह्यक्षणह्ल के पराजित एवं ह्यअनंत कालह्ल के अपराजित थे ! वे तब के ह्यविद्रोहीह्ल एवं वर्तमान के ह्यस्वातंत्र्यवीरह्ल थे ! रामचंद्रराव पांडुरंगराव येवलकर उनका असली नाम था` बिठूर में तात्या टोपे का लालन-पालन हुआ। बचपन में उन्हें नाना साहब से अत्यंत स्नेह था। इसलिए उन्होंने जीवन-पर्यन्त नाना की सेवा की। उनका प्रारंभिक जीवन उदित होते हुए सूर्य की तरह था। क्रांती में योगदान की कहानी तांत्या के जीवन में कानपुर-विद्रोह के समय से प्रारंभ होती है। तांत्या काफी ओजस्वी और प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनमे साहस, शौर्य, तत्परता, तत्क्षण निर्णय की क्षमता एवं स्फूर्ति आदी अनेक प्रमुख गुण थे। क्रांति के दिनों में उन्होंने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई एवं नाना साहब का भरपूर साथ दिया। शिवराजपुर के सेनापति के रूप में उन्होंने फौजियों का नेतृत्व किया। कानपुर विजय का श्रेय भी उन्हीं को है। तांत्या ने कालपी को अपने अधिकार में लेकर उसे क्रांतिकारियों का महत्वपूर्ण

गढ़ बनाया। जहां एक ओर कई महत्वपूर्ण विजय प्राप्त की, वहीं दूसरी ओर उन्होंने कई बार अंग्रेज सेनापतियों को अपने गुरिल्ला ढंग के आक्रमणों के कारण सकते में डाला।

सारे देश में अंग्रेजी सेना उस समय तांत्या की तलाश कर रही थी और तांत्या क्रांतिकारियों को संगठित करने साथ अंग्रेजों पर छटपट आक्रमण करने में जुटे हुए थे। उस समय उनका नाम शौर्य और साहस का पर्याय बन गया था।

तांत्या ने काफी समय तक जंगलों में भटककर कई कष्ट भी झेले। सहसा 7 अप्रैल, 1859 को विश्वसघाती ने उन्हें अंग्रेजों के सुपुर्द कर दिया। मुकदमे के दौरान तांत्या ने कहा कि मैंने जो कुछ किया है। वह अपने देश की स्वतंत्रता के लिए किया है। इसी वर्ष देश की पहली क्रांती का सूर्य अस्त हुआ. ।उसका अंत 18 अप्रैल, 1859 को हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते पर चढ़ने के साथ समाप्त होता है। देश के प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम को चिरस्मरणीय बनाने का अत्यधिक श्रेय तांत्या टोपे को जाता है। वे उस ह्यसमयह्ल के अपराधी; परंतु ह्यआजह्ल के अधिदेव थे ! सत्ताधारी अंग्रेजोंका पराजय एवं सेनापति तात्या की विजय हुई थी। आज पूर्णांश से नहीं, अपितु बहुअंश से तात्या टोपे का सपना साकार हो गया था !

ह्यविजेताह्ल एवं ह्यअवतारीह्ल तात्या टोपे !

सेनापति तात्याराव सावरकर तात्या टोपे की आत्मा को आवाहन कर प्रार्थना कर रहे थे कि, यदि आप अब तक भी इस अवकाश में कहीं अस्वस्थ हों, तो शांत होइए, शांत होइए ! आप पराजित नहीं, विजयी हो ! ह्यअपराधीह्ल नहीं, अपितु ह्यअवतारीह्ल ह७े !

ह्यदुसरे शिवाजीह्ल ऐसा परिचय देनेवाले १८५७ के स्वातंत्र्य संग्राम के सेनापति तात्या टोपे !

यदि १८५७ के युद्ध में तात्या टोपे एकमात्र सेनापति होते एवं एक निश्चित दिन ह्यविद्रोहह्ल किया होता, तो १५० वर्षपूर्व ही भारत स्वतंत्र हो गया ह७ोता !

ह्यलंदन टाईम्सह्ल समान शत्रुराष्ट्र के समाचारपत्र ने भी तात्या की चतुराई एवं कल्पकता की प्रशंसा की थी। उस समय ब्रिटिश समाचारपत्र ह्यप्रति शिवाजीह्ल के रूप में उनका नामोल्लेख कर रहे थे !

१८५७ के स्वातंत्र्य संग्राम के भारतीयोंके सरसेनापति तात्या टोपे की पुण्यतिथि न मनानेवाली, नासिक महानगरपालिका !

वर्ष १८५७ के प्रथम भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम के सेनापति तात्या टोपे की पुण्यतिथि नासिक जिले में उनके येवला जन्मगांव में २३ अप्रैल २०१० को राष्ट्रभक्तोंने बड़े उत्साह के साथ मनाई; परंतु नासिक मनगरपालिका को तात्या टोपे की पुण्यतिथि का विस्मरण हो गया था !

भारतीय विद्यार्थी सेनाद्वारा पूर्व सूचना देने पर भी महानगरपालिका ने तात्या टोपे की प्रतिमा को उचित सम्मान अथवा उनका पूजन, ऐसा कुछ भी नहीं किया !

अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ

बीते कुछ महीने भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए खासे चुनौतीपूर्ण रहे हैं। इस दौरान कई ऐसे पहलू सामने आए हैं जो देश में ग्रोथ की गाड़ी की रफ्तार सुस्त करने पर आमादा हैं। इस दौरान अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें 80 डॉलर प्रति बैरल तक उछल गईं। इससे चालू खाते के घाटे यानी सीएडी पर दबाव बढ़ गया। उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं की मुद्रा पर पड़ती मार से रुपया भी अछूता नहीं रहा है। वैश्विक घटनाक्रम भी स्थिति को प्रभावित कर रहा है। मसलन अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व ने अपनी नीतिगत ब्याज दरों में इजाफा कर दिया है। वहीं अमेरिका अगले कुछ महीनों में ईरान पर कड़े प्रतिबंध लगाने की तैयारी कर रहा है। इस तरह आने वाले दिनों में ये मुश्किलें कुछ वक्त के लिए ऐसे ही कायम रहेंगी। इस बीच कच्चे तेल के बढ़ते दामों को देखते हुए सरकार पर इस बात के लिए दबाव बढ़ा है कि वह पेट्रोलियम उत्पादों पर उत्पाद शुल्क घटाकर आम लोगों को राहत दे, लेकिन अभी तक सरकार ने ऐसा कोई भी कदम न उठाकर यही संकेत दिया है कि वह राजकोषीय सुदृढ़ीकरण की राह से नहीं भटकने वाली। पिछले वित्त वर्ष में सरकार राजकोषीय घाटे के अपने लक्ष्य से चूक गई थी। इस साल वह राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 3.3 प्रतिशत के दायरे में ही समेटने को लेकर प्रतिबद्ध है। सरकार का यह रवैया स्वागतयोग्य है। यह उल्लेखनीय है कि सरकार ने एनके सिंह समिति की रिपोर्ट के आधार पर एक नए राजकोषीय विधायी ढांचे का खाका तैयार किया है। इसमें नया लक्ष्य रखा गया है कि वर्ष 2024-25 तक ऋण-जीडीपी अनुपात को 40 प्रतिशत के स्तर पर लाया जाएगा। ऐसे में राजकोषीय सुदृढ़ीकरण की राह से तनिक भी विचलन ऋण के अंबार को बढ़ाएगा, जिससे ब्याज का बोझ बढ़ेगा।1चूंकि अगस्त तक ही राजकोषीय घाटे का आंकड़ा चालू वित्त वर्ष के कुल लक्ष्य के 94.7 प्रतिशत के स्तर को छू गया है, ऐसे में बजट लक्ष्य के अनुसार 3.3 प्रतिशत के लक्ष्य को हासिल करने की चुनौतियों को समझना होगा। जहां तेल की कीमतों का असर मुख्य रूप से चालू खाते के घाटे पर ही देखने को मिलेगा तो राजकोषीय मोर्चे पर इसके कुछ अल्पकालिक असर दिख सकते हैं। डीजल और पेट्रोल के दाम अब सरकार द्वारा नहीं तय किए जाते। इन्हें भले ही मूल्य नियंत्रण से मुक्त कर दिया गया है, लेकिन रसोई गैस और केरोसिन की कीमतें अभी भी नियंत्रित की जाती हैं, जिससे राजकोषीय गणित कुछ गड़बड़ा सकता है। सार्वजनिक उपक्रमों में विनिवेश के जरिये 80,000 करोड़ रुपये जुटाने का लक्ष्य भी फिलहाल दूर की कौड़ी ही लगता है। अगस्त तक विनिवेश के माध्यम से महज 9,424.22 करोड़ रुपये ही जुटाए गए हैं। कर मोर्चे पर भी कुछ चिंता बढ़ी हैं। चालू वित्त वर्ष में अगस्त तक अधिकांश महीनों में जीएसटी संग्रह प्रतिमाह एक लाख करोड़ रुपये के लक्ष्य से कम ही रहा। उपभोक्ता वस्तुओं में बड़े पैमाने पर हुई कटौती से भी जीएसटी से होने वाले राजस्व संग्रह में और कमी आने की आशंका है। हालांकि त्योहारी सीजन में उपभोग में इजाफे की उम्मीद से इस घाटे की कुछ हद तक भरपाई होने की संभावना जताई जा रही है। जहां तक व्यय की बात है तो 14 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में हुई बढ़ोतरी राजकोषीय घाटे को बढ़ा सकती है। ऐसे में आखिर क्या किया जाना चाहिए? सरकार को चाहिए कि वह नवरत्न कंपनियों में अपनी हिस्सेदारी घटाने की योजना बनाए ताकि वह पर्याप्त संसाधन जुटाने में सफल हो सके। जीएसटी के मामले में अब जहां भी अड़चनें कायम हैं उन्हें सुलझाकर इसके सुगम और बेहतर अनुपालन को सुनिश्चित किया जाए। हालांकि केवल केंद्र के राजकोषीय घाटे को साधने से ही सभी समस्याएं नहीं सुलझ जाएंगी। अपने प्रतिस्पर्धी देशों में भारत उन देशों में से एक है जहां सरकारी घाटा काफी ऊंचा है। ऐसे में राज्यों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा भी समीचीन हो जाती है। नए विधायी ढांचे में 2024-25 तक सरकारी घाटे को 60 प्रतिशत के दायरे में लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसका अर्थ यही है कि राज्यों का ऋण-जीडीपी अनुपात 20 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि राज्य भी राजकोषीय सुदृढ़ीकरण की राह पर मजबूती से टिके रहें। राज्यों की वित्तीय स्थिति को लेकर भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआइ की एक ताजा रिपोर्ट इस मोर्चे पर नई चिंताओं को रेखांकित करती है। किसानों की कर्ज माफी से लेकर वेतन आयोग की सिफारिशों ने राज्यों के खजाने में सेंध लगाई है। चालू वित्त वर्ष में राज्यों का राजकोषीय घाटा जीडीपी के 3.1 प्रतिशत के दायरे में रखने का अनुमान लगाया गया है। यह लगातार तीसरा साल होगा जब राज्य राजकोषीय घाटे के उस तीन प्रतिशत की लक्ष्मण रेखा को लांघेंगे जो उनके राजकोषीय कानूनों में खिंची हुई है, जबकि चालू वित्त वर्ष में राज्यों ने अपने राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 2.6 प्रतिशत के दायरे में सीमित करने का लक्ष्य तय किया था। मगर इसके लिए किसानों की कर्ज माफी जैसी कवायदों पर विराम लगाना होगा, जो न केवल सरकारी खजाने की सेहत बिगाड़ती हैं, बल्कि बैंकों पर अनावश्यक दबाव बढ़ा देती हैं। राज्यों की वित्तीय स्थिति से जुड़ी रिपोर्ट का एक और महत्वपूर्ण पहलू है और वह यह कि ज्यादा उधारी से ब्याज अदायगी पर बढ़ा खर्च कैसे राजस्व व्यय में इजाफा कर रहा है। राज्यों की उधारी 2014 में 66.2 प्रतिशत से ऊंची छलांग लगाकर 2017 में 76.2 फीसद हो गई। उधारी बढ़ने से राज्यों पर ब्याज का बोझ बढ़ता जा रहा है। यदि बांड बाजार से उधारी की अहमियत बढ़ती है तो फिर बांड बाजार की विसंगतियां दूर करना बेहद जरूरी हो जाता है। इसका एक तरीका तो यही है कि बांड बाजार में अधिक निवेशकों को प्रोत्साहित कर इसमें तरलता के स्तर को सुगम बनाया जाए। केंद्रीय बैंक ने एहतियात के साथ विदेशी निवेशकों को बांड बाजार में भागीदारी की अनुमति दी है। भारत में बांड बाजारों की दशा-दिशा सुधारने के लिए ऐसे सुधारों को बढ़ावा देने की दरकार है। 1स्वतंत्र सार्वजनिक ऋण प्रबंधन एजेंसी की स्थापना के रूप में राजकोषीय मोर्चे पर एक और महत्वपूर्ण सुधार आकार लेने की बाट जोह रहा है। ऐसी संस्था के गठन का विचार आगे तो बढ़ा था, लेकिन 2015 के बजट में इसे जगह नहीं मिल पाई। स्वतंत्र ऋण प्रबंधन एजेंसी की भूमिका यही होगी कि वह कम से कम लागत में सरकारी ऋण का प्रबंधन करेगी। जब हम नए राजकोषीय ढांचे की ओर कदम बढ़ा रहे हैं तो इसका भी समय आ गया है कि राजकोषीय अनुशासन और उधारी की लागत घटाने के लिए संस्थागत उपाय भी किए जाएं।

1857 से 1947 के बीच भारत के खंडण से बने 7 नए देश

सम्भवतः ही कोई पुस्तक (ग्रन्थ) होगी जिसमें यह वर्णन मिलता हो कि इन आक्रमणकारियों ने अफगानिस्तान, (म्यांमार), श्रीलंका (सिंहलद्वीप),नेपाल, तिब्बत (त्रिविष्टप), भूटान, पाकिस्तान, मालद्वीप या बांग्लादेश पर आक्रमण किया। यहां एक प्रश्न खड़ा होता है कि यह भू-प्रदेश कब, कैसे गुलाम हुए और स्वतन्त्र हुए। प्रायः पाकिस्तान व बांग्लादेश निर्माण का इतिहास तो सभी जानते हैं। शेष इतिहास मिलता तो है परन्तु चर्चित नहीं है। सन 1947 में विशाल भारतवर्ष का पिछले 2500 वर्षों में 24वां विभाजन है।

सम्पूर्ण पृथ्वी का जब जल और थल इन दो तत्वों में वर्गीकरण करते हैं, तब सात द्वीप एवं सात महासमुद्र माने जाते हैं। हम इसमें से प्राचीन नाम जम्बूद्वीप जिसे आज एशिया द्वीप कहते हैं तथा इन्दू सरोवरम् जिसे आज हिन्दू महासागर कहते हैं, के निवासी हैं। इस जम्बूद्वीप (एशिया) के लगभग मध्य में हिमालय पर्वत स्थित है। हिमालय पर्वत में विश्व की सर्वाधिक ऊँची चोटी सागरमाथा, गौरीशंकर हैं, जिसे 1835 में अंग्रेज शासकों ने एवरेस्ट नाम देकर इसकी प्राचीनता व पहचान को बदलने का कूटनीतिक षड्यंत्र रचा।

हम पृथ्वी पर जिस भू-भाग अर्थात राष्ट्र के निवासी हैं उस भू-भाग का वर्णन अग्नि,वायु एवं विष्णु पुराण में लगभग समानार्थी श्लोक के रूप में है :-

उत्तरं यत्समुद्रस्य, हिमाद्रश्चैव दक्षिणम्।
वर्ष तद् भारतं नाम, भारती यत्र संतति।।

अर्थात हिन्द महासागर के उत्तर में तथा हिमालय पर्वत के दक्षिण में जो भू-भाग है उसे भारत कहते हैं और वहां के समाज को भारती या भारतीय के नाम से पहचानते हैं।

वर्तमान में भारत के निवासियों का पिछले सैकडों हजारों वर्षों से हिन्दू नाम भी प्रचलित है और हिन्दुओं के देश को हिन्दुस्तान कहते हैं। विश्व के अनेक देश इसे हिन्द व नागरिक को हिन्दी व हिन्दुस्तानी भी कहते हैं। बृहस्पति आगम में इसके लिए निम्न श्लोक उपलब्ध है :-

हिमालयं समारम्भ्य यावद् इन्दु सरोवरम।
तं देव निर्मित देशं, हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।।

अर्थात हिमालय से लेकर इन्दु (हिन्द) महासागर तक देव पुरुषों द्वारा निर्मित इस भूगोल को हिन्दुस्तान कहते हैं। इन सब बातों से यह निश्चित हो जाता है कि भारतवर्ष और हिन्दुस्तान एक ही देश के नाम हैं तथा भारतीय और हिन्दू एक ही समाज के नाम हैं।

जब हम अपने देश (राष्ट्र) का विचार करते हैं तब अपने समाज में प्रचलित एक परम्परा रही है, जिसमें किसी भी शुभ कार्य पर संकल्प पढ़ा अर्थात लिया जाता है। संकल्प स्वयं में महत्वपूर्ण संकेत करता है। संकल्प में काल की गणना एवं भूखण्ड का विस्तृत वर्णन करते हुए, संकल्प कर्ता कौन है ? इसकी पहचान अंकित करने की परम्परा है। उसके अनुसार संकल्प में भू-खण्ड की चर्चा करते हुए बोलते (दोहराते) हैं कि जम्बूद्वीपे (एशिया) भरतखण्डे (भारतवर्ष) यही शब्द प्रयोग होता है। सम्पूर्ण साहित्य में हमारे राष्ट्र की सीमाओं का उत्तर में हिमालय व दक्षिण में हिन्द महासागर का वर्णन है, परन्तु पूर्व व पश्चिम का स्पष्ट वर्णन नहीं है। परंतु जब श्लोकों की गहराई में जाएं और भूगोल की पुस्तकों अर्थात एटलस का अध्ययन करें तभी ध्यान में आ जाता है कि श्लोक में पूर्व व पश्चिम दिशा का वर्णन है। जब विश्व (पृथ्वी) का मानचित्र आँखों के सामने आता है तो पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है कि विश्व के भूगोल ग्रन्थों के अनुसार हिमालय के मध्य स्थल ह्यकैलाश मानसरोवरह्ण से पूर्व की ओर जाएं तो वर्तमान का इण्डोनेशिया और पश्चिम की ओर जाएं तो वर्तमान में ईरान देश अर्थात आर्यान प्रदेश हिमालय के अंतिम छोर हैं। हिमालय 5000 पर्वत शृंखलाओं तथा 6000 नदियों को अपने भीतर समेटे हुए इसी प्रकार से विश्व के सभी भूगोल ग्रन्थ (एटलस) के अनुसार जब हम श्रीलंका (सिंहलद्वीप अथवा सिलोन) या कन्याकुमारी से पूर्व व पश्चिम की ओर प्रस्थान करेंगे या दृष्टि (नजर) डालेंगे तो हिन्द (इन्दु) महासागर इण्डोनेशिया व आर्यान (ईरान) तक ही है। इन मिलन बिन्दुओं के पश्चात्ही दोनों ओर महासागर का नाम बदलता है।

इस प्रकार से हिमालय, हिन्द महासागर, आर्यान (ईरान) व इण्डोनेशिया के बीच के सम्पूर्ण भू-भाग को आर्यावर्त अथवा भारतवर्ष अथवा हिन्दुस्तान कहा जाता है। प्राचीन भारत की चर्चा अभी तक की, परन्तु जब वर्तमान से 3000 वर्ष पूर्व तक के भारत की चर्चा करते हैं तब यह ध्यान में आता है कि पिछले 2500 वर्ष में जो भी आक्रांत यूनानी (रोमन ग्रीक) यवन, हूण, शक, कुषाण, सिरयन, पुर्तगाली, फेंच,डच, अरब, तुर्क, तातार, मुगल व अंग्रेज आदि आए, इन सबका विश्व के सभी इतिहासकारों ने वर्णन किया। परन्तु सभी पुस्तकों में यह प्राप्त होता है कि आक्रान्ताओं ने भारतवर्ष पर, हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया है। सम्भवतः ही कोई पुस्तक (ग्रन्थ) होगी जिसमें यह वर्णन मिलता हो कि इन आक्रमणकारियों ने अफगानिस्तान, (म्यांमार),श्रीलंका (सिंहलद्वीप), नेपाल, तिब्बत (त्रिविष्टप), भूटान, पाकिस्तान,मालद्वीप या

बांग्लादेश पर आक्रमण किया। यहां एक प्रश्न खड़ा होता है कि यह भू-प्रदेश कब, कैसे गुलाम हुए और स्वतन्त्र हुए। प्रायः पाकिस्तान व बांग्लादेश निर्माण का इतिहास तो सभी जानते हैं। शेष इतिहास मिलता तो है परन्तु चर्चित नहीं है। सन 1947 में विशाल भारतवर्ष का पिछले 2500 वर्षों में 24वां विभाजन है। अंग्रेज का 350 वर्ष पूर्व के लगभग ईस्ट इण्डिया कम्पनी के रूप में व्यापारी बनकर भारत आना, फिर धीरे-धीरे शासक बनना और उसके पश्चात सन 1857 से 1947 तक उनके द्वारा किया गया भारत का 7वां विभाजन है। आगे लेख में सातों विभाजन कब और क्यों किए गए इसका संक्षिप्त वर्णन है।

सन 1857 में भारत का क्षेत्रफल 83 लाख वर्ग कि.मी. था। वर्तमान भारत का क्षेत्रफल 33 लाख वर्ग कि.मी. है। पड़ोसी 9 देशों का क्षेत्रफल 50 लाख वर्ग कि.मी. बनता है।

भारतीयों द्वारा सन 1857 के अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े गए स्वतन्त्रता संग्राम (जिसे अंग्रेज ने गदर या बगावत कहा) से पूर्व एवं पश्चात के परिदृश्य पर नजर दौडायेंगे तो ध्यान में आएगा कि ई. सन 1800 अथवा उससे पूर्व के विश्व के देशों की सूची में वर्तमान भारत के चारों ओर जो आज देश माने जाते हैं उस समय देश नहीं थे। इनमें स्वतन्त्र राजसत्ताएं थीं,परन्तु सांस्कृतिक रूप में ये सभी भारतवर्ष के रूप में एक थे और एक-दूसरे के देश में आवागमन (व्यापार, तीर्थ दर्शन, रिश्ते, पर्यटन आदि) पूर्ण रूप से बे-रोकटोक था। इन राज्यों के विद्वान व लेखकों ने जो भी लिखा वह विदेशी यात्रियों ने लिखा ऐसा नहीं माना जाता है। इन सभी राज्यों की भाषाएं व बोलियों में अधिकांश शब्द संस्कृत के ही हैं। मान्यताएं व परम्पराएं भी समान हैं। खान-पान, भाषा-बोली, वेशभूषा,संगीत-नृत्य, पूजापाठ, पंथ सम्प्रदाय में विविधताएं होते हुए भी एकता के दर्शन होते थे और होते हैं। जैसे-जैसे इनमें से कुछ राज्यों में भारत इतर यानि विदेशी पंथ (मजहब-रिलीजन) आये तब अनेक संकट व सम्भ्रम निर्माण करने के प्रयास हुए।

सन 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम से पूर्व-मार्क्स द्वारा अर्थ प्रधान परन्तु आक्रामक व हिंसक विचार के रूप में मार्क्सवाद जिसे लेनिनवाद, माओवाद, साम्यवाद, कम्यूनिज्म शब्दों से भी पहचाना जाता है, यह अपने पांव अनेक देशों में पसार चुका था। वर्तमान रूस व चीन जो अपने चारों ओर के अनेक छोटे-बडे राज्यों को अपने में समाहित कर चुके थे या कर रहे थे, वे कम्यूनिज्म के सबसे बडे व शक्तिशाली देश पहचाने जाते हैं। ये दोनों रूस और चीन विस्तारवादी, साम्राज्यवादी, मानसिकता वाले ही देश हैं। अंग्रेज का भी उस समय लगभग आधी दुनिया पर राज्य माना जाता था और उसकी साम्राज्यवादी,विस्तारवादी, हिंसक व कुटिलता स्पष्ट रूप से सामने थी।

अफगानिस्तान :- सन 1834 में प्रकिया प्रारम्भ हुई और 26 मई, 1876 को रूसी व ब्रिटिश शासकों (भारत) के बीच गंडामक संधि के रूप में निर्णय हुआ और अफगानिस्तान नाम से एक बफर स्टेट अर्थात राजनैतिक देश को दोनों ताकतों के बीच स्थापित किया गया। इससे अफगानिस्तान अर्थात पठान भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम से अलग हो गए तथा दोनों ताकतों ने एक-दूसरे से अपनी रक्षा का मार्ग भी खोज लिया। परंतु इन दोनों पूंजीवादी व मार्क्सवादी ताकतों में अंदरूनी संघर्ष सदैव बना रहा कि अफगानिस्तान पर नियन्त्रण किसका हो ? अफगानिस्तान (उपगणस्तान) शैव व प्रकृति पूजक मत से बौद्ध मतावलम्बी और फिर विदेशी पंथ इस्लाम मतावलम्बी हो चुका था। बादशाह शाहजहाँ, शेरशाह सूरी व महाराजा रणजीत सिंह के शासनकाल में उनके राज्य में कंधार (गंधार) आदि का स्पष्ट वर्णन मिलता है।

नेपाल :-मध्य हिमालय के 46 से अधिक छोटे-बडे राज्यों को संगठित कर पृथ्वी नारायण शाह नेपाल नाम से एक राज्य का सुगठन कर चुके थे। स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों ने इस क्षेत्र में अंग्रेजों के विरुद्ध लडते समय-समय पर शरण ली थी। अंग्रेज ने विचारपूर्वक 1904 में वर्तमान के बिहार स्थित सुगौली नामक स्थान पर उस समय के पहाड़ी राजाओं के नरेश से संधी कर नेपाल को एक स्वतन्त्र अस्तित्व प्रदान कर अपना रेजीडेंट बैठा दिया। इस प्रकार से नेपाल स्वतन्त्र राज्य होने पर भी अंग्रेज के अप्रत्यक्ष अधीन ही था। रेजीडेंट के बिना महाराजा को कुछ भी खरीदने तक की अनुमति नहीं थी। इस कारण राजा-महाराजाओं में जहां आन्तरिक तनाव था, वहीं अंग्रेजी नियन्त्रण से कुछ में घोर बेचैनी भी थी। महाराजा त्रिभुवन सिंह ने 1953 में भारतीय सरकार को निवेदन किया था कि आप नेपाल को अन्य राज्यों की तरह भारत में मिलाएं। परन्तु सन 1955 में रूस द्वारा दो बार वीटो का उपयोग कर यह कहने के बावजूद कि नेपाल तो भारत का ही अंग है, भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने पुरजोर वकालत कर नेपाल को स्वतन्त्र देश के रूप में यू.एन.ओ. में मान्यता दिलवाई। आज भी नेपाल व भारतीय एक-दूसरे के देश में विदेशी नहीं हैं और यह भी सत्य है कि नेपाल को वर्तमान भारत के साथ ही सन 1947 में ही स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। नेपाल 1947 में ही अंग्रेजी रेजीडेंसी से मुक्त हुआ।

भूटान :-सन 1906 में सिक्किम व भूटान जो कि वैदिक-बौद्ध मान्यताओं के मिले-जुले समाज के छोटे भू-भाग थे इन्हें स्वतन्त्रता संग्राम से लगकर अपने प्रत्यक्ष नियन्त्रण से रेजीडेंट के माध्यम से रखकर चीन के विस्तारवाद पर अंग्रेज ने नजर रखना प्रारम्भ किया। ये क्षेत्र(राज्य) भी स्वतन्त्रता सेनानियों एवं समय-समय पर हिन्दुस्तान के उत्तर दक्षिण व पश्चिम के भारतीय सिपाहियों व समाज के नाना प्रकार के विदेशी हमलावरों से युद्धों में पराजित होने पर शरणस्थली के रूप में काम आते थे। दूसरा ज्ञान (सत्य, अहिंसा, करुणा) के उपासक वे क्षेत्र खनिज व वनस्पति की दृष्टि से महत्वपूर्ण थे। तीसरा यहां के जातीय जीवन को धीरे-धीरे मुख्य भारतीय (हिन्दू) धारा से अलग कर मतान्तरित किया जा सकेगा। हम जानते हैं कि सन 1836 में उत्तर भारत में चर्च ने अत्यधिक विस्तार कर नये आयामों की रचना कर डाली थी। सुदूर हिमालयवासियों में ईसाईयत जोर पकड़ रही थी।

तिब्बत :-सन 1914 में तिब्बत को केवल एक पार्टी मानते हुए चीनी साम्राज्यवादी सरकार व भारत के काफी बड़े भू-भाग पर कब्जा जमाए अंग्रेज शासकों के बीच एक समझौता हुआ। भारत और चीन के बीच तिब्बत को एक बफर स्टेट के रूप में मान्यता

देते हुए हिमालय को विभाजित करने के लिए मैकमोहन रेखा निर्माण करने का निर्णय हुआ। हिमालय सदैव से ज्ञान-विज्ञान के शोध व चिन्तन का केंद्र रहा है। हिमालय को बांटना और तिब्बत व भारतीय को अलग करना यह षड्यंत्र रचा गया। चीनी और अंग्रेज शासकों ने एक-दूसरों के विस्तारवादी,साम्राज्यवादी मनसूबों को लगाम लगाने के लिए कूटनीतिक खेल खेला। अंग्रेज ईसाईयत हिमालय में कैसे अपने पांव जमायेगी, यह सोच रहा था परन्तु समय ने कुछ ऐसी करवट ली कि प्रथम व द्वितीय महायुद्ध के पश्चात अंग्रेज को एशिया और विशेष रूप से भारत छोड़कर जाना पड़ा। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने समय की नाजकता को पहचानने में भूल कर दी और इसी कारण तिब्बत को सन 1949 से 1959 के बीच चीन हड़पने में सफल हो गया। पंचशील समझौते की समाप्ति के साथ ही अक्टूबर सन 1962 में चीन ने भारत पर हमला कर हजारों वर्ग कि.मी. अक्साई चीन (लद्दाख यानि जम्मू-कश्मीर) व अरुणाचल आदि को कब्जे में कर लिया। तिब्बत को चीन का भू-भाग मानने का निर्णय पं. नेहरू (तत्कालीन प्रधानमंत्री) की भारी ऐतिहासिक भूल हुई। आज भी तिब्बत को चीन का भू-भाग मानना और चीन पर तिब्बत की निर्वासित सरकार से बात कर मामले को सुलझाने हेतु दबाव न डालना बड़ी कमजोरी व भूल है। नवम्बर 1962 में भारत के दोनों सदनों के संसद सदस्यों ने एकजुट होकर चीन से एक-एक इंच जमीन खाली करवाने का संकल्प लिया। आश्चर्य है भारतीय नेतृत्व (सभी दल) उस संकल्प को शायद भूल ही बैठा है। हिमालय परिवार नाम के आन्दोलन ने उस दिवस को मनाना प्रारम्भ किया है ताकि जनता नेताओं द्वारा लिए गए संकल्प को याद करवाएं।

श्रीलंका व म्यांमार :-अंग्रेज प्रथम महायुद्ध (1914 से 1919) जीतने में सफल तो हुए परन्तु भारतीय सैनिक शक्ति के आधार पर। धीरे-धीरे स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु क्रान्तिकारियों के रूप में भयानक ज्वाला अंग्रेज को भस्म करने लगी थी। सत्याग्रह, स्वदेशी के मार्ग से आम जनता अंग्रेज के कुशासन के विरुद्ध खडी हो रही थी। द्वितीय महायुद्ध के बादल भी मण्डराने लगे थे। सन 1935 व 1937 में ईसाई ताकतों को लगा कि उन्हें कभी भी भारत व एशिया से बोरिया-बिस्तर बांधना पड़ सकता है। उनकी अपनी स्थलीय शक्ति मजबूत नहीं है और न ही वे दूर से नभ व थल से वर्चस्व को बना सकते हैं। इसलिए जल मार्ग पर उनका कब्जा होना चाहिए तथा जल के किनारों पर भी उनके हितैषी राज्य होने चाहिए। समुद्र में अपना नौसैनिक बेड़ा बैठाने, उसके समर्थक राज्य स्थापित करने तथा स्वतन्त्रता संग्राम से उन भू-भागों व समाजों को अलग करने हेतु सन 1965 में श्रीलंका व सन 1937 में म्यांमार को अलग राजनीतिक देश की मान्यता दी। ये दोनों देश इन्हीं वर्षों को अपना स्वतन्त्रता दिवस मानते हैं। म्यांमार व श्रीलंका का अलग अस्तित्व प्रदान करते ही मतान्तरण का पूरा ताना-बाना जो पहले तैयार था उसे अधिक विस्तार व सुदृढ़ता भी इन देशों में प्रदान की गई। ये दोनों देश वैदिक, बौद्ध धार्मिक परम्पराओं को मानने वाले हैं। म्यांमार के अनेक स्थान विशेष रूप से रंगून का अंग्रेज द्वारा देशभक्त भारतीयों को कालेपानी की सजा देने के लिए जेल के रूप में भी उपयोग होता रहा है।

पाकिस्तान, बांग्लादेश व मालद्वीप :-1905 का लॉर्ड कर्जन का बंग-भंग का खेल 1911 में बुरी तरह से विफल हो गया। परन्तु इस हिन्दु मुस्लिम एकता को तोड़ने हेतु अंग्रेज ने आगा खां के नेतृत्व में सन 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना कर मुस्लिम कौम का बीज बोया। पूर्वोत्तर भारत के अधिकांश जनजातीय जीवन को ईसाई के रूप में मतान्तरित किया जा रहा था। ईसाई बने भारतीयों को स्वतन्त्रता संग्राम से पूर्णतः अलग रखा गया। पूरे भारत में एक भी ईसाई सम्मेलन में स्वतन्त्रता के पक्ष में प्रस्ताव पारित नहीं हुआ। दूसरी ओर मुसलमान तुम एक अलग कौम हो, का बीज बोते हुए सन 1940 में मोहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में पाकिस्तान की मांग खड़ी कर देश को नफरत की आग में झोंक दिया। अंग्रेजीयत के दो एजेण्ट क्रमशः पं. नेहरू व मो. अली जिन्ना दोनों ही घोर महत्वाकांक्षी व जिद्दी (कट्टर) स्वभाव के थे। अंग्रेजों ने इन दोनों का उपयोग गुलाम भारत के विभाजन हेतु किया। द्वितीय महायुद्ध में अंग्रेज बुरी तरह से आर्थिक, राजनीतिक दृष्टि से इंग्लैण्ड में तथा अन्य देशों में टूट चुके थे। उन्हें लगता था कि अब वापस जाना ही पड़ेगा और अंग्रेजी साम्राज्य में कभी न अस्त होने वाला सूर्य अब अस्त भी हुआ करेगा। सम्पूर्ण भारत देशभक्ति के स्वरों के साथ सड़क पर आ चुका था। संघ, सुभाष, सेना व समाज सब अपने-अपने ढंग से स्वतन्त्रता की अलख जगा रहे थे। सन 1948 तक प्रतीक्षा न करते हुए 3 जून, 1947 को अंग्रेज अधीन भारत के विभाजन व स्वतन्त्रता की घोषणा औपचारिक रूप से कर दी गयी। यहां यह बात ध्यान में रखने वाली है कि उस समय भी भारत की 562 ऐसी छोटी-बड़ी रियासतें (राज्य) थीं, जो अंग्रेज के अधीन नहीं थीं। इनमें से सात ने आज के पाकिस्तान में तथा 555 ने जम्मू-कश्मीर सहित आज के भारत में विलय किया। भयानक रक्तपात व जनसंख्या की अदला-बदली के बीच 14, 15 अगस्त, 1947 की मध्यरात्रि में पश्चिम एवं पूर्व पाकिस्तान बनाकर अंग्रेज ने भारत का 7वां विभाजन कर डाला। आज ये दो भाग पाकिस्तान व बांग्लादेश के नाम से जाने जाते हैं। भारत के दक्षिण में सुदूर समुद्र में मालद्वीप (छोटे-छोटे टापुओं का समूह) सन 1947 में स्वतन्त्र देश बन गया, जिसकी चर्चा व जानकारी होना अत्यन्त महत्वपूर्ण व उपयोगी है। यह बिना किसी आन्दोलन व मांग के हुआ है।

भारत का वर्तमान परिदृश्य :-सन 1947 के पश्चात फेंच के कब्जे से पाण्डिचेरी,पुर्तगीज के कब्जे से गोवा देव- दमन तथा अमेरिका के कब्जें में जाते हुए सिक्किम को मुक्त करवाया है। आज पाकिस्तान में पख्तून, बलूच, सिंधी, बाल्टीस्थानी (गिलगित मिलाकर), कश्मीरी मुजफ्फरावादी व मुहाजिर नाम से इस्लामाबाद (लाहौर) से आजादी के आन्दोलन चल रहे हैं। पाकिस्तान की 60 प्रतिशत से अधिक जमीन तथा 30 प्रतिशत से अधिक जनता पाकिस्तान से ही आजादी चाहती है। बांग्लादेश में बढ़ती जनसंख्या का विस्फोट,

चटग्राम आजादी आन्दोलन उसे जर्जर कर रहा है। शिया–सुन्नी फसाद, अहमदिया व वोहरा (खोजा–मल्कि) पर होते जुल्म मजहबी टकराव को बोल रहे हैं। हिन्दुओं की सुरक्षा तो खतरे में ही है। विश्वभर का एक भी मुस्लिम देश इन दोनों देशों के मुसलमानों से थोडी भी सहानुभूति नहीं रखता। अगर सहानुभूति होती तो क्या इन देशों के 3 करोड़ से अधिक मुस्लिम (विशेष रूप से बांग्लादेशीय) दर–दर भटकते। ये मुस्लिम देश अपने किसी भी सम्मेलन में इनकी मदद हेतु आपस में कुछ–कुछ लाख बांटकर सम्मानपूर्वक बसा सकने का निर्णय ले सकते थे। परन्तु कोई भी मुस्लिम देश आजतक बांग्लादेशी मुसलमान की मदद में आगे नहीं आया। इन घुसपैठियों के कारण भारतीय मुसलमान अधिकाधिक गरीब व पिछड़ते जा रहा है क्योंकि इनके विकास की योजनाओं पर खर्च होने वाले धन व नौकरियों पर ही तो घुसपैठियों का कब्जा होता जा रहा है। मानवतावादी वेष को धारण कराने वाले देशों में से भी कोई आगे नहीं आया कि इन घुसपैठियों यानि दरबदर होते नागरिकों को अपने यहां बसाता या अन्य किसी प्रकार की सहायता देता। इन दर–बदर होते नागरिकों के आई.एस.आई. के एजेण्ट बनकर काम करने के कारण ही भारत के करोडों मुस्लिमों को भी सन्देह के घेरे में खड़ा कर दिया है। आतंकवाद व माओवाद लगभग 200 समूहों के रूप में भारत व भारतीयों को डस रहे हैं। लाखों उजड़ चुके हैं, हजारों विकलांग हैं और हजारों ही मारे जा चुके हैं। विदेशी ताकतें हथियार, प्रशिक्षण व जेहादी, मानसिकता देकर उन प्रदेश के लोगों के द्वारा वहां के ही लोगों को मरवा कर उन्हीं प्रदेशों को बर्बाद करवा रही हैं। इस विदेशी षड्यन्त्र को भी समझना आवश्यक है।

सांस्कृतिक व आर्थिक समूह की रचना आवश्य :–आवश्यकता है वर्तमान भारत व पड़ोसी भारतखण्डी देशों को एकजुट होकर शक्तिशाली बन खुशहाली अर्थात विकास के मार्ग में चलने की। इसलिए अंग्रेज अर्थात ईसाईयत द्वारा रचे गये षड्यन्त्र को ये सभी देश (राज्य) समझें और साझा व्यापार व एक करन्सी निर्माण कर नए होते इस क्षेत्र के युग का सूत्रपात करें। इन देशों 10 का समूह बनाने से प्रत्येक देश का भय का वातावरण समाप्त हो जायेगा तथा प्रत्येक देश का प्रतिवर्ष के सैंकड़ों–हजारों–करोड़ों रुपये रक्षा व्यय के रूप में बचेंगे जो कि विकास पर खर्च किए जा सकेंगे। इससे सभी सुरक्षित रहेंगे व विकसित होंगे।

(लेखक सप्तिशी वसु)

दिव्य अर्जुन "

भीष्म हों या द्रोण अब टिकते नहीं हैं
सच कहें तो युद्ध अब करते नहीं हैं
मेरे अप्रतिहत बाण को वे काटते हैं
जब – कभी गाण्डीव को पहचानते हैं।
मेरे अनोखे बाण को जो झेल जाता है
इस भयंकर युद्ध में वह खेल पाता है
स्तब्ध कर देता धनुष–टंकार से
संतप्त मैं करता रहा शर –चाप से।
भाँजता था कर्ण कि अर्जुन कहाँ है ?
युद्ध – रण में या कहीं तम में छिपा है ?
बाजुओं के बल उसे मैं तोल दूंगा
पांण्डवों में अन्य को मैं छोड़ दूंगा
पर नहीं मैं छोड़ सकता उस धनुर्धर को
देख लूंगा सामने आये धुरंधर जो।
युद्ध के पहले बहुत ललकारते हैं
सामने आते वही अब भागते हैं
चाहते हैं शीघ्रता से सांध्य हो
शाम होते निज शिविर में त्राण पाते हैं।
साथ में जब कृष्ण जैसे सारथी हों
हम कभी झुकते नहीं कोई रथी हओं
ध्वज – केतु में वानर –निशाचर नाद है
अंतः सलिल से उठ रहा उन्माद है।
जिस ओर मेरा रथ हुआ समझो प्रलय है
क्षिति – व्योम होता एक –सा इतना सघन है
धूल – पावक – धूम का संचार है
अदृश्य में भी दृष्टि का संसार है।
शिव की अनूपा शक्ति को मैं झेलता हूँ
वन में किरातों से नहीं मुख मोड़ता हूँ
शूकर रहे या मत्स्य की भी आँख हओ
मैं निरन्तर लक्ष्य – वेधन में कुशल हूँ।
शम्भु का दिव्यास्त्र मेरे पास है
वह अतुल महनीय है निष्पाप है
दुष्ट – पामर शत्रु जन को जानता हूँ
कौन है दुर्धर्ष यह पहचानता हूँ।
कौन कितना जल रहा कैसा अनल है ?
जो कि जितना क्रूर है उतना सबल है
तप्त शोणित से भरा संग्राम है
पल रहा मेरे हृदय अंगार है।
अगणित भयंकर वीर भी अब काँपते हैं
देखें भला कैसे इसे संभालते हैं
रोकें सहज इस तेज के संधान क्टो
जब चल रहा मेरे करों से बाण हओ।
सव्यशाची वीर हूँ, मैं धीर हूँ
दिव्यता के तेज से परिपूर्ण हूँ
इन्द्र – सा रणक्षेत्र में संघर्ष करता
मैं उन्हीं का पुत्र हूँ,कौन्तेय हूँ।

जो खुद में खोई रहती है

जो खुद में खोई रहती है
वह पीर पराई क्या जाने
जो मुक्त शेरनी जंगल क्टी
वह घर का बंधन क्या जाने ?
जिसको यूँ ही सबकुछ मिलता
वह श्रम की माहिमा क्या जाने
जिसको मिलता आरक्षण हओ
वह पढ़ना – लिखना क्या जाने ?
जो धनिक वर्ग में जन्म लिया
वह दीन – अवस्था क्या जाने ?
जो सभी तरह परिपूर्ण हुआ
वह रिक्त – खोखला क्या जाने ?
जो अपने को ही श्रेष्ठ कहे
वह श्रेष्ठ – श्रेष्ठतम क्या जाने ?
जो नकल क्रिया में माहिर हओ
वह नव –अन्वेषण क्या जाने ?
जो दूसरे पर ही निर्भर हओ
वह खुद की कीमत क्या जाने ?
जो हद तक कभी नहीं सोचा
वह आत्मसमर्पण क्या जाने ?

रचनाकार ----- विधुशेखर मिश्र
सहायक शिक्षक
10+2 हसपुरा उच्च विद्यालय हसपुरा, औरंगाबाद (बिहार)

नई पीढ़ी के अभियंताओं के बल पर काम और तेजी से एवं गुणवत्तापूर्ण हो़गा:- मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने अधिवेषन भवन में नवनियुक्त सहायक अभियंताओं के उन्मुखीकरण कार्यशाला कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आज के इस आयोजन के लिए पथ निर्माण विभाग एवं भवन निर्माण विभाग को बधाई देता हूँ। जिन सहायक अभियंताओं की नियुक्ति हुई है, उनकी काबिलियत एवं ज्ञान पर मुझे पूरा भरोसा है। पथ निर्माण विभाग द्वारा उन्हें प्रशिक्षण के माध्यम से हर चीज की जानकारी दी गयी है। भवन निर्माण विभाग अभी इन अभियंताओं को प्रशिक्षण देने वाला है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मैंने भी इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है लेकिन इंजीनियरिंग के क्षेत्र में काम नहीं किया और सार्वजनिक जीवन में आ गया। अपने इंजीनियर मित्रों के द्वारा इंजीनियरिंग क्षेत्र में होने वाले कार्यों के बारे में जानकारी मिलती रहती है। इंजीनियरिंग का विद्यार्थी होने के कारण मुझे आप सबसे विशेष लगाव है और आपसे उम्मीदें भी हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2005 में सरकार में आने के बाद हमने सबसे पहले कानून व्यवस्था बहाल की। राज्य में रूल ऑफ लॉ लागू किया। राज्य में खराब सड़कों की हालत ठीक करने को प्राथमिकता सूची में रखते हुए हमने नई सड़कों के निर्माण के साथ-साथ अपने खर्च से नेशनल हाईवे को दुरुस्त किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्टेट हाईवे के साथ-साथ अब ग्रामीण सड़कों के लिए मेंटेनेंस पॉलिसी बनायी गयी है ताकि सभी का रख-रखाव बेहतर ढंग से हो सके। हमलोगों ने राज्य के सुदूरवर्ती इलाके से छह घंटे में पटना पहुंचने के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है और अब पाँच घंटे में राज्य के किसी कोने से पटना पहुंचने के लक्ष्य पर काम किया जा रहा है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये और पुल/पुलियों का निर्माण कराया जा रहा है, साथ ही सड़कों का चैड़ीकरण भी किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी गावों, टोलों को पक्की सड़कों से जोड़ा जा रहा है। गावों एवं टोलों में पक्की गली-नाली का निर्माण कराया जा रहा है ताकि लोग अपने घर से सड़क तक सहूलियत से पहुँच सकें। राज्य सरकार सड़कों के निर्माण पर कितना खर्च कर रही है, उसके संबंध में आपलोगों को इस कार्यक्रम में विस्तार से बताया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जब मैं केंद्र में मंत्री था, उस समय भी अपने क्षेत्रों में जनता से मिलने के लिए काफी पैदल चलना पड़ता था। अब स्थिति ऐसी है कि किसी को मजबूरी में पैदल चलना नहीं पड़ेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में विकास के अनेक काम किए गये हैं। जल संसाधन विभाग, लोक स्वास्थ्य एवं अभियंत्रण विभाग एवं भवन निर्माण विभाग में एक से बढ़कर एक काम किए गये हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बिहार संग्रहालय का निर्माण कराया गया। सम्राट अशोक कन्वेंशन केंद्र अपने आप में विशिष्ट है। उसी परिसर में ज्ञान भवन, खूबसूरत सभ्यता द्वार और स्टील स्ट्रक्चर निर्मित पाँच हजार की क्षमता वाला बापू सभागार है। इसमें फ्रांस के एफिल टावर से दुगुना स्टील का प्रयोग हुआ है, यह आइकोनिक बिल्डिंग है। कुछ ही दिन में पुलिस भवन का उद्घाटन होने वाला है जो विशिष्ट तरीके से बना है और आठ रिक्टर पैमाने वाले भूकम्प को सहने की क्षमता रखता है। राजगीर में बना कन्वेंशन सेंटर अपने आप में विशिष्ट है और बोधगया में इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर भी बनने वाला है। नेहरु पथ पर तीन किलोमीटर एलिवेटेड पुल बनाया गया। कंकड़बाग में एलिवेटेड पुल बना। छपरा में एलिवेटेड रोड का निर्माण कराया जा रहा है। बिहटा एयरपोर्ट तक निर्बाध पहुँच के लिए राज्य सरकार अपने पैसे से मेजर डिस्ट्रिक्ट रोड पर एलिवेटेड रोड बनाएगी। पुलिस भवन निर्माण निगम के द्वारा जो नये थाने बन रहे हैं, वह भी अपने आप में विशिष्ट है। गाँधी मैदान थाने को आदर्श थाने का रूप दिया गया है, जिसमें पहली बार लिफ्ट की सुविधा उपलब्ध है। पटना से गया के लिए फोर लेन सड़क का निर्माण कराया जा रहा है। राज्य में डिफरेंट स्ट्रक्चर के भवन, ब्रिज का निर्माण कराया जा रहा है। अभी और काम होने हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ऊर्जा विभाग में नये इंजीनियरों की बहाली हुई है जो काफी ऊजार्वान हैं और अच्छा काम कर रहे हैं। इस साल के अंत तक हर घर तक बिजली पहुँचाने के लक्ष्य को हम प्राप्त कर लेंगे। 2

अक्टूबर 2018 से गाँधी जयंती के 150वें वर्ष का शुभारंभ हुआ है जो 2 अक्टूबर 2020 तक चलेगा, जिसमें अनेक काम किये जाने हैं। सभी सरकारी भवनों में गाँधी जी के कथन ह्यपृथ्वी लोगों की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम है लालच को नहीह्ण एवं गाँधी जी द्वारा बताये गये सात सामाजिक पापों जिनमें– सिद्धांत के बिना राजनीति, काम के बिना धन अर्जित करना, विवेक के बिना सुख, चरित्र के बिना ज्ञान, नैतिकता के बिना व्यापार, मानवता के बिना विज्ञान, त्याग के बिना पूजा को स्थायी रूप से अंकित किया जाएगा, इसे पढ़कर लोग प्रेरित होंगे। अगर 10 प्रतिशत नई पीढ़ी के लोग इसे समझकर आत्मसात कर लेंगे तो समाज बदल जायेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि अटल जी के समय में हमलोगों ने अपने प्रयास से बिहार कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग को एन0आई0टी0 बनवाया एवं राज्य सरकार ने अपनी जमीन देकर एवं अपने पैसे से बी0आई0टी0 मेसरा की शाखा खुलवाई। सात निश्चय के अंतर्गत राज्य के प्रत्येक जिले में इंजीनियरिंग कॉलेज खोले जा रहे हैं ताकि बिहार के युवाओं को पढ़ने के लिए बाहर न जाना पड़े। पंचायती राज विभाग हर घर नल का जल वार्डों के माध्यम से उपलब्ध करा रहा है एवं क्वालिटी इफेक्टेड एरिया में लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग नल का जल उपलब्ध कराएगा। योजना एवं विकास विभाग और नगर विकास विभाग में भी इंजीनियरिंग के काम हो रहे हैं यानि इन सभी विभागों में इंजीनियरों की आवश्यकता है।

मुख्यमंत्री ने नवनियुक्त सहायक अभियंताओं की ओर मुखातिब होते हुए कहा कि आपलोग नई पीढ़ी के हैं, अपने काम के प्रति प्रतिबद्धता बनाये रखियेगा। इंजीनियरिंग का काम पूरी जिम्मेवारी के साथ करियेगा तो आपका नाम अपने क्षेत्र में याद किया जाएगा। सरकार के बजट से गुणवत्तापूर्ण निर्माण कार्य किया जा रहा है। काम की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने की आपसे उम्मीदें हैं। पथ, भवन एवं अन्य विभागों में नई पीढ़ी के अभियंताओं के बल पर काम और तेजी से एवं गुणवत्तापूर्ण होगा। आपके उज्ज्वल भविष्य की मैं कामना करता हूँ।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री का स्वागत प्रधान सचिव पथ निर्माण श्री अमृत लाल मीणा ने पौधा एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर किया। इस अवसर पर नवनियुक्त सहायक अभियंताओं के प्रशिक्षण कार्यक्रम पर आधारित वृतचित्र प्रदर्षित किया गया। पथ निर्माण विभाग के प्रशिक्षण, परीक्षण एवं शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तक का भी विमोचन मुख्यमंत्री ने किया।

कार्यक्रम को उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, पथ निर्माण मंत्री श्री नंदकिशोर यादव, भवन निर्माण मंत्री श्री महेश्वर हजारी, प्रधान सचिव पथ निर्माण श्री अमृत लाल मीणा, प्रधान सचिव भवन निर्माण श्री चंचल कुमार ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री के सचिव श्री मनीष कुमार वर्मा, बिहार राज्य पुल निर्माण निगम के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र श्रीवास्तव, सचिव परिवहन श्री संजय अग्रवाल, प्रबंध निदेशक भवन निर्माण विभाग श्री अमित कुमार, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी श्री गोपाल सिंह, जिलाधिकारी श्री कुमार रवि सहित संबंधित विभागों के अन्य वरीय अधिकारी एवं नवनियुक्त अभियंतागण उपस्थित थे।

बिहार प्रदेश कार्यकारणी का गठन

पटना ३०.०९ २०१८ को भारतीय जन क्रांति दल की बैठक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अजित कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में आयोजित की गई` बैठक में सर्व सम्मति से दिलीप कुमार को प्रदेश अध्यक्ष , राजीव रंजन को प्रदेश सचिव एवं संजीव मिश्र को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया` अध्यक्ष बनने के बाद प्रदेश अध्यक्ष श्री दिलीप कुमार ने कहाकि एक स्वक्ष राजनीत करते हुए बिहार में व्यवस्था परिवर्तन करूँगो हमारी पार्टी नेताओ की सुबिधाएँ समाप्त करने और सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए कृतसंकल्प है

बैठक में प्रदेश अध्यक्ष दिलीप कुमार , राजीव रंजन , संजीव मिश्र , अजित सिन्हा, लक्ष्मण पाण्डेय, विजय शंकर मिश्र, गया प्रसाद, सन्गठन मंत्री मगध प्रमंडल, रमेश कुमार, अध्यक्ष , आशुतोष कुमार, सुधीर प्रसाद सिंह, रामपुकार यादव, आशुतोष झा, दिलीप कुमार, सागर झा, अमरेन्द्र मिश्र, अनिल कुमार, अनुराग तिवारी, अमरेन्द्र, भोला झा, आतिश मिश्र, राजेश पाण्डेय, आशुतोष झा, राम नारायण सिंह, शशि रंजन सिंह, अभिषेक कुमार झा, पवन सिंह, अविनाश सिंह, दीपक सिंह, संजीव सिंह, संजय श्रीवास्तव, मनीष सिंह आदि उपस्थित थें

भारतीय जन क्रान्ति दल का भारत के राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन |

भारतीय जन क्रान्ति दल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अजीत कुमार सिन्हा के नेतृत्व में पार्टी का एक शिष्टमंडल पटना के जिला धिकारी से मिल उन्हें अपनी दो मांगो के लिए ज्ञापन दिया पहला केंद्र सरकार द्वारा रउ /रळ अध्यादेश सर्वोच्य न्यायालय के आदेश को परिवर्तित किए जाने के विरोध में तथा दूसरा हिंदू देवी-देवताओं की तस्वीरों को व्यावसायिक वस्तुओ से हटाने के सम्बन्ध में थो पार्टी के शिष्टमंडल का कहना था कि वर्तमान की केंद्र सरकार के द्वारा पिछले दिनों संसद के पटल पर एससी / एसटी एक्ट में पुनः संसोधन कर सर्वोच्य न्यायालय के फैसले को जो पलटने का कार्य किया है उसके विरोध में देश के राष्ट्रपति महोदय को एक ज्ञापन सौपा गया , ज्ञापन में कहा गया है किः-

जिसप्रकार सर्वोच्य न्यायालय ने एससी-एसटी एक्ट में बदलाव कर अपना अहम फैसला सुनाया था। जिस फैसले में कहा गया था कि :-- आरोपों पर तुरंत गिरफ्तारी नहीं की जाए, पहले आरोपों की जांच जरूरी है, जांच करने के बाद ही केस दर्ज की जाए ऊढ स्तर का अधिकारी ही आरोपों की जांच करेगो गिरफ्तारी से पहले जमानत संभव था या अग्रिम जमानत भी मिल जा सकेगी किसी सरकारी अधुकारी की गिरफ्तारी सीनियर अफसर की इजाजत के बाद होगी सर्वोच्य न्यायालय के विद्वान जजों ने तथ्यों को देखते हुए निर्णय लिया थो इस कानून का सर्वाधिक दुरूपयोग किया गया लेकिन केंद्र की सरकार केबल अपने वोट बैंक की खातिर सर्वोच्य न्यायालय के फैसले को बदल दियो जिस प्रकार से सवर्ण व ओबीसी की भावनाओं को दरकिनार कर मात्र एक वर्ग को ही पक्षपात पूर्ण ढंग से में ध्यान रखा जा रहा है , अगर इसी प्रकार से सरकारों को कार्य करना है तो भारत के सभी न्यायालय को बंद कर देना ही उचित होगा। पूर्व में भी देखा गया है (चाहे शाहबानो का केस हो या एस सी एसटी का) जब भी बहुमत की सरकारें रही चाहे वो केंद्र में रहे या प्रदेश में राज्य की सरकार हाइकोर्ट एवं केंद्र की सरकार सरकार सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को ठेंगा दिखाकर संविधान को ही चुनौती दे देती हैं

इन सभी बातों को देखते हुए हमारी पार्टी का मानना है अगर सरकारों को इसी प्रकार से कार्य करना है तो, फिर न्यायालयों का औचित्य ही क्या है ? क्यों नहीं देश के सभी न्यायालयों को बंद कर दिया जाए ?

सत्ताधारी पार्टि वोट की खातिर समानता के अधिकारों का हनन करती रहती है जब संसद ही कानून को पलटता रहेगा तो देश की भोली भाली जनता क्यों न्याय की आस

में अपना समय और पैसा वर्वाद करती रहेगी ? अगर न्यालयो को बंद कर दिया जाए तो जनता का समय और पैसा दोनों की बचत होगी

क्या आप को नहीं लगता रउ/रळ अू३ और आरक्षण देश के लिए ऐसा कलंक है जिसमे देश के लोगो के विच वैमनष्यता का भाव फैलता है` नौकरियां भी उनलोगों को , सुविधाएं भी उन्ही को, सत्ता में प्राथमिकताएं भी उन्ही को और उसके पश्चात अगर वो चाहें तो हमें सिर्फ एक छोटी सी मिथ्या शिकायत पर रउ/रळ अू३ के तहत हमारे बगैर जमानत के अधिकार के जेल भिजवाकर हमारा आर्थिक और सामाजिक शोषण भी कर सकते हैं। हमारा दोष तो इतना ही है ना कि हम तथाकथित उच्च जाति में जन्म लिए हैं चाहे हम गरीब ही क्यों ना हो? अब आप बताएं कि इन कार्यो से प्यार बढ़ेगा या नफरत? हमें तो अब उनलोगों से नजदिकियां बनाने में भी डर लगने लगा है कि हमारे हिस्से का हड़पने के बाद भी कहीं वो हमें रउ/रळ अू३ में झुटे-मुटे मुकदमे ने न फंसा दें।

वही दूसरी मांग में उन्हों ने हिंदू देवी-देवताओं की तस्वीरों को व्यावसायिक वस्तुओ से हटाने के सम्बन्ध में कहा है कि भारत में प्रत्येक दिन किसी न किसी वस्तु के विज्ञापन में चाहे वो अगरबीती हो, खाने-पीने की चीजों, मसालों दीवाली में जलाए और फोडे जानेवाले पटाखों में हमारे आराध्य देवी झदेवताओं की तस्वीरें लगाई जा रही है जो हमारी धार्मिक भावना को आहत करती हैं महामहिम अगरबत्ती एवं पटाखों के रैपर पर हमारे देवी देवताओ के चित्र लगे रहते है जो बाद में फूटनेके साथ ही सड़को मे फैल जातें है और राहगीरो के पैरो मे कुचले जातें है । अतः देवी देवताओंकी तस्वीर वाले पटाखों और अगरबतियो के रैपर पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाने का निर्देश जरी करें ।

उक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर हमारी पार्टी ने महामहिम राष्ट्रपति महोदय से अनुरोध करती है इस पर उचित निर्णय ले और केंद्र सरकार को निर्देश दे सर्वोच्य न्यायालय के द्वारा लिए गए फैसले को बदलने का जो निर्णय उन्होंने लिया है उसे अविलम्व वापस ले पटना के जिलाधिकारी महोदय को ज्ञापन सौपते वक्त पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अजीत कुमार सिन्हा, भोला झा ह्यलाल बाबाह्व राष्ट्रीय महासचिव डॉ राकेश दत्त मिश्र, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष राजीव कुमार झा, प्रदेश अध्यक्ष दिलीप कुमार , प्रदेश सचिव राजीव रंजन, मुकेश पाठक, प्रशांत कुमार ,संजय पाठक, अजीत कुमार आदि उपस्थित थें

अगर आरक्षण का आधार आर्थिक नहीं हुआ तो मंत्रियों को घर से बाहर नहीं निकलने देंगे:- डॉ राकेश दत्त मिश्र

पटना दिनांक १४.०९.२०१८ को भारतीय जन क्रांति दल के तत्वाधान में बिहार के सवर्ण मंत्रियों का धेराव आरक्षण एवं एस सी एसटी एक्ट के विरोध में किया गया इस कड़ी में भारतीय जन क्रान्ति दल के राष्ट्रीय महासचिव डॉ राकेश दत्त मिश्र की अगुवाई में पार्टी के कार्यकर्ता एवं परशुराम सेना के कार्यकताओं ने विज्ञानं एवं प्रौद्योगिकी मंत्री जय कुमार सिंह के आवास के बाहर धरना दिया एवं जय परशुराम के उद्घोष के साथ ढोल, मजीरा एवं शंख ध्वनी के साथ एक देश दो विधान नहीं चलेगा का उद्घोष किया | डॉ मिश्र ने बताया कि अगर आरक्षण का आधार आर्थिक नहीं किया गया तो हमारी पार्टी बिहार के सभी मंत्री एवं विधायकों के घरो में ताले लगा कर उनका विरोध करेगी और मंत्रियों एवं विधायको को घर से बाहर नहीं निकलने देंगे |

डॉ मिश्र के साथ पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भोलाझा, प्रदेश अध्यक्ष संजय पाठक, आशुतोष झा, दिलीप कुमार, सागर झा, अमरेन्द्र मिश्र, अनिकेत कुमार,अनुराग तिवारी, अमरेन्द्र, भोला झा, आतिश मिश्र, राजेश पाण्डेय, आशुतोष झा, राम नारायण सिंह, शशि रंजन सिंह, अभिषेक कुमार झा, पवन सिंह, अविनाश सिंह, दीपक सिंह, संजीव सिंह, संजय श्रीवास्तव, मनीष सिंह ने धरना दिया|